श्री आदिचन्द्र प्रभु आचार्य श्री महावीर कीर्ति सरस्वती
प्रकाशन माला का प्रथम पुष्प

सत्यापिका जैन महिला रत्न भवरी देवी पाड्या सुजानगढ़



श्री नव देवता मडल विधान पूजन

[सकल सौभाग्य व्रत]

विधि

लेखक

ब्रह्मचारी सूरजमल जैन

भूतिसप

•

प्रकाशिका

श्रीमती सौ० दानशीला जैन महिला रत्न
भवरीदेवी ध प श्रीमान राय सा दानवीर सेठ
चादमलजी पाड्या सुजानगढ़ (राज)

प्रथमावृत्ति १००० } वीर संवत २४९५ / आश्विन शुक्ला १४ तारीख २४ १० ६८ { मूल्य

विषय-सूची



श्री १०८ आचार्य श्री वीरसागरजी महाराज

जन्म	मुनिदीक्षा	स्वर्गवास
वि स १९३२	वि स १९८०	वि स २०१४
आषाढ शुक्ला पूर्णिमा	आश्विन शुक्ला ११	आश्विन कृष्णा अमावस्या

दो शब्द

यह नव देवता पूजन विधान पहले कभी भी हिन्दी मे प्रकाशित नही हुआ था । किसी प्रतिष्ठा पाठ मे और दक्षिण प्रान्त से निकली हुई किसी पूजन पाठ सग्रह मे केवल नव देवता पूजन बिना जयमाला का अष्टक ही देखने को मिला था । हिन्दी मे तो कभी देखा भी नही था । विक्रम स २०२१ मे परम पूज्य आचार्य श्री १०८ श्री शिवसागर जी महाराज का ससघ वर्षा योग श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पपाराजी मे हुआ । उस समय सघस्थ मुनि श्री १०८ वृषभसागर जी महाराज ने बहुत सी माता बहिनो को सकल सौभाग्य नामक व्रत दिया सो व्रत मे नव-देवता पूजन करने का बताया है किन्तु नव देवता पूजन विधान सर्वत्र अन्वेषण करने पर भी कही भी इसकी उपलब्धि नही हुई ।

अत परम पूज्य आचार्य शिवसागर जी महाराज की आज्ञा से इस व्रत सम्बन्धी एक समुच्चय तथा नव देवता कि

नौ पूजन और तत सम्बन्धी प्रत्येक अर्घ मैंने बनाये है। मडल विधान का नक्शा भी दिया है। यद्यपि मे कविता करने के गरण वगैरह से अनभिज्ञ हूँ सिर्फ तुकवन्दी से ही प्राय काम लिया हूँ ऐसी अवस्था मे छन्दो का भंग होना साहजिक है अत पाठक गणो से सादर निवेदन है कि वे मेरी गलतियो को क्षमा करते हुए पाठ को शुद्ध करते हुए पढे।

मै उज्जैन निवासी प. छोटेलाल जी वरैया को भी धन्यवाद दिये विना नही रहूगा क्योकि उन्होने कई स्थलो को देखकर मुझ से दुबारा वनवाये है पूर्वा आचार्यों के कहे अनुसार इस विधान मे अर्हन्त सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, जिन धर्म, जिन वाणी, जिन चैत्य, जिन चैत्यालय, इस प्रकार से नव देवों की पूजन लिखी गई है।

इनमे प्रत्येक देवो देवों के भिन्न भिन्न गुणो की पूजन (अर्घ लिखे गये है) जैसे अर्हन्त के ४६, सिद्ध के ८, आचार्य के ३६ उपाध्याय के २५, सर्व साधु के २८, जिन धर्म के ५७, जिन बाणी के ५१, जिन चैत्य के ३, जिन चैत्यालय के ३, इस तरह इस विधान मे २५७ अर्घ होते है, इस विधान में प्रेस सम्बन्धी अशुद्धियाँ तथा मेरी असावधानी से कई बातों की गल्तिया रह गई है, अर्घ भी आगे पीछे होगये है, अतः पाठकगण जरूर ही सुधार कर पढ़े प्रेस सम्बन्धी अशुद्धियों

के लिए शुद्धि पत्र दिया हुआ है, यदि द्वितीया वृत्ति छपेगी तो जरूर ही सब गल्तियो को निकालने की कोशिश करू गा।

नोट-इस नवदेवता मण्डल विधान को विनाव्रत के भी मण्डल माण्डकर पूजन कर सकते हैं

ब्र० सूरजमल जैन
मुनिसघ

———

श्री दि० जैन शांतिवीर संस्थान

(श्री शान्तिवीर नगर)

इस सस्थान के अन्तर्गत नवीन दोनो मन्दिर जिसमें २६ फुट उन्नत विशाल काय श्री १००८ श्री शातिनाथ भगवान की प्रतिमा तथा निज २ वर्ण सहित २४ तीर्थंकरों की सुन्दर मनोज्ञ मूर्ति एव दोनो तरफ तल घर मे विराज मान मन मोहक सुन्दर विशाल काय प्रतिमा और सहस्र कूट चैत्यालय विराजमान है। इस संस्थान के अन्तर्गत गुरुकुल जिसमें छात्र गण धार्मिक सस्कृत एवं लौकिक शिक्षा प्राप्त करते है। प्रेस भी है जिसमे वडे छोटे सभी तरह के धार्मिक ग्रन्थों की छपाई शुद्धता से बिना सरेस के होती है।

अतः धर्म बन्धुओ से निवेदन है कि इस सस्था से लाभ लेवे।



श्रीमती सौ० दानशीला जन महिला रत्न
भवरीदवी धमपत्नी श्रीमान् राय सा० दानवीर
सेठ चादमलजी पाडया सुजानगढ

श्रीमती सौ० दानशीला जैन महिला रत्न पतिव्रत परायण भवरीदेवीजी पाड्या सुजानगढ निवासी का

संक्षिप्त परिचय

श्रीमती सौ दानशीला जैन महिलारत्न सेठानी भवरी देवी जी पाड्या सुजानगढ वालो से कोई अपरिचित है ऐसी बात नही है, आप भारत वर्षीय अखिल दि० जैन शाँतिवीर सस्थान् श्री शातिवीर नगर, तथा अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष और कई सस्थाओ के अध्यक्ष और गोपाल सिद्धान्त विद्यालय मोरेना के अधिष्ठता श्रीमान् राय साहब जैनरत्न, सघ भक्त शिरोमणि धम दिवाकर, सेठ चादमल जी पाडया सुजानगढ वालो कि धर्म पत्नी है। आपका जन्म मारवाड प्रान्त के अतगत मेनसर नगर मे श्रीमान सेठ मन्नालालजी गगवाल की धर्म पत्नि श्रीमती सौ वाली देवी की वाम कुक्षी से हुआ था। आपका जन्म होते ही पिता के घर व्यापार आदि मे कई तरह के लाभ हुए थे। सो ठीक ही है पूत के लक्षण पालने मे ही दिख

जाया करते है । सो वही कहावत चरितार्थ हुई, आपका बाल्यकाल बडे ही आमोद प्रमोद में बीता । श्रीमान् सेठ मदनलाल जी श्रीमालचन्दजी श्री चम्पालाल जी इन तीनों भ्राताओ के बीच में आप अकेली बहिन होने से घर में आपका बहुत ही लाड प्यार होता था । १३ वर्ष की अवस्था में सन् १९३० तारीख १ मई को आपका शुभ विवाह लालगढ निवासी श्रीमान सेठ मूलचन्दजी पांड्या के सुपुत्र श्रीमान बाबू चान्दमल जी के साथ हुआ था । विवाह के पहले बाबूचादमल जी की स्थिति आज जैसी नही थी । किन्तु बाई के विवाह के बाद ही धन धान्य सम्पदा दिन दुनी रात चौगुनी बढती ही चली गई । तदनुसार ही बाबू चादमलजी को बिट्रिश सरकार द्वारा रायसाहब की पदवी मिली थी । आपके तीन पुत्र रत्न हुये ।

(१) श्री गणपतराय जी जिनका विवाह बाडनू निवासी श्री दीपचन्दजी पहाडिया की सुपुत्री नोरत्न देवी के साथ हुआ ।

(२) श्री रतनलाल जी जिनका विवाह लाडनू निवासी श्रीमान सेठ नथमलजी सेठी की सुपुत्री सरीता देवी के साथ हुआ ।

(३) श्री भागचन्दजी का विवाह सम्बन्ध अभी नही हुआ है । आपकी ये दोनों पुत्रवधुयें भी बहुत ही

आज्ञाकारिणी, धर्मात्मा एवम् सरल स्वभावी महिलारत्न हैं।

पाच पुत्रिया हुई–

(१) श्रीमती सौ गिन्नो कुमारी ध ध प्रकाशचन्द जी पाटनी सुजानगढ।

(२) श्रीमती सौ० सुशीला कुमारी ध प श्री० बाबु चैनरुपजी बाकलीवाल सुजानगढ।

(३) श्रीमती सौ किरण कुमारी ध प श्री० बसत कुमार जी कोठ्यारी जयपुर।

(४) श्रीमती सौ विमला कुमारी ध प श्री० सम्पत-लाल जी बगडा लाडनू। इन चारों पुत्रियों का शुभ विवाह धर्मात्मा एव सम्पन्न घराने में हुआ।

(५) लघु पुत्री सरला कुमारी जिनकी सगाई सम्बन्ध श्रीमान् बाबू हुलाशचन्द जी सबलावत डेह निवासी के सुपुत्र श्री श्रीपाल जी के साथ हो गया है। इस प्रकार आपका घर पुत्र–पौत्र, पुत्री पौत्रिया, दोहता–दोहतियो से परिपूर्ण है।

श्रीमान् रायसाहब सेठ चान्दमल जी पाड्या को चरित्र-वान् बनाने मे आपने चेलना रानी जैसा कार्य किया है। दरअसल मे सेठानी साहिबा का ही यह सत्प्रयत्न था कि

अपने पति सेठ चान्दमलजी को चरित्रवान् वनाकर समाज के सामने ले आऊँ। अन्त मे सेठानी जी का यह प्रयास सफल हो ही गया। ये सव वाते माता वहिनों के लिए भी अनुकरणीय है। सुजानमढ मे नवीन मकान वनाया तो सर्व प्रथम अपने बच्चो पर धार्मिक सस्कार कैसे हो इस हेतु घर में मार्वल की सुन्दर वेदी वनवा कर तथा प्रतिष्ठा करवाकर भगवान विराजमान् किये। तदन्तर ही आपने नवीन भवन मे ग्रह प्रवेश किया। मरसलगंज मे श्री आचार्य विमल सागर जी के समक्ष विशाल पैमाने मे श्रीमान रायसाहव ने स्वद्रव्य से पच-कल्याणक बिम्व प्रतिष्ठा कराई थी सो भी श्री सेठानी जी की ही प्रबल प्रेरणा से कराई थी। तथा दो बार श्री शातिवीर नगर मे और गौहाटी पंच-कल्याणक प्रतिष्ठा मे भी आपका डाके वगैरह में पूर्ण सहयोग रहा। गत वर्ष ढाई महीने की सम्पूर्ण तीर्थ यात्रा मे हर क्षेत्रो मे हजारो लाखो का दान दिया। श्री हूम्मच पद्मावती ब्रह्म-चर्याश्रम मे ५०००१) रु. का दान एक दम घोपित किया। श्री शाँतिवीर नगर मे मानस्तंभ बनाने की भी आपकी स्वीकारता है, सो वह भी यथाशीघ्र बनकर तैयार हो जायेगा। आपकी भावना सदैव तीर्थयात्रा, पूजनपाठ, मुनिदान एवं अतिथि सत्कार करने की ही रहती है, हर चौमासे मे मुनिराजों के पास आहार-दानार्थ श्रीमान राय-साहव को साथ मे लेकर जाती रहती है! इन धार्मिक कार्यों

को करते हुए आपको मन ही मन बडी खुशी होती है। अभी हाल ही मे आप गजपन्या रायसाहब के साथ आचार्य श्री महावीर कीर्ती जी महाराज के दशन तथा अहार-दानार्थ गई थी वहा पर चन्द्रप्रभु, महावीर कीर्ती सरस्वती प्रकाशन माला आपके कर कमलो द्वारा ही स्थापित की गई हैं। गौहाटी मे आपकी तरफ से ही एक गू गा एव अन्धो की पाठशाला खोली गई। जिसमे गू गे लोग विद्याध्ययन करते हुए अच्छे २ काम करके दिखाते हैं। इस तरह आपने इस छोटे से जीवन काल मे लाखो का दान किया। आप सदैव हस-मुख, सरल स्वाभावी, मान-गुमान रहित देखी जाती हैं।

गत वष प्रतापगढ मे परम पू १०८ आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के दशनाथ अपनी मोटर कार लेकर आई थी आचार्य श्री के पादमूल मे ही श्री मुनिराज ऋषभ सागर जी महाराज की सप्रेरणा से सकल सौभाग्य नामक व्रत ग्रहण किया। इस व्रत के अन्तगत होने वाले नव देवता मण्डल विधान मडवा कर बडे समारोह के साथ आश्विन शुक्ला चतुदशी को पूजन की। पूजन के बाद ही इस अप्रकाशित विधान को प्रकाशन करने की स्वीकारिता दे दी। एतदय आप धन्यवाद की पात्रा हैं। आगे भी आप इसी प्रकार उदार दिल से दानादि करते हुए सच्चे देव शास्त्र गुरु की

भक्ती करती रहेगी ऐसी आशा है माता बहिनों से आग्रह है कि इस सकल सौभाग्य व्रत को ग्रहण करके अपनी आत्मा को पवित्र बनायेगे एव पू ब्र सूरजमल जी की इस तुच्छ मेहनत को भी सफ़ल बनावेगे ऐसी पूर्ण आशा है ।

नोट—इस मंडल विधान की पूजन विना व्रत के भी कर सकते हैं ।

सौ० इन्द्राकुमारी जैन गट्टी



श्रीमान् राय साहब दानवीर जन रत्न धम
दिवाकर सघ भक्त शिरोमणी सेठ चादमलजी
पाडया, सुजानगढ

श्री आदिचन्द्रप्रभु आचार्य श्री महावीर कीर्ति सरस्वती

प्रकाशन माला

सचालिका श्रीमती सौ० दानशीला-जैन महिला रत्न भवरीदेवी पाड्या सुजानगढ

यह सस्था अभी नवीन ही वीर सवत् २४९५ मे श्री १००८ श्री प पू सिद्ध क्षेत्र गजपन्था मे श्री प पू १०८ श्री आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज के तत्वावधान मे श्रीमती सौ दान शीला जैन महिला रत्न भवरीदेवी धर्म-पत्नी श्रीमान राय साहब जैनरत्न मुनिसघभक्त शिरो-मणि सेठ चादमलजी पाड्या सुजानगढ वालो के करकमलो द्वारा स्थापित हुई है जिसके अन्तर्गत प्रथम पुष्प श्री नव-देवता विधान पूजन (सकल सौभाग्य व्रत) का आपके सामने आ गया है। इसी प्रकार इस सस्था से नवीन ग्रथ प्रकाशित होकर जनता के सामने आते रहेंगे, धर्म बन्धुओ से निवेदन है कि इस सस्था-से लाभ लेंवे।

संस्था का उद्देश्य

(१) श्री दि० जैन आर्ष मार्ग को पोषन करने वाले धार्मिक ट्रेक्ट (धर्म ग्रन्थ) छपाना और उन्हे फ्री या उचित मूल्य पर वितरण करना।

(२) श्री दि० जैन विद्वानों को पारितोषिक देकर उनका सम्मान करना।

(३) श्री दि० जैन आचार्य साधु साध्वियों द्वारा लिखित मौलिक पुस्तके छापना एवं उनके उपदेशों का प्रचार करना।

(४) साधु वर्ग को स्वाध्याय के लिए शास्त्र ग्रन्थादि प्रदान की व्यवस्था करना।

(५) प्राचीन अप्रकाशित ग्रथो को प्राप्त कर उन्हें संग्रहीत करना एवं उनके प्रकाशित करने कि व्यवस्था करना।



श्री १०८ आचार्य श्री शिवसागरजी महाराज

मुनि दीक्षा
वि [illegible] २००६ नागौर
आषाढ सुदी ११

स्वर्गवास
वि स २०२६ श्री शान्तिवीर नगर,
श्री महावीरजी
फाल्गुन कृष्णा अमावस्या



॥ श्री वीतरागाय नम ॥

अथ पंचामृताभिषेक पाठ

पच नमस्कार मत्र

आर्या छद - णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आइरियाण,
णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ।

मगलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकट प्रद्योतरत्नप्रभा-
भास्वत्पादनखेंदव प्रवचनाभोधीदव स्थायिन ।
य सर्वे जिनसिद्धसूयनुगताम्ने पाठका साधव ।
स्तुत्या योगिजनैश्च पचगुरव कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ॥१॥
सम्यग्दर्शन-बोधवृत्तममल रत्नत्रय पावन ।
मुक्ति-श्री-नगराधिनाथजिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रद ।
धर्म सूक्तिसुधा च चैत्यमखिल चैत्यालय श्रयालय ।
प्रोक्त च त्रिविध चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ॥२॥
नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्यातास्चतुर्विशति,
श्रीमतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णुप्रतिविष्णु लागलधरा सप्तोत्तरा विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषा कुर्वन्तु मे)ते) मगलम् ॥३॥
देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता ।

श्री तीर्थङ्करमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ।
द्वात्रिशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा ।
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणा कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥४॥
ये सर्वौषधऋद्धय. सुतपसोऽवृद्धिगता पच ये
ये चाष्टागमहानिमित्तकुशला ये ऽष्टाविधाश्चारणा ।
पचज्ञानधरास्त्रयोपि वलिनो ये वुद्धिऋद्धीश्वरा
सप्तैते सकलार्चिता गणभृत कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ॥५॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे ।
चपाया वसुपूज्यसज्जिनपते सम्मेदशैलेऽर्हता
शेषाणामपि चोर्जयतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो
निर्वाणावनय प्रसिद्धविभवा कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥६॥
ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा
जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ।
इक्ष्वाकारगिरौ च कुन्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहा कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ॥७॥
यो गर्भावतरोत्सवो भगवता जन्माभिषेकोत्सवो
यो जात परिनिष्क्रमेण विभवो य केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावित स्वर्गिभि
कल्याणानि च तानि पच सतत कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ॥८॥
इत्थ श्रीजिनमंगलाष्टकमिद सौभाग्यसपत्प्रद
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधिस्यस्यतीर्थङ्कराणा मुष ।

ये श्रृण्वन्ति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥६॥

—इति मंगलाष्टकम्—

श्रीमज्जिनेंद्रमभिवंद्यजगत्त्रयेशं
स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हम् ।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु-
र्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाभ्यधायि ॥

(इस श्लोकको पढ़कर भगवान् के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना)

श्रीमन्मंदरसुन्दरे शुचिजलैर्धौतैः सदर्भाक्षतैः ।
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत्पादपद्मस्रजः ॥
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे ।
मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥

(इस श्लोकको पढ़कर आभूषण व यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये)

तिलक लगाने का श्लोक

सौगन्ध्यसंगतमधुव्रतझंकृतेन,
संवर्ण्यमानमिव गन्धमनिंद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवन्द्य-
पादारविन्दमभिवंद्य जिनोत्तमानाम् ॥

भूमिशोधन के लिये भूमि प्रक्षालन करने का श्लोक—

ये संति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता
नागाः प्रभूतबलदर्पयुता विबोधाः ।

संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषा ।
प्रक्षालयामि पुरत स्नपनस्य भूमिम् ।।

अभिषेक के लिये पीठ प्रक्षालन करने का श्लोक—

क्षीरार्णवस्य पयसा शुचिभि प्रवाहै ।
प्रक्षालित सुरवरैर्यदनेकवारम् ।।
अत्युद्धमुद्यतमह जिनपादपीठ ।
प्रक्षालयामि भवसम्भवतापहारि ।।

पीठ पर श्रीकार लिखने का श्लोक—

श्रीशारदा सुमुखनिर्गतबीजवर्णम्,
श्रीमगलीकवरसर्वजनस्य नित्यम् ।।
श्रीमत्स्वय क्षयति तस्य विनाशविघ्नम्,
श्रीकारवर्णलिखित जिनभद्रपीठे ।।

दश दिकपाल आह्वान श्लोक—

इन्द्राग्निदण्डधरनैऋतपाशपाणि,
वायूत्तरेशशशिमौलिफणीद्रचन्द्रा ।
आगत्य यूयमिह सानुचरा सचिह्ना,
स्व स्व प्रतिच्छत बलि जिनपाभिषेके ।।

[नीचे लिखे मन्त्रो को पढकर दिक्पालो को अर्घ चढावे]

ॐ आ क्रौ "ह्री" इन्द्र आगच्छ २ इन्द्राय स्वाहा ।
ॐ आं क्रौ "ह्री" अग्ने आगच्छ २ अग्नये स्वाहा ।।
ॐ आं क्रौ "ह्री" यम आगच्छ २ यमाय स्वाहा ।
ॐ आं क्रौ "ह्री" नैऋत आगच्छ २ नैऋतत्याय स्वाहा ।।

ॐ आ क्रौं "ह्रीं" वरुण आगच्छ २ वरुणाय स्वाहा ।
ॐ आ क्रौं "ह्रीं" पवन आगच्छ २ पवनाय स्वाहा ॥
ॐ आ क्रौं "ह्रीं" कुबेर आगच्छ २ कुबेराय स्वाहा ।
ॐ आ क्रौं "ह्रीं" ऐशान आगच्छ २ ऐशानाय स्वाहा ॥
ॐ आ क्रौं "ह्रीं" धरणींद्र आगच्छ २ धरणींद्राय स्वाहा ।
ॐ आ क्रौं "ह्रीं" सोम आगच्छ २ सोमाय स्वाहा ॥

नाथ ! त्रिलोकमहिताय दशप्रकार—
धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्त जगत्त्रयाय ।
अर्घ महार्घगुणरत्नमहार्णवाय ।
तुभ्य ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च ॥

—इति दश दिक्पाल अर्घम्—

जन्मोत्सवादि-समयेषु यदीयकीर्त्ति ।
सेंद्रा सुरा प्रमदभारनता स्तुवंति ॥
तस्याग्रतो जिनपते परया विशुध्द्या ।
पुष्पांजलिं मलयजाद्रमुपाक्षिपेऽहम् ॥

—इति पुष्पांजलि—

दध्युज्ज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपै ।
पात्रार्पितै प्रतिदिन महतादरेण ॥
त्रैलोक्यमंगलसुखालयकामदाह—
मारार्तिक तवविभोरवतारयामि ॥

—इति मंगल आरती अवतारण—

य पांडुकामलशिलागतमादिदेव—

मस्नापयन्सुरवरा सुरशैलमूर्ध्नि ।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पं ।
सम्भावयामि पुर एव तदीय विंबम् ॥
—इति विंबस्थापनम्—
सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरूप्य—
ताम्रारकूटघटितान् पयसा-सुपूर्णान् ॥
संवाह्यतामिव गताश्चतुर समुद्रान् ।
सस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकाते ॥
—इति कलशस्थापनम्—
आभि. पुण्याभिरद्भि परिमलबहुलेनामुना चन्दनेन,
श्रीहृक्पेयैरमीभि शुचिसदलचयैरुद्गमैरेभि रुद्धै ।
हृद्यैरेभिर्निवेद्यैर्मखभवनमिमैर्दीपयद्भि प्रदीपै,
धूपै. प्रायोभिरेभि पृथुभिरपि फलैरेभिरीश यजामि ॥
—इति अर्घम्—
दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटी–
सलग्नरत्नकिरणच्छविधूसराघ्रिम् ।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टै–
र्भक्त्याजलैर्जिनपति बहुधाभिषिंचे ॥

ॐ ह्री श्रीमत भगवत कृपालसत वृषभादिवर्धमानात चतुर्विंशतितीर्थङ्करपरमदेव आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे……देशे……नाम्नि नगरे एतद्…जिन चैत्यालये सं०………मासाना मासोत्तममासे……

मासे पक्षे तिथौ वासरे पौर्वाह्लिक समये मुनिआर्यिकाश्रावकश्राविकानाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचे नम । इति रस स्नपनम् ।

सुस्निग्धैर्नवनालिकेरफलजैराम्रादिजातैस्तथा ।
पुण्ड्रेक्ष्वादिसमुद्भवैश्च गुरुभि पापापहै रञ्जसा ।।
पीयूषद्रवसन्निभैर्वररसै सञ्ज्ञानसंप्राप्तये ।
सुस्वादैरमलैरल जिनविभुम् भक्त्यानघ स्नापये ।।

ॐ ह्री इति रस स्नपनम् ।

नालिकेरजलै स्वच्छै शीतै पूतैर्मनोहरै ।
स्नानक्रिया कृतार्यस्य विदधे विश्वदर्शिन ।।

ॐ ह्री इति नालिकेर रस स्नपनम

सपक्वै कनकच्छाय शार्मोदैर्मादकारिभि ।
सहकाररस स्नान कुर्म शर्मैकसद्मन ।।

ॐ ह्री इति आम्र रस स्नपनम्

भुक्त्यगनानमविकीयमाणै पिष्टार्थकपुररजो विलासै ।
माधुर्यधुर्यवरशर्करौघैर्भक्त्या जिनस्य स्नपन करोमि ।।

ॐ ह्री इति शर्करा स्नपनम् ।

भक्त्या ललाटतटदेशनिवेशितोच्चै ।
हस्तै श्च्युता सुरवरासुरमर्त्यनाथै ।
तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा ।
सद्य पुनातु जिनविम्बगतैव युष्मान् ।।

ॐ ह्री इति इक्षु रस स्नपनम ।

उत्कृष्टवर्णनवहेमरसाभिराम-
देहप्रभावलयसङ्गमलुप्तदीप्तिम् ॥
धारा घृतस्य शुभगन्धगुणानुमेया ।
वन्देऽर्हता सुरभिसंस्नपनोपयुक्ताम् ॥

ॐ ह्री.............. इति घृत स्नपनम

सम्पूर्णशारदशशाकमरीचजाल-
स्यन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैं ॥
क्षीरैर्जिना शुचितरैरभिषिच्यमाना ।
सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ।

ॐ ह्री .. .. .. इति दुग्धस्नपनम्

दुग्धाब्धिवीचिपयसचितफेनराशि-
पाडुत्वकातिमयधीरयतामतीव ॥
दध्नागता जिनपते प्रतिमा सुधारा ।
सम्पद्यता सपदि वाञ्छितसिद्धये व. ॥

ॐ ह्री......... .. इति दधि स्नपनम्

सस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैं ।
सर्वाभिरौषधिभिरर्हतउज्ज्वलाभिः ॥
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेला-
कालेयकुकुमरसोत्कटवारिपूरैं ॥

ॐ ह्री... ..... इति सर्वोपधि स्नपनम्

कर्पूरधूलिमिलितैं घनसारपङ्क–
सम्मिश्रतैं कमलतन्दुलपिण्डपिण्डैं ।
उद्वतन भगवतो वितनोमि देह–
स्नेहोपलेपकलनापरिलोपनाय ॥

इति चन्दनादिलेपन करोमि स्वाहा ।

समृद्ध भक्तया परया विशुध्द्या,
कपूरसम्मिश्रितचन्दनेन ।
जिनेन्द्रस्यदेवा सुरपुष्पवृष्टि,
विलेपन चारु करोमि मुक्त्यै ॥

इति चन्दनादि लेहन करोमि स्वाहा ।

वासन्तिकाजातिसुरेशवृन्दै–
र्बकुलकवृन्दैरपि चम्पकाद्यैं
पुष्पैरनेकैरलिभिहु ताग्रै,
श्रीमज्जिनेन्द्राङ्घ्रियुग यजेऽह ॥

इति पुष्पवृष्टि करोमि स्वाहा ।

इष्टैमनोरथशतैरिव भव्यपु सा,
पूर्णैं सुवर्णकलशैंनिखिलैंवसानैं ॥
ससारसागरविलधनहेतुमेतु–
माप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम् ॥

ॐ ह्रीं

इति चतु कोण कलशस्नपनम् ।

द्रव्यैरनल्पघनसार चतु. समाद्यै–
रामोदवासितसमस्तदिगतरालै ।
मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुङ्गवाना,
त्रैलोक्यपावनमह स्नपन करोमि ॥

ॐ ह्री ... . इति सुगन्धित स्नपनम ।

अथ शांति मंत्र प्रारंभ्यते

ॐ नम सिद्धेभ्य । श्री वीतरागाय नम ॐ नमोऽर्हते भगवते, श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यानपवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोकमहीव्याप्ताय, अनन्तससारचक्रपरिमर्दनाय, अनन्तदर्शनाय, अनन्तवीर्याय, अनन्तसुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय, ऋष्यार्यिकाश्राविकाप्रमुखचतु सघोपसर्गविनाशनाय, घातिकर्मविनाशनाय, अघातिकर्मविनाशनाय, अपवाय छिधि छिधि भिधि भिधि । मृत्यु छिधि भिधि २ । अतिकाम छिधि छिधि भिधि २ । रतिकाम छिधि २ भिधि २ । क्रोध छिधि २ भिधि । अग्नि छिधि २ भिधि २ । सर्वशत्रु छिधि २ भिधि २ । सर्वोपसर्ग छिधि २ भिधि २ । सर्वविघ्न छिधि २ भिधि २ । सर्वभय छिधि २ भिधि २ । सर्वराजभयं छिधि २ भिधि २ । सर्वचौरभय

कुरु कुरु । सर्वदेशानन्दन कुरु कुरु । सर्वयजमानानन्दन कुरु कुरु सर्वदुख हन हन, दह दह, पच पच, कुट कुट, शीघ्र शीघ्र ।

यत्सुखं त्रिपु लोकेपु व्याधिव्यसनवर्जित ।
अभय क्षेममारोग्य स्वस्तिरस्तु विधीयते ।।

शिवमस्तु । कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु ।चन्द्रप्रभवासुपूज्यमल्लिवर्द्धमान पुष्पदत शीतल मूनिसुव्रत नेमिनाथ पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नम. इत्यनेन मत्रेण नवग्रहार्थ गधोदक-धारावर्पणम् ।

अथ शांति धारा

ॐ ह्री श्री क्ली ऐ अर्हं व मं ह स त व व म म हं ह सं स तं तं प पं झ झ झ्वी झ्वी क्षी क्षी द्रा द्रां द्री द्री द्रावय द्रावय नमो अर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्री क्रौ मम पाप खडय खंडय हन हन दह दह पच पच पाचय पाचय शीघ्र कुरु कुरु । ॐ नमोऽर्हं झ झ्वी क्ष्वी हं सं झ व ह्वः प. ह क्षां क्षी क्षु क्षू क्षे क्षै क्षो क्ष. ॐ ह्रा ह्री ह्रु ह्रू ह्रे ह्रै ह्रो ह्र: असिआउसा नम. मम पूजकस्य (सर्वपूजकाना) ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा । ॐ द्रा द्रा द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठ. ठ मम श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु पुष्टिरस्तु शातिरस्तु कांतिरस्तु कल्याणमस्तु मम

कार्यसिद्धयर्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं श्रीमद्भगवते सर्वोत्कृष्ट त्रैलोक्यनाथोर्चित पादपद्मप्रसादात् सद्धर्मं श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु स्वस्तिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु श्रीशान्तिनाथो माम् प्रति प्रसीदतु, श्री वीतरागदेवो माम् प्रति प्रसीदतु, श्री जिनेन्द्र परम मांगल्यनामधेयो ममेहामुत्र च सिद्धिं तनोतु । ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चिंतामणि-पार्श्वतीर्थंकराय रत्नत्रयरूपाय अनंतचतुष्टयसहिताय धरणेन्द्रफणा-मण्डलमण्डिताय समवसरणलक्ष्मीशोभिताय इन्द्र धरणेन्द्र-चक्रवर्त्यादिपूजित पादपद्माय केवलज्ञानलक्ष्मीशोभिताय जिनराज महादेवाय अष्टादश दोष रहिताय षट्चत्वारिंशत् गुण संयुक्ताय परम गुरु परमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्य परमेश्वराय देवाय सर्वसत्व-हितकराय धर्मचक्राधीश्वराय सर्वविद्या परमेश्वराय त्रैलोक्य-मोहनाय धरणेन्द्र-पद्मावती सहिताय अतुलबलवीर्यपराक्रमाय अनेक दैत्य-दानव कोटि मुकुट घृष्ट पाद पीठाय ब्रह्मा विष्णु रुद्र नारद खेचर पूजिताय सर्व भव्यजनानन्दकराय सर्व रोग मृत्यु घोरोपसर्ग विनाशाय सर्व देश ग्रामपुर पट्टन राजा प्रजा शान्तिकराय सर्व जीव विघ्न निवारण समर्थाय श्री पार्श्वदेवाधिदेवाय नमोस्तु । श्रीजिनराज पूजन प्रसादात् सर्व सेवकानाम् सर्व दोष रोग शोक भय पीडा विनाशनं कुरु कुरु, सर्व शान्ति तुष्टि पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा । ॐ नमो श्री शान्ति देवाय

शनि राहु केतु सर्वे नवग्रहा प्रीयंताम् २, प्रसीदंतु । देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांति भगवान् जिनेन्द्र. । यत्सुखं त्रिपु लोकेपु व्याधिव्यसनवर्जित । अभय क्षेमं आयोग्य स्वस्तिरस्तु मम सदा । यस्यार्थं क्रियते कर्म सप्रीतो-नित्य मस्तुमे । शातिक पौष्टिक चैव सर्वकार्येपु सिद्धिद. । आह्वानन नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् । विसर्जन न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।

इति शातिधारा

❀ बड़ी शांतिधारा ❀

(नागोंर भण्डार से प्राप्त)

गधोदक स्नपन समये इमे शातिमंत्रा पठ्यन्ते ।

ॐ ह्री श्री क्ली ऐ हं वं ह मं सं तं प व व म म हं हं सं सं त तं प पं भ्म भ्म इ्वी इ्वी क्ष्वी क्ष्वी द्रा द्रा द्री द्री द्रावय द्रावय नमोर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्री क्रों ह्रं मम पापं कड्डु कड्डु दह दह हन हन पच पच पाचय पाचय ह्रं भ्म इ्वी क्ष्वी ह स. भ्म व ह्र प ह क्षां क्षी क्षू क्षे क्षो क्षौ क्षं क्षी ह्रां ह्री ह्रू ह्रे ह्रै ह्रो ह्रौ ह्रं ह्र ह्री द्रा द्रां द्री द्री द्रावय द्रावय, नमोर्हते भगवते श्रीमते ठ ठ ठ मम श्रीरस्तु सिद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शातिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा ।

ॐ निखिल भुवन भवन मंगलभूतजिनपति स्नपन समय

भिन्द २, सव स्थावर जगम वृश्चिक दृष्टि विष जातिविष
[illegible] [illegible] छिन्द २ भिन्द २ सर्वसिद्ध अष्टापद

नमभिषेचयामि । ह्रं झंझ्वीं क्ष्वी हं स. द्रां द्री अर्हन ह्री क्ली व्लू द्रावय द्रावय स्वाहा । ॐ शीतोदक प्रदानेन शीतलो भगवान्प्रसीदतु शीता आप. पांतु शिवं मांगल्यन्तु श्रीमदस्तु वः । ॐ गंधोदकप्रदानेन अभिनंदनो भगवान्प्रसीदतु गन्धा पांतु शिवं मागल्यन्तु वः । ॐ अक्षतोदकप्रदानेन अनतो भगवान्प्रसीदतु अक्षता पांतु शिव मांगल्यन्तु श्रीमदस्तु व । ॐ पुष्पोदक प्रदानेन पुष्पदन्तो भगवान्प्रसीदतु पुष्पाणि पातु शिवं मांगल्यतु श्रीमदस्तु वः । ॐ नैवेद्य प्रदानेन नेमिर्भगवान्प्रसीदतु पीयूषपिंडा पातु शिवं मागल्यतु श्रीमदस्तु व । ॐ प्रदीप-प्रदाने चन्द्रप्रभो भगवान्प्रसीदतु कर्पूर मणिमय दीपाः पातु शिव मागल्यतु श्रीमदस्तु व । धूपप्रदानेन धर्मनाथो भगवान् प्रसीदतु गुग्गुलादि दशागधूपा पातु शिवं मांगल्यतु श्रीमदस्तु व । ॐ फलप्रदानेन पार्श्वनाथो भगवान् प्रसीदतु, क्रमुक नारगप्रभृतिफलानि पातु शिव मागल्यतु श्रीमदस्तु वः । ॐ अर्हन्त पातु व, सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु व । ॐ सिद्धा पातु व हृदय निर्वाण प्रयच्छतु व, ॐ आचार्य्या पांतु व, शीतल सौगधमस्तु व, ॐ उपाध्याया पातु व, सौमनस्य चास्तु व, ॐ साधव पातु व., अन्नदान-तपोवीज्ञानमस्तु व ।

ॐ वृषभनाथस्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् अष्टविध कर्मविनाशन चास्तु व, ॐ अजितस्वामिन. श्री पादपद्म-

सम्प्राप्तावसरमभिनवकर्पूर कालागुरु कुंकुम हरिचंदनाद्यनेक सुगंधि बंधुर गंध द्रव्य संभार संबंध बंधुरमखिलदिगन्तराल व्याप्त सौरभातिशय समाकृष्ट ममदसामज कपोल तल विगलित मद मुदित-मधुकरनिकरमर्हत्परमेश्वरपवित्रतरगात्रस्पर्शनमात्रपवित्रमयीद गंधोदकधारावर्षमशेषहर्षनिबंधनं शांतिं करोतु, कांतिमाविष्करोतु कल्याणं प्रादुःकरोतु सौभाग्यं संतनोतु आरोग्यं तनोतु संपदं संपादयतु, विपदमपसादयतु, यशोविकाशयतु, मनः प्रसादयतु, आयुर्दीर्घयतु, श्रियं श्लाघयतु, शुद्धिं विशुद्धयतु, बुद्धिं वर्द्धयतु, श्रेयः पुष्णातु, प्रत्यवायं मुष्णातु अनभिमतं निवारयतु मनोरथं परिपूरयतु। परमोत्सवकारणमिदं परममंगलमिदं परमपावनमिदं स्वस्त्यस्तु नः क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः असिआउसा सर्वशांतिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय घातिकर्मविनाशनाय अष्टमहाप्रातिहार्यसहिताय चतुस्त्रिंशदतिशयसमेताय अनन्तदर्शनज्ञानवीर्यसुखात्मकाय अष्टादशदोषरहिताय पंचमहाकल्याणसम्पूर्णाय नवकेवललब्धिसमन्विताय दशविशेषणसंयुक्ताय देवाधिदेवाय धर्मचक्राधीश्वराय धर्मोपदेशनकराय चमर वैरोचनाच्युतेन्द्रप्रभृतीन्द्रशतेन मेरु शिखरशेखरीभूतपांडुकशिलातले गंधोदकपरिपूरितानेकविचित्र मणिमय मंगल कलशैरभिषिक्तमिदानीमहं त्रिलोकेश्वरमर्हत्परमेष्ठी-

सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छतु व । ॐ श्री अरिष्टनेमिर्भगवानक्षत चारित्रं ददातु वः । ॐ श्रीमत्पार्श्वभट्टारक श्री पादपद्म-प्रसादात् सर्व विघ्नविनाशनमस्तु वः । ॐ श्री वर्द्धमान स्वामिनः श्री पादपद्म प्रसादात् सम्यग्दर्शनाद्यष्ट गुण विशिष्टतास्तु व । ॐ वृषभादयो महावीरवर्द्धमानपर्यन्ता-श्चतुर्विंशतितीर्थंकरा अर्हंतो भगवन्त सर्वज्ञा सर्वदर्शिन सकलवीर्या वीतरागद्वेषमोहास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकनाथा-स्त्रिलोकप्रद्योतनकराः जाति जरामरण रोग प्रमुक्ता. भव्य-जनहृत्-कमल संबोधनकरा., अनेक गुणगणाकलंकृत दिव्यदेहधरा पंचमहाकल्याणाष्ट महाप्रातिहार्य-चतुस्त्रिंशद तिशय विशेष संप्राप्ता सुरासुरोरगेन्द्र मुकुटतटघटित मणिगणकिरणाराग रंजित चारुचरणारविंदद्वन्द्वा नृपतिशत सहस्त्रालंकृत सार्व भौम राजाधिराज परमेश्वर सकल चक्र-वर्तिबलदेवमंडलीक महामंडलीक महामात्य सेनानाथ श्रेष्ठिपुरोहितादि शिरस्कराजलिनमित कर तल कमल मुकुलालंकृत पादपद्म युगला विद्याधरराजकिरीट कोटि रुचिर रोचिर्वृष्ट चंचच्चरण कमला. कुलिशनाल रजत-मृणाल मंदारकर्णिकारातिकुल शिखरि शेखर गगन गमन मंदाकिनी महाहृद नदीनदशत सहस्र कमलवासिन्यादि सर्वाभरण भूषितांग सकल सुरसुन्दरीवृन्द वंदित चारुचरण-युगलकमला. देवाधिदेवा. सशिष्यप्रतिशिष्यानुवर्गाः प्रसीदतु

प्रसादात्विजय प्रयच्छतु व । ॐ सभवनाथ स्वामिन पादपद्मप्रसादादनेकगुणगणाश्चास्तु व, ॐ अभिनदनस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादादभिमतफन प्रयच्छतु व । ॐ सुमति स्वामिन श्री पादपद्मप्रसादादमृत पवित्र प्रयच्छतु व । ॐ श्री पद्मप्रभस्वामी दया प्रयच्छतु व । ॐ सुपार्श्व स्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् कर्मक्षयश्चास्तु व । ॐ श्री चद्रप्रभ स्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् चद्रार्कतेजोस्तु व । ॐ श्री पुष्पदत स्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् पुष्पसायकातिशयोस्तु व । ॐ शीतल स्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् अशुभ कर्ममलप्रक्षालनमस्तु व । ॐ श्रेयोजिन श्रेयस्करोस्तु व । ॐ श्री वासुपूज्य स्वामीन रत्नत्रयावासकरोऽस्तु व । ॐ विमलस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् सद्धर्म बुद्धिर्वै मागल्य चास्तु व । ॐ अनन्तनाथस्वामिन श्री पादपद्मप्रसादादनेकधनधान्याभिवृद्धिरक्षणमस्तु व ।

ॐ श्री धर्मनाथ स्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् शमप्रचयोऽस्तु व । ॐ श्रीमदर्हत्परमेश्वरमवज्ञ परमेष्ठिशान्तिनाथस्वामी शान्तिकरोस्तु व । ॐ कुन्थु स्वामीन तनाभिवृद्धिकरोस्तु व । ॐ अरस्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् परम कल्याण परपरास्तु व । ॐ श्री मल्लिनाथ स्वामी शल्यविमोचनकरोस्तु व । ॐ श्री मुनिसुव्रत स्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् सम्यग्दर्शन चास्तु व । ॐ श्री नमि भट्टारक स्वामी

किन्नर-किंपुरुष-गारुड़-गंधर्व-यक्ष-राक्षस-भूतपिशाचाश्च व प्रीयंतां। ॐ बुद्ध शुक्र बृहस्पत्यर्क्केन्दु शनिश्चांगारक-राहु केतु-तारकादि महाग्रहा ज्योतिष्क देवताश्च व: प्रीयता। ॐ चमर वैरोचन- धरणेन्द्र-नंद-भूतानन्द-वेणुदेव वेणुधारि पूर्णवशिष्ट जलकान्त जलप्रभ घोष महाघोष हरिषेण हरिकान्तामित गत्यमितवाहन वेलांजन प्रभजनाग्निशिखाग्नि-वाहनाश्चेति विंशतिभवनेन्द्राश्च व प्रीयता। ॐ गीतरति गीतकान्त सत्पुरुष महापुरुष सुरूप प्रतिरूप घोष महाघोष पूर्णभद्र मणिभद्र पुष्पचूल महाचूल भीम महाभीम काल महाकालश्चेति षोड़शव्यन्तरेन्द्राश्च व. प्रीयंताम्।

ॐ नाभिराज जितशत्रु विजितारि स्वयंवर मेघरथ वरुणराज सुप्रतिष्ठ महासेन सुग्रीव दृढ़रथ विष्णुराज वसुपूज्य कृतशर्मा सिंहसेन भानुराज विश्वसेन सूररसेन सुदर्शन कुंभराज सुमित्र जयवर्मा समुद्रविजय अश्वसेन सिद्धार्थाश्चेति चतुर्विंशति जिनजनकाश्च व: प्रीयंता। ॐ मरुदेवी जया सुषेणा सिद्धार्था मंगला सुसीमा पृथ्वीमति लक्ष्मीमति रामा सुनन्दा वैष्णवी विजया सुशर्मा लक्ष्मणा सुदत्ता ऐरावती कमलावती सुमित्रा प्रभावती पद्मावती सुभद्रा शिवादेवी ब्रह्मला प्रियकारिण्य भिधानाश्चेति चतुर्विंशतिजि-नजिनन्यो व: प्रीयंतां। ॐ वृषभमुख महायक्ष त्रिमुख यक्षेश्वर तंबुरु सुकुमवर नंदि विजयाजित ब्रह्मेन्द्रशांतकुमारषण्मुख

व । ॐ परमनिर्वाणमार्गप्राप्त परममगल (नामधेया)
सद्धमसवकार्यव्वैहिकामुनके च मिद्धा सिद्धि प्रयच्छतु व ।

ॐ आमौषधय, क्ष्वेडोषधय, जल्लौपधय, विडौषध-
यश्च व प्रीयता ॐ मति स्मृति सज्ञा चिताभिनिवोधिक
ज्ञानिनश्च व प्रीयता।ॐ कोष्ठबुद्धि बीजबुद्धि पदानुसारिबुद्धि
सभिन्नश्रोतार श्रमणाश्च व प्रीयता । ॐ जलचारण
जघाचारण ततुचारण-भूमि चारण पुष्पचारण श्रेणिचारण
पत्रचारण फलचारण चतुरगुलचारणाकाशचारणाश्च व
प्रीयताम् ।

ॐ मनोवली ।वचोवली कायवलीनश्च व प्रीयता ।
ॐ सप्तर्द्धि गुण सयुक्ताश्च व प्रीयता ।

ॐ उग्रतपो दीप्ततपो महातपो घोरतपोनुपमतपो
महोग्रतपश्च व प्रीयता ॐ मतिश्रुतावधिमन पर्ययकेवल-
ज्ञानिनश्च व प्रीयता ।

ॐ यम वरुण कुवेर वासवश्च व प्रीयता । ॐ असुर-
नाग विद्युत् सुपर्णाग्नि वातस्तनितोदधिद्वीप दिक्कुमारादि
दशविध भवनवासिकाश्च व प्रीयता । ॐ अनन्ता-वासुकि-
तक्षक कर्कोटक पदम-महापद्म शखपाल-कुलिक-जय-विजय
नागाश्च व प्रीयता । ॐ इन्द्राग्नि-यम नैऋति वरुण-वायु
कुवेरेशानधरणेन्द्र-सोमदेवता इति दशविधदिग्देवताश्च व
प्रीयता । ॐ सुरासुरोरगेन्द्र, चमरचारण-सिद्धविद्याधर-

सर्वकाल मपि सपत्तिरस्तु सिद्धिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु शाति-रस्तु कल्याणसपदस्तु । मन समाधिरस्तु श्रेयोभिवृद्धिरस्तु । शमयन्तु घोराणि पापानि, पुण्यं वर्द्धता धर्मोवर्द्धता आयु-वर्द्धतां कुलगोत्रं चाभिवर्धता स्वति भद्र चास्तु व' स्वस्ति भद्र चास्तु न. । तथा भूयो भूय श्रेय. श्रेय ओ ज्वी क्ष्वी ह सः स्वस्त्यस्तु व. स्वस्त्यस्तु न. स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा ।

ॐनमोऽर्हते भगवते श्रीपार्श्वतीर्थ कराय श्रीमद्रत्नत्रया-लंकृताय दिव्यमूर्ति प्रभामण्डल मण्डिताय द्वादशगणपरिवेष्टि-ताय शुक्लध्यान पवित्राय सर्वज्ञाय स्वयभुवे सिद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रिलोकमहिताय अनन्त ससार चक्रपरिमर्दनाय अनन्त ज्ञानाय अनन्त दर्शनाय अनन्त वीर्याय अनन्त सुखाय सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्यवशकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे धरणेन्द्र फणामण्डल मण्डिताय उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयकराय अजरामराय अपवाय, अस्माक मृत्यु छिद २ भिद २,हन्तु काम छिद २ भिद २,रतिकामं छिद २ भिद २, वलिकाम छिद २ भिद २, क्रोधं छिद २ भिद २, पाप छिद २ भिद २,बैर छिद २ भिद २,वायुधारण छिद २ भिद २, अग्निमशनं छिद २ भिद २, सर्वशत्रु छिन्द २ भिद २,सर्वोपसर्ग छिद२ भिद २,सर्वविघ्न छिंद २ भिद २, सर्वभयं छिन्द २ भिन्द २, सर्वराजभयं छिन्द २ भिन्द २, सर्वचौर्यभय छिद २ भिन्द २, सर्वदुष्टमृगभय छिद २ भिद २,

पाताल किन्नर गरुड गधव महेद्रकुबेर वरुण विद्युत्प्रभ सर्वाह्न धरणेन्द्र मातग नामानश्चतुर्विशति यक्षेन्द्राश्च व प्रीयताम्। ॐ चक्रेश्वरी रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रश्रृखला पुरुपदत्ता मनिवेगा काली ज्वालामालिनी महाकाली मानवी गोरी गान्धारी वैरोट्यनन्तमती मानसी महामानसी जयापराजिता बहुरूपिणी चामुडी कुष्माडि पद्मावती सिद्धायिनीति चतुर्विशति यक्षीदेवताश्च व प्रीयता । ॐ कुलगिरि शिखर शेखरीभूत महाह्लदादि सरोवर मध्य स्थित सहस्र दल कमल वासिन्यो मानिय सकाल सुर सुन्दर सुन्दरी वृन्द वन्दित पादकमलाश्च देव्यो व प्रीयता । ॐ यक्ष वैश्वानर राक्षस नद्दृत पन्नगासुर सुकुमार पितृ विस्वमालि चमर वैरोचन महाविद्य मार विश्वेश्वर पिंडाशिन पश्चदश तिथीदेवताश्च व प्रीयता । ॐ सोधर्मेशान सानत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लान्तव कापिष्ठ शुक्र शतार सहस्रारानतप्राणतारणाच्युतेंद्रादि पोडश कल्पवासिकाश्च व प्रीयता । ॐ हेट्ठीम १, हेट्ठीम मज्झिम२हेट्ठीम उवरिम३ मज्झिम हेट्ठीम४मज्झिम मज्झिम५ मज्झिम उवरिम६उवरिम हेट्ठीम७ उवरिम मज्झिम८उवरिम उवरिम ९ नव ग्रैवेयक वैमानिकाश्च व प्रीयता । ॐ अभ्यचिमालिनी वैरोचना सोमा सोमरूपाताश्च व प्रीयता ।

ॐ अतीतानागत वतमान विकल्पानेकानेक विविध गुण सम्पूर्णाष्टगुणसयुक्त सकलसिद्धसमूहाश्च व प्रीयता ।

पित काश्मीर केशर आणि । सित श्रीखंड कर्पूर सानि ॥
करि भवभ्रमाचीहानि । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २॥
पूजो २ । चंदनं० ।

शाली कामोद वासि सुगधी । ज्याची मुक्ताफल कृतसन्धि ॥
केलि अक्षय पदाचि बन्दि । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २॥
पूजो २ । अक्षतान्० ।

नाग चपा चंपक चमेली । मन्द मन्दार पुष्प बहु मेली ॥
काम विध्वंस होत सहेली । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २॥
पूजो २ । पुष्पं० ।

घृत घेवर साखर पूरी । गव्य मिष्टान्न मिश्रित खीरी ॥
ज्याने केल्ने क्षुधादिक दूरी । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करनी २॥
पूजो २ । नैवेद्यम्० ।

घृत भरुनी दीप प्रजाली । आणि कापूर वत्ति उजाली ॥
महामोहान्ध तमते टाली । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २॥
पूजों २ । दीपं० ।

खेऊँ जिनाघ्रि धूप पिगाणि । दस सुगन्ध वासित आणि ॥
अष्ट कर्माचि होईल हाणि । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २॥
पूजो २ । धूप० ।

पुङ्ग नारिग श्रीफल केले । पिस्ता बादाम अखरोट फल ॥
तुम्हा होईल फल आढाल । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २॥
पूजो २ । फलं० ।

सवदोपभय छिंद २ भिंद २,सवरोग छिंद२ भिंद २,सवव्याधि भय छिंद २ भिंद २,सवडामर छिंद२ भिंद २,सवपरमत्र छिंद २ भिंद २, सर्वात्मिघात छिंद भिंद २, सवपरघात छिंद २ भिंद२, सवशूलरोग छिंद२ भिंद२, सर्वाक्षिरोग छिंद२भिंद२, सर्वशिरोरोग छिंद २ भिंद २,सर्वमहिपमारी छिंद २ भिंद २, सवनरमारी छिंद २ भिंद २, सवअश्वमारि छिंद २ भिंद २, सवगोमारि छिंद २ भिंद २, सवमहिपमारी छिंद २ भिंद २, सवजिमारी छिंद २ भिंद २, सर्वधान्यमारी छिंद २ भिंद २, सववृक्षमारी छिंद २ भिंद २,सवंगुल्ममारी छिंद २ भिंद २, सर्वसस्यमारी छिंद २ भिंद २, सवलतामारी छिंद २ भिंद २, सर्वपत्रमारी छिंद २ भिंद २, सवपुष्पमारी छिंद २ भिंद २, सव फलमारी छिंद २ भिंद २,सवराष्ट्रमारी छिंद २ भिंद २, सवदेशमारी छिंद २ भिंद २,सर्वक्रूररोगवेतालशाकिनीडाकिनी-भय छिंद २ भिंद २,सववेदनीयम् छिंद २ भिंद, सर्वापिसमारी छिंद २ भिंद २, दुर्भगत्व छिंद २ भिंद२ । ॐ सुदशन महाराज-चक्र विक्रम सत्त्व तेजोवल शौय वश कुरु २, सवजनानन्द कुरु २ सवगोकुलानन्द कुरु २ सवग्रामनगरकेटकर्वट मटव पत्तन दोणमुख सवाह्नानन्द कुरु २ सर्वानन्द कुरु २ हन २ दह २ पच २ कुट २ शीघ्र २ वशमानय ह्रू फट् स्वाहा ।

ॐ पुण्याह पुण्याह प्रीयन्ता २ भगवतोऽर्हन्त सवज्ञ सव दर्शिन सकल वीर्या सकल सुखास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वर-

निर्जितकन्तुमनन्तजिनेश । वन्दे मुक्तिवधूपरमेशं ॥८॥
धर्म निर्मलशर्मापन्नम् । धर्मपरायण जनताशरणम् ॥
शाति शातिकरं जनताया । भक्तिभरक्रमकमलनताया ॥९॥
कुन्थु गुणमणिरत्नकरण्ड । ससाराम्बुधितरणतरण्ड ॥
अमरीनेत्रचकोरीचन्द्रं । अरपरम पदविनुतमहेन्द्र ॥१०॥
उद्धतमोहमहाभटमल्लं । मल्लिं फुल्लशरप्रतिमल्लं ॥
सुव्रतमपगतदोपनिकाय । चरणाम्बुजनुतदेवनिकाय ॥११॥
नौमि नमि गुणरत्नसमुद्र । योगिनिरूपितयोग समृद्रं ॥
नीलश्यामलकोमलगात्र । नेमिस्वामिनमेनोदात्र ॥१२॥
फणिफणमण्डपमण्डितदेह । पार्श्वं निजहितगतसदेहं ॥
वीरमपारचरित्रपवित्र । कर्ममहीरुहमूललवित्र ॥१३॥
ससाराप्रतिमप्रतिबोध । परिनिष्क्रमण केवलबोध ॥
परिनिर्वृतिसुखबोधित बोध । सारासारविचार विबोधं ।१४।
बन्दे मन्दरमस्तकपीठे । कृतजन्माभिषव नुतपीठे ॥
दर्शनं तव लब्धिविकरण, केवलबोधामृत भवतरण ॥१५॥
अनणुगुणनिबद्धामिर्हतां माघनदि–
व्रतिरचितसुवर्णानेक पुष्पव्रजानां ॥
स भवति जयमाला यो विधत्ते स्वकण्ठे–
प्रियपतिरमर श्री मोक्षलक्ष्मीवधूनाम् ॥१६॥
ॐ ह्री अर्हन्त परमेष्ठिने जयमाला पूर्ण । महार्घ्य

अष्ट द्रव्यादि एकत्र जोडी । कर्म वन्धा च वन्धन तोडी ।।
हेमकीर्त्ति च भव भ्रम फेडि । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन२।।
पूजो २। अर्घं० ।

* अथ जयमाला प्रारभ्यते *

वन्दे तानमरप्रवेकमुकुटप्रोत्तारणप्रस्फुर-।
द्दामस्तोमविमिश्रिता पदनखाभीपूत्करारेजिरे ।।
येषा तीर्थकरेशिना सुरसरिद्वारप्रवाहोल्लुट-।
द्दिव्यद्देवनितम्बिनीस्तनगलत्काश्मीरपूरा इव ।।१।।

वृषभ त्रिभुवनपतिशतवन्द्यम् । मन्दरगिरिमिव धीरमनिंद्यम् ।।
वन्दे मनसिजगज मृगराज । राजिततनुमजित जिनराज ।।२।।
सम्भवदुज्ज्वलगुण महिमान । सम्भवजिनपति, म प्रतिमान ।।
अभिनदनमानन्दित लोक । विद्यालोकित लोकालोक ।।३।।
सुमतिं प्रशमितकुनयसमूह । निर्दलिताखिलकर्मसमूह ।।
वन्दे त पद्मप्रभदेव । देवासुरनर कृतपदसेवम् ।।४।।
सेवकमुनिजनमुरतरु पार्श्वं । प्रणमामि प्रथित च सुपार्श्वं ।।
त्रिभुवनजननयनोत्पलचन्द्र । चन्द्रप्रभमपवर्जिततन्द्रम् ।।५।।
सुविधिं विधुधवलोज्वलकीर्ति । त्रिभुवनजनपतिकीर्त्तिमूर्त्ति ।।
भूतलपतिनुतशीतलनाथ । ध्यानमहानलहुतरतिनाथ ।।६।।
स्पष्टानतचतुष्टयनिलय । श्रेयोजिनपतिमपगतविलय ।।
श्रीवसुपूज्यसुत नुतपाद । भव्यजन प्रियदिव्यनिनाद ।।७।।
कोमलकमलदलायतनेत्र । विमल केवलसस्यसुक्षेत्र ।।

श्रीनवदेवतास्तोत्रम्

॥ अर्हन्त ॥

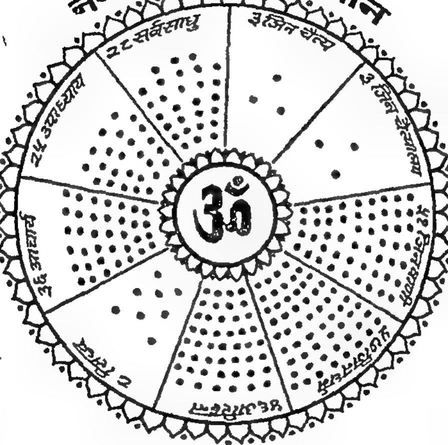
श्रीमन्तो जिनपा जगत्त्रयनुता दोपैर्विमुक्तात्मका
लोकालोकविलोकनैकचतुराश्शुद्धा. पर निर्मला :
दिव्यानन्तचतुष्टयादिकयुता सत्यस्वरूपात्मका
प्राप्ता यैर्भुवि प्रातिहार्यविभवा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥१॥

॥ सिद्धाः ॥

श्रीमन्तो नृसुरासुरेन्द्रमहिता लोकाग्रसवासिन
नित्य सर्वसुखाकरा भयहरा विश्वेपु कामप्रदा ।
कर्मातीतविशुद्धभावसहिता ज्योति. स्वरूपात्मका.
श्रीसिद्धा जननार्त्तिमृत्युरहिता कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।२।

॥ आचार्याः ॥

पञ्चाचारपराण. सुविमलाश्चारित्रसद्योतका
अर्हद्रूपधाराश्च निस्पृहपरा कामादिदोषोज्झिता ।
बाह्याभ्यन्तरसङ्गमोहरहिता शुद्धात्मसराधका
आचार्या नरदेवपूजितपदा. कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥३॥


नवदेव मण्डल विधान
२८ सर्वसाधु
३ जिन चैत्य
३ जिन चैत्यालय
२५ उपाध्याय
३६ आचार्य
ॐ

याथातथ्यमजेयमाप्तकथित कोटिप्रभाभासित
श्रीमज्जैनमुशासन हितकर कुर्यात्सदा मंगलम् ।७।

॥ जिनप्रतिमाः ॥

सौम्या सर्वविकारभावरहिता· शान्तिस्वरूपात्मका
शुद्धध्यानमया प्रशान्तवन्दना: श्रीप्रातिहार्यान्विता: ।
स्वात्मानन्दविकाशकश्च मुभगाश्चैतन्यभावावहा.
पन्चाना परमेष्ठिना हि कृतयः कुर्वन्तु ते मगलम् ।८।

॥ जिनालयाः ॥

घण्टातोरणदामधूपघटकै राजन्त मन्मंगलै
स्त्रोत्रैश्चित्तहरैर्महोत्सवगतैर्वादित्रसगीतकै ।
पूजारम्भमहाभिषेकयजनै पुण्यात्करै सत्क्रियै
श्रीचैत्यायतनानि तानि कृतिना कुर्वन्तु तेमगलम् ॥६॥

॥ निखिलनवदेवता ॥

इत्थ मगलदायका जिनवरा सिद्धाश्च सूर्यादय.
पूज्यास्ता नवदेवता अघहरास्तीर्थोत्तमास्तारका. ।
चारित्रोज्वलता विशुद्धशमता बोधि समाधि तथा
श्रीजैनेन्द्र 'सुधर्म' मात्मसुखद कुर्वन्तु तेमगलम् ॥१०।

॥ उपाध्यायाः ॥

वेदाङ्गं निखिलागम शुभतरं पूर्णं पुराण सदा ।
सूक्ष्मासूक्ष्मसमस्ततत्वकथक श्रीद्वादशाङ्ग शुभम् ।
स्वात्मज्ञानविवृद्धय गतमला येऽध्यापयन्तीश्वरा
निर्द्वन्द्वा वरपाठरा सुविमला कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।४।

॥ साधव ॥

त्यक्ताशा भवभोगपुत्रतनुजा मोह पर दुस्त्यज
नि सगा करुणालयाश्च विरता दैगम्बरा धीघना
शुद्धाचाररता निजात्मरसिका ब्रह्मस्वरूपात्मका–
देवेन्द्रैरपि पूजिता सुमुनय कुर्वन्तु ते मगलम् ।५।

॥ जिनधर्मः ॥

जीवानामभयप्रद सुखकर ससारदुःखापह
सौख्य यो नितराददाति सकल दिव्य मनोवाञ्छितम् ।
तीर्थेशैरपि धारितो ह्यनुपम स्वर्मोक्षससाधक
धर्म मोऽत्र जिनोदितो हितकर कुर्यात्सदा मगलम् ।६।

॥ जिनागमम् ॥

स्याद्वादाङ्कधर त्रिनाकमहित देवं सदा सस्तुत
सन्देहादिविरोधभावरहित सर्वार्थसन्देशकम् ।

कर्पूर चन्दन है सुगन्धित केशरी घिस लाय है ।
ससार का दुख मेटने को चरण में चर्चाय है ॥
पूज्य है नव देव जगमे जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल से ॥२॥
ॐ ह्री श्री नव देव समूहभ्य ससारतांप विनाशनाय चन्दनं निर्षपामीति स्वाहा ॥२॥

चन्द्र सम उज्ज्वल अखण्डित अक्षत्तो को लीजिए ।
अक्षय निधि के हेतु जिनवर पु ज पद मे कीजिए ॥
पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल से ॥
ॐ ह्री श्री नवदेव समुहभ्योऽक्षय पद प्राप्तये
अक्षतान निर्वर्णामीति स्वाहा ॥३॥

संसार मे भटका वहुत ही ब्रह्मचारी ना बना ।
उस काम दुष्ट विनाशने को पुष्प छोड़ू हूँ घाना ।
पूज्य है नवदेव जग मे जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल से ॥
ॐ ह्री श्री नव देव समूहभ्य काम वाणं विनाशनाय
पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

दौड़ता मै इत उते ही भूख जोरो से लगी ।
पकवान नाना भांति छोड़े क्षुधा डाकिन ही भगी ॥

समुच्चय नव देवता पूजा

❀ स्थापना ❀

गीता–छन्द

मैं पच परमेष्ठि यजु अरु चैत्य चैत्यालय सदा ।
अरु सप्त भगी नमु वाणी, धम जिनवर ने कहा ।।
नव देव हैं ये जगत माही स्थापना हम कर रहे ।
आव्हान हो धरकर–हृदय मे पाप पुजो को दहे ।।
ॐ ह्रीं श्री पच परमेष्ठी जिन चैत्य चत्यालय जिनवाणी स्याद्वाद जिन धर्मेति नव देव समुह अत्रावतरावतर सवौषट आव्हान ।

ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन
ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव
वषट् सन्निधिकरण ।।

अथाष्टक–गीता

भर स्वण भारी मिष्ट जल की भक्ति दिल मे जोडिए ।
त्रय रोग नाशन हेतु धारा तीन जिन पद छोडिए ।।
पूज्य है नव देव जग म जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्ति पूवक हो पृथक भव जाल से ।।१।।
ॐ ह्रीं श्री नव देव समूह भ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

फल निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

नीर चन्दन अक्षतादि द्रव्य मनहर कीजिये ।

पूज हो धर भक्ति उरमे मोक्ष पद फिर लीजिए ।

पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल से

पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल से ॥

ॐ ह्री नव देव समूहभ्यो ऽनर्घ्य पद प्राप्तये

अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥

ॐ ह्री श्री क्ली ऐ अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नम स्वाहा ॥

१०८ । ५४ । २७ । ६ वार जाप पुष्प या लोग से करे ।

* अथ जयमालिका *

दोहा—पूज्य श्री नवदेव है जो अनुपम सुखदाय ।

कहूँ महा जयमालिका कर्म हरे दुख दाय ॥

छन्द नाराच

देव जिन राज को नमत्त सुर गुरु सदा ।

पूजते भक्ति नही रंच दुख हो कदा ॥

देव अरहन्त का शर्ण हम ले लिया ।

मै नमु त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ पालिया ॥

गर्भ छह मास पूर्व रत्न वृष्टि करत है ।

होत जन्म देव गण मेरु ले धरत है ।

देव अरहन्त का शर्ण हम ले लिया ।

मै नमु त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ पालिया ॥

पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्ति पूवक हो पृथक भव जाल से ।।
ॐ ह्रीं श्री नव देव समूहभ्य क्षुधा रोग विनाशनाय
नैवेद्य निवपामीति स्वाहा ।।५।।
मोह की फासी चढे हम ज्ञान शुद्ध न पाइया ।
हे प्रभो घृत दीप छोड़ु मोह तम नश जाइया ।।
पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्तिपूवक हो पृथक भव जाल से ।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहभ्यो मोहान्धकार विनाश
नाय दीप निवपामीति स्वाहा ।।६।।
इन कम रिपुने ह प्रभो जी दाबदी मम आत्मा ।
लेकर सुगधित धूप खेउ होय रिपु का खात्मा ।।
पूज्य ह नव देव जग मे जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्ति पूवक हो पृथक भव जाल से ।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहभ्योऽष्टकम विनाशनाय
धूप निर्वपामीति स्वाहा ।।
सेव नारगी सुदाडिम श्री फलादिक फल खरे ।
लेकर चढाऊ पद कमल मे शीघ्र शिवरमणीवरे ।।
पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्ति पूवक हो पृथक भव जाल से ।।
ॐ ह्री श्री नवदेव समूहभ्यो मोक्षफल प्राप्तये

सुमन चतुर्दश करे महा अतिशय लहा ॥देव॥१३

अष्ट प्रातिहार्य सव महतता को करे ।
अनन्त दर्श ज्ञान व्रत्त वीर्यता को वरे ॥१४॥

दोष अष्टादशा होत नही देव ही ।
वाणि सप्त भगी को प्रकाशत्तें एव ही ॥देव॥१५

कर्म महा त्रेशठी प्रकृति नाश कीनिहो ।
ध्यान धार आत्म नासाग्र दृष्टि दीनिहो ॥देव॥१६

वीतरागी आप हो सर्वज्ञता को लहे ।
भूत भावि सम्प्रति पर्याय दृष्ट हो रहे ॥देव॥१७

जीव तीन लोक को हितोपदेश देत हो ।
हो हितोपदेशी आप वन्धु विनहेतु हो ॥देव॥१८

जीवादि सप्त तत्व नव पदार्थ को भासिया ।
होत गुणथान अरु मार्गणा देशिया ॥देव॥१९

समास प्ररूपणा गत्यादि भी हे सही ।
स्याद्वाद तत्व आप अन्यथा है नही ॥देव॥२०

नाश अष्ट कर्म को अष्ट गुण पालिया ।
निजात्म सुक्ख मग्न हो कर्म मैल धोलिया ॥

देव महा सिद्ध का शर्ण हम लेलिया ।
मै नमूं त्रिकाल आप मोक्ष सुख पालिया ॥२१॥

ज्ञान है शरीरि आप सिद्ध लोक राज ते ।
हो अनन्त सुक्खवान निकल ही विराजते ॥

पचमो क्षीर सागर मु जल लाइया ।
करत अभिषेक इन्द्र देव हर्षाइया ।।देव।।३
अघ घघ घघ घघ, अघ घघ जोर से ।
घघ घघ घघ घघ, ढुलत कलश शोर से ।।देव।।६
जय जय जय जय जयति जय जय जय ।
करत यहा दव जय जय जय जय ।।देव।।५
धृगतत धृगनत होत मिरदग ही ।
बग्त मजीरिया किम किं तरग ही ।।देव।।६
बजत सारगी मु, सन सन सन सन ।
नचत शश्रराज ल, धग्त पग छम छम ।।देव।।७
इस भाति उत्सव करे देव गण आय घर ।
लहत सम्यक्त्व को भक्ति उर धार कर ।।देव।।८
मुहोत वैराग्य जिस काल जिन आपको ।
आय लौकान्ति देव करत अनुमोद को ।।देव।।६
लोच पच मुष्ठि से आपने कर लिया ।
त्याग सब सग को साधु व्रत धर लिया ।।देव।।१०
उग्र उग्र तप कर साधि निज आत्मा ।
वैय ध्यान खड्ग से कर्म किये खातमा ।।देव।।११
देव अरहन्त ने घाति कर्म नाशिया ।
हा सुगद गुण ज्ञान आपने पालिया ।।देव।।१२
जन्म के होत दश ज्ञान के दश कहा ।

मैं नमूं त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ।।२८।।
धन्य धन्य साधु अष्ट बीस गुण धारते ।
होत ना अधीर कभी मोह कर्म टारते ।
देव महा साधु की शर्ण हम ने लिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ।।२६।।
जिन देव महा बिम्बभी शोभते अपार ही ।
स्वर्ण रत्न उपल के होत निर्विकार ही ।।
देव जिन बिम्ब की शर्ण हम ने लिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप दर्श सुख पा लिया ।।३०।।
बिम्ब तीन लोक में अनादि आदि जानिए ।
है अगण्य जो लहे सदैव सिर नाइए ।।
देव जिन बिम्ब की शर्ण हम ले लिया ।
मै नमूं त्रिकाल आप दर्श सुख पा लिया ।।३१।।
भवन त्रैलोक्य मे ही असख्या लहे ।
है अनादि आदि महादेव गणधर कहै ।।
देव जिन जिनालया हर्ष कर पूजिया ।
मै नमूं त्रिकाल आप दर्श सुख पालिया ।।३२।।
हेम रत्न उपलमय शोभते महान ही ।
नमन करे बार बार होत कल्याण ही ।
देव जिन जिनालया हर्ष कर पूजिया ।
मै नमूं त्रिकाल आप दर्श सुख पालिया ।।३३।।

देव महा सिद्ध का शर्ण हम लेलिया ।
मैं नमु त्रिकाल आप मोक्ष सुख पा लिया ॥२२॥
पञ्च महाव्रत पञ्च समीतिको आदरे ।
धरत वश अक्ष आचार पञ्च आचरे ॥
देव महा सूरि की शर्ण हम लेलिया ।
मैं नमू त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ॥२३॥
पालते षडावश्यक शेष गुण को धरे ।
पाल तीन गुप्ति सूरि मनमे कष्ट ना करे ॥
देव महा सूरि की शर्ण हम ले लिया ।
मैं नमू त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ॥२४॥
पालते आचार आप शिष्य को पलावते ।
होय छत्तीस गुण सूरि पद पावते ॥
देव महासूरि की शर्ण हम ले लिया ।
मैं नमू त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ॥२५॥
हो उपाध्याय मुनि तपो व्रत आचरे ।
धरत महा सकल व्रत्त रोष तोष ना करे ॥
देव उपाध्याय की शर्ण हम ले लिया ।
मैं नमू त्रिकाल आप मोक्ष पन्थको लिया ॥२६॥
अग एकादश पूर्व चतुर्दश कहे ।
होत ज्ञान आपको नाम पाठक लहे ॥
देव उपाध्याय की शर्ण हम लेलिया ।

है अगाध धर्म तत्व होत ना बखान हो ॥

धर्म देव पूजते अनन्त सुख पालिया ।

मैं नमू त्रिकाल आप जन्म सफल कर लिया ॥३९॥

होत नव देव ये ग्रन्थ मे गाइया ।

कहत "सूर्य मल्ल" जिन चरण सिर नाइया ॥

नमत नव देव को हर्ष उर धारिया ।

करत पूज शुद्ध मन पाप सब जारिया ॥४०॥

घत्ता-छन्द

जय जय नव देव, कर्म नशेवं ।

सुरकृत सेव पुण्य करम ॥

जय पूज रचावे गुण गण गावे ।

पाप मिटावे मुक्ति वरम ॥४१॥

ॐ ह्रीं अरहन्तादि नव देव समुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गीता

नव देव है ये वीतरागी नाशते भव भय सदा ।

पूजहूँ वसु द्रव्य लेकर आदि व्याधि न हो कदा ॥

पुत्र मित्ररु पौत्र वाढ़ै स्वर्ग सम्पत्ति आय है ।

नष्ट होवे कर्म सारे मोक्ष नारी पाय है ॥४२॥

इत्याशीर्वाद

निकसि जिन वदन ते भव्य महाभाग मे ।
झेल गणधर महा प्रकाशि अनुराग से ॥
मात जिन वाणि आप अगण्य जीव तारिया ।
मैं नमू त्रिकाल आप ज्ञान शुद्ध धारिया ॥३४॥
होत सप्त भग मय देवि निर्दोषिका ।
आदि अन्त एक हो होत नही दोपिका ॥
मात जिन वाणि आप अगण्य जीव तारिया ।
मैं नमू त्रिकाल आप ज्ञान शुद्ध धारिया ॥३५॥
पूज्य हो मात हम करत श्रद्धान को ।
पाप पुण्य नाश कर लहत शिव थान को ॥
मात जिनवाणि आप अगण्य जीव तारिया ।
मैं नमू त्रिकाल आप ज्ञान शुद्ध धारिया ॥३६॥
देव अरहन्त ने भासिया धर्म को ।
स्याद्वाद है वह नष्ट कर कर्म को ॥
धर्म देव पूजते अनन्त सुख पालिया ।
मैं नमू त्रिकाल आप जन्म सफल कर लिया ॥३७॥
क्षमादि दश धर्म अरु रत्नत्रय जानिए ।
है अहिंसा आदि धर्म भव्य पर मानिए ॥
धर्म देव पूजते अनन्त सुख पालिया ।
मैं नमू त्रिकाल आप जन्म सफल कर लियो ॥३८॥
धरत भव्य धर्म को होत कल्याण ही ।

मलयागीरी गोशीर सुगन्धित केशर सघ घिसलाऊ ।
लेप करू अरहन्त प्रभुपद समृति ताप मिटाऊँ ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भव मांही सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ह्री षट् चत्वारिशद् गुणोपेत श्री अरहन्त परमेप्टिभ्य ससार ताप विनाश नाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।
अनियारे शुभ अक्षत ताजे चन्द्र किरण सम लाऊ ।
पु ज करू जिन राज चरण ढिग अक्षय निधि को पाऊ ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भव माहि सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ही षट् चत्वारिशद् गुणोपेत्त श्री अरहन्त परमेष्ठि भ्योऽक्षयपद प्राप्तयै अक्षतान् निर्धपामीति स्वाहा ।।
भांति भाति के पुष्प मुगन्धित डाली भर कर लाया ।
छोड़े प्रभु के उत्तम पदमे मदन वाण विनिशाया ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भव माही सहाई यात्ते भव भय भाजे ।।
ॐ ह्री षट् चत्वारिशद् गुणोपेत श्री अरहन्त परस्मेष्ठि-भ्य काम बाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।
घेवर वावर लाडु पेडा बहु विधि व्यंजन ताजे ।
थाल सजाकर भेट चरण ढिग रोग क्षुधा सब भाजे ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।

श्री अरहन्त पूजन

जोगीराशा–स्थापना

नाश घातिया कर्म आपने, पद पाया अरहन्ता ।
बैठ समवसृत दिव्य ध्वनि से तारे भव्य अनन्ता ।
ऐसे उन त्रैलोक्य प्रभु को मन वच काय नियोगा ।
आव्हानन् हृदि स्थापन करके नाश करू भव रोगा ।।
ॐ ह्रीपद् चत्वारिंश गुणोयेत अरहन्त परमेष्ठिन्
अत्रावतराव तर सवौषट आव्हान ।
ॐ ह्रीं पट् चत्वारिंशशद्गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिन्
अत्र तिष्ट तिष्ट ठ ठ स्थापनम्
ॐ ह्रीं पट् चत्वारिंश शद्गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिन्
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि करण

अथाष्टक (जोगी राशा)

क्षीरोदधि को प्रासुक जलने मन हर्षित भरलाया ।
जन्म जरामृति दूर करन को श्री जिन चरण चढाया ।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे
होवे भव भव माहि सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ह्रीं श्री पट् चत्वारिंशद् गुणोपेत श्री अरहन्त परमेष्ठि ।
भ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति
स्वाहा ।।

तोय चन्दन अक्षत नीरज व्यजन दीपक जोवे ।
धूप महाफल अर्घ चढाऊं अविनाशी पद सोवे ।।
श्री अरहन्त सकल परमातय केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भय मांही सहाई याते भव भय भाजे ।।८।।
ॐ ह्री षट् चत्वारिशद् गुणोपेत श्री अरहन्त परमेष्ठितभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

❀ अथ प्रत्येक अर्घ ❀

(जन्म के १० अतिशय)

दौहे—जन्म तने जिनराज के अतिशय दश बतलाय ।
स्वेद रहित प्रभुजी सदा पूजू अर्घ चढाय ।।
ॐ ह्री पसेव रहित अतिशय सहित अरहन्त देवैभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

होत नदी मल मूत्र जिन, निर्मल तन सुखदाय ।
ये अतिशय अरहन्त के पूजो अर्घ चढाय ।।
ॐ ह्री मल मूत्र रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

समचतुरा सस्थान है घाट वाध नही होय ।
यह अतिशय तीजा कहा पूजो अर्घ संजोय ।।
ॐ ह्री समचतुर संस्थान अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽअर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

होवे भव भव माही सहाई याते भव भय भाजे ।।५।।
ॐ ह्री पद् चत्वारिंशद् गुणोपत श्री अरहन्त परमेष्ठिभ्यो
क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेध निर्विपामीति स्वाहा ।।
गोघृत अरु कपु र रतन को दीपक सुन्दर जोऊ ।
आरती करु जिन राज प्रभु की मोह तिमिर को खोऊ ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भव माही सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ह्री पद् चत्वारिंशद् गुणोपत श्री अरहन्त परमेष्ठिभ्यो
मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीती स्वाहा ।।६।।
दश विधि द्रव्य की धूप बनाई, अति सुगन्धित भाई ।
अष्ट कम के नाशन कारण अग्नि माही जलाई ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।।६।।
होवे भव भव माहि सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ह्री पद् चत्वारिंशद् गुणोयेत श्री अरहन्त परमेष्ठिभ्यो
अष्ट कम दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।
मोच चोच अति उत्तम श्रीफल दाडिम अमृत लावें ।
छोडे श्री जिन राज चरण मे मोक्ष महाफल पावें ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भव माहि सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ही पद् चत्वारिंशद् गुणोयेत श्री अरहन्त परमेष्ठिभ्यो
मोक्ष फल प्राप्तये फल निर्विपामीति स्वाहा ।

नीरादिक से पूजि हो कर्म रिपु नश जाय ।।
ॐ ह्ली मधुर वचनाति सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

वल जनन्त प्रभु का कहा अन्य पुरुप नही होय ।
भाव भक्ति उर धार के पूजू अर्घ सजोय ।।१०।।
ॐ ह्ली अनन्त वलातिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१०।।

अतिशय श्री अरहन्त के जन्म तने दश जान ।
पूजू अर्घ्यं सजोय के पाऊं पद निर्वाण ।।
ॐ ह्ली दश अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो पूर्णार्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।११।।

अथ केवल ज्ञान के दश अतिशय (अडिल)

जहा जिनेश्वर वैठ समवसृत हाल जी ।
वह योजन शत होय नही दुष्कालजी ।।
एसो अतिशय होय महा जिन राय के ।
मन वच तन से पूजू प्रभु सिर नाय के ।।११।।
ॐ ह्ली शत योजन दुर्भिक्ष निवारक अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्यो अर्घ निर्विपामीति स्वाहा ।।

होय गमन आकाश प्रभु का जान जी ।
देव भक्ति मे आय करे गुण गान जी ।।

वज्र वृषभ नाराच हे सहनन उत्तम धाधार ।
यह अनिशय प्रभु के कहा पूजु अर्घ उतार ।।४।।
ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच सहनन अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।
सुगंभित तन सुखदाय है यह अतिशय वतलाय
अध सजोऊ थाल भर पूजु मन वच काय ।।
ॐ ह्रीं सुगन्धित शरीर अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽअर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।
रप महा सुन्दर घना काम देव शर्माय ।
उत्तम अध बनाय कर पूजू रूप वढाय ।।
ॐ ह्रीं महारुपातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योअध निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।
आठ अधिक पुन इक सहस लक्षण गुण की खान ।
पूजो अध सजोय के होय कम की हान ।।७।।
ॐ ह्रीं शुभ लक्षण अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।
श्वेत वर्ण श्रोणित महा तन मे प्रभु के जान ।
यह अतिशय अनुपम सही पूजू रुचिमनठान ।
ॐ ह्रीं श्वेत वर्ण श्रोणितातिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो-अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।
मधुर मधुर वाणी कह जन मोहित हो जाय ।

सब विद्या के ईश्वर हो जिन रायजी ।
ध्यावे प्रभु को कर्म नशे दुख दायजी ।।एसो।।
ॐ ह्री सकल विद्या धिपत्यातिशय सहित अरहन्त देवे-
भ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१७।।
पुद्गल पु ज सु एक होय यह तन बना ।
छाया नही प्रभु होय आप अतिशय घना ।।
ॐ ह्री छाया रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१८।।
बढे नही नख केश कभी किसी काल मे ।
नाश घातिया कर्म रहे निज चाल मे ।।एसो।।
ॐ ह्रीं नख केश वृद्धि रहित अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१९।।
टमकत नाही पलक बन्द नाही खुले ।
नासा दृष्टि लगाय कर्म सब दल मले ।।
ॐ ह्री नेत्र भो चपलता रहित अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२०।।
दौहा—ये अतिशय केवल तने हे आगम परमाण ।
पूजू अर्घ्य सजोय के उपजे केवल ज्ञान ।।
ॐ ह्री केवल ज्ञान दश अतिशय रहित अरहन्त देवेभ्यो
पूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

ऐसी अतिशय होय महा जिन राय के ।
मन वच तन से पूजू प्रभु सिर नाय के ।।

ॐ ह्रीं आकाश गमनातिशय सहित अरहन्त देवभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१२।।

जहा विराजे ईशप्रभु भवि हितकार जी ।
मार सके तिस ठौर नही किम बार जी ।।एसो।।

ॐ ह्रीं अदया भावातिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१३।।

होय नही उपसर्ग प्रभुजी आपको ।
देव मनुष्य पशु करे नही सन्ताप को ।।एसो।।

ॐ ह्रीं उपसर्ग रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१४।।

क्षुधो रोग से पीडित सब जन देखिया ।
जीत क्षुधा आहार प्रभु नही लेखिया ।।एसो।।

ॐ ह्रीं कवला हार रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो
अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१५।।

तिष्ट समवसृत बीच प्रभु जी राजते ।
मुख दीखे चहु ओर महा सुख काजते ।।एसो।।

ॐ ह्रीं चतुर मुखविराजमाना अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१६।।

सर्वानन्द होय जिनेन्द्र वन्दे सुरपति आदि खगेन्द्र ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री सर्वानन्द कारक अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥२६॥

कंटक रहित भूमि शुभजान जहं विराजे हो भगवान ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री कटक रहितातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥२७॥

नभ मे होता जय जय कार सब जीवो को सुखद अपार ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री आकाशे जय जय कार शब्दातिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥२८॥

गन्धोदक की वृष्टि सुखार करत देव सुख लहत अपार ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री गन्धोदक वृष्टयातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥२९॥

पदतल प्रभु के कमल रचाय महिमा है जिनवर सुखदाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवो कृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री पदतल कमल रचनातिशय अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥३०॥

अथ देवकृत १४ अतिशय (चौपाई)

अर्द्ध मागधी भाषा जान, सब जीवो को सुखद बखान ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्रीं अर्धमागधी भाषा अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२१।।

सब जीवो में मैत्री होय पूजू प्रभु को अघ मजोय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्रीं सब जीव मैत्री भाव अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२२।।

षट् ऋतु के फल फूले जोय जह जिनराज विराजे सोय ।
यह अतिशय जिन राज कहाय देवाकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्रीं षट् ऋतु फल पुष्पातिशयसहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२३।।

दर्पण सम भूमि चमकाय धरत चरण जह आप सुहाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवाकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्रीं दर्पण सम भूमि अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२४।।

सुरभित मन्द पवन हितदाय सब जीवों के मन को भाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्रीं सुरभित पवनातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२५।।

अथाष्ट प्रातिहार्य (जोगी राशा)

वृक्ष अशोक महा सुखदाई दीखे सुन्दर भाई ।
शोक हरे सब जीवो का प्रभु यह महिमा अधिकाई ।।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ।।
ॐ ह्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३५।।

देव भक्ति में आकर प्रभु की पुष्पो को वर्षावे ।
स्तुति पढे, करे पद अर्चन निर्मल गुण को गावे ।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पुजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ।।
ॐ ह्री पुष्प वृक्ष वृष्टि प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३६।।

दिव्य ध्वनि शुभ वर्षे जिनवर सब जीवो सुखदाई ।
पाप विनाशे शुभ पथ भासे पुण्य बढे अधिकाई ।।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे, मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ।।
ॐ ह्री प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३७।।

पर्वत से ज्यो जल की धारा पडत लगे वह प्यारी ।
त्यो प्रभ चवर ढरे चत षष्टी मूमन करे जयकारी ।।

अति निमल आकाश लखाय सब जीवो का मन हर्षाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुति गाय ।
ॐ ह्रीं गगन निर्मल अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३१।।

धूम रहित सब दिश शोभत, जहा विराजे श्री भगवन्त ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्रीं सव दिशा निर्मल अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो
ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३२।।

धम चक्र प्रभु आगे सोय महिमा जिनवर कहत न होय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्रीं धम चक्रअतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३३।।

मगल द्रव्य अष्ट शुभ लेय, देव भक्ति वश करत स्वमेव ।
यह अतिशय जिनराज कहाय, देवोकृत है जिनश्रुत गाय ।
ॐ ह्रीं देवकृत अष्ट मगल द्रव्यअतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३४।।

दोहा—चवदह अतिशय करत ह सुमन भक्ती मे आन ।
पूजे अर्घ्यं चढाय के पावे पद निर्वाण ।।३५।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो पूर्णार्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२५।।

ॐ ह्री देव दुन्दभि प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥४१॥

चन्द्रकान्ति सम छत्र तीन शुभ, रत्न जडित सुखकारी ।
रत्नमालिका लटके उसमैं तीन जगत दुखहारी ॥
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ॥

ॐ ह्री छत्रत्रय प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥४२॥

दोहे

तरु अशोक शुभ पीठ है भामण्डल सुखदाय ।
चवर ढुरे चोसठ विमल पुष्प वृष्टि वर्षाय ॥
दिव्य ध्वनि नित खिरत है वजत दुन्दुभि सोय ।
तीन छत्र सिर सोहते पूजे मन शुध होय ॥

ॐ ह्री अष्ट प्रातिहार्य विभूति सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥४१॥

अथ अनन्त चतुष्टय अर्ध (सुन्दरी छन्द)

दर्शगुण भी अनन्त लखावही ध्याय जिनवर शिव सुखपावही ।
सो यजू सर्वज्ञ जिनेश को अर्ध दे पद पाऊ मोक्ष को ॥

ॐ ह्री अनन्त दर्शन सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥४३॥

प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ॥
ॐ ह्रीं चतुष्पष्टी चामर विज्यमान प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥३८॥

रत्न जडित सिंहासन सुन्दर लागे वह अति प्यारा ।
अधर विराजे उस पर जिनवर देव करे जयकारा ॥
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ॥
ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥३९॥

कोटी सूर्य लज्जित हो जावे तनु भामण्डल भारी ।
तापे सप्त भवो कि बाते दर्शत है सुखकारी ॥
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ॥
ॐ ह्रीं प्रभामण्डल प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४०॥

देव बजावे नाना बाजे दुन्दुभि शब्द बढ़ावे ।
सुमन करे गुण गान भक्ति मे मन मे बहु हर्षावे ॥
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मनको अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ॥

ये है सु अतिशय जगत गुरु के प्रीति मनमे लाइया ॥
नीरादि वसु विधि द्रव्य ले जिन देव पदमे चढाइया ।

ॐ ह्री षट् चत्वारिंशद्गुणोपेत अरहन्त देवेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त परमेष्ठि देवेभ्यो नम स्वाहा ॥

यहां ९ वार पुष्पो से जाप करें ।

❀ अथ जयमाला ❀

दोहा—छह चालीस गुण को धरे, सकल प्रभु कहलाय ।
गाऊ अब जयमालिका दुरित महा मिटि जाय ॥

त्रोटक

नही दोप अठारह है तुममे ।
अरहन्त देव हम कहत तुम्हे ॥
जय ऊर्ध्व अधो अर मध्य तने ।
सब जीव नमे तव भक्ति सने ॥१॥
षट् मास पूर्व प्रभु गर्भ तने ।
अरु गर्भ रहे नव मास भने ।
जय रत्नसु वृष्टि कुवेर करे ।
जय नृप आगण मे मोद भरे ॥२॥
जय अष्ट कुमारी सु मात सेय ।
हर विधि से उनको मोद देय ॥

होय ज्ञान अनन्त सु मानिए, तीन लोक चराचर जानिए ।
सो यजु सवज्ञ जिनेशको अर्ध दे पद पाऊ मोक्ष को ॥
ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥८४॥
सुख अनन्ता नन्त सु पाइया, ध्यान बल जिन कर्म खिपाइया ।
सो यजू सवज्ञ जिनेश को अर्ध दे पद पाऊ मोक्ष को ॥
ॐ ह्रीं अनन्त सुख सहित अरन्त देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥८५॥
अनन्त वीयत्व प्रकाशिया, अन्तराय सुभट अरिनाशिया ।
सो यजू सवज्ञ जिनेश को अर्ध दे पद पाऊ मोक्ष को ॥
ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।
गीता—दृग अनन्त ज्ञान अरु सुख वीय गणधर ने कहे ।
होत हैं सर्वज्ञ प्रभु के मोक्ष नारी वे लहैं ॥
पूज हू उर भक्ति धरकर पाप मेरे नाश हो ।
अन्त शिव नारी वरु मैं ज्ञान भानु प्रकाश हो ॥
ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय सहित अरहन्त देवेभ्यो पूर्णार्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥८६॥
जन्म दश दश ज्ञान केवल देव कृत चौदह भने ।
वसु प्रातिहार्य सु है चतुष्टय गुण छियालिस शुभ बने ।

सिर कलश ढोरा आनन्द पाय ॥८॥
शची किया नेत्र अंजन सु आय ।
प्रभु वस्त्रा भूषण दिये पिनाय ॥
जय द्वितीय मयंक समान प्रभु ।
बढ चले आप जय ज्ञान विभु ॥९॥
जय अथिर लखा संसार खार ।
वैराग्य हुआ तब सुखद सार ॥
लौकान्तिक आये स्वर्ग ब्रह्म ।
सबोध पधारे जिन सु ब्रह्म ॥१०॥
जय बैठ शिविका गये अरण्य ।
कचलोच किये प्रभु धन्य धन्य ॥
जय मनपर्यय प्रभु प्रगट ज्ञान ।
हो तपकर धर तुम शुक्ल ध्यान ॥११॥
जय घाति कर्म चक चूर किया ।
जय केवल ज्ञान सु आप लिया ॥
जय समवसरण उपदेश देय ।
भवि जीवो को भव उद्धरेय ॥१२॥
जय जन्म तने अतिशय दश है ।
जय केवल ज्ञान लहे दश है ॥
जय देव चतुर्दश हर्ष करे ।
वसु प्राति हार्य सुख सज्ज खरे ॥१३॥

जय जन्म हुआ प्रभु आप ज्ञान ।
घर घर मे मगल गाय गान ।।३।।
जय तीन लोक मे हर्ष छाय ।
जय नक जीव समता लहाय ।।
यह अतिशय प्रभु जी आप जान ।
नही होय अन्य प्राणी महान ।।४।।
जय इन्द्र मोद धर बैठ नाग ।
ऐरावत ले परिवार भाग ।।
इन्द्राणी जाय प्रसूति थान ।
प्रभु मेरु गोद मे हुए ठान ।।५।।
निज पति को दे सम सूय बाल ।
वह निरख कर प्रभु है कमाल ।।
जय तृप्त हुआ नही दश पाय ।
हज्जार नयन सु कर बनाय ।।६।।
कर ताडल नृत्य सु भक्ति धार ।
हर्ष शचीन्द्र मन मे अपार ।।
पग धरे छमा छम ठुमुक चाल ।
जय बजे घू घरू के गु जार ।।७।।
फिर चढ़ गज मेरु सिखर जाय ।
अरु क्षीरोदधिका नीर लाय ।।
तब न्हवन किया त्रैलोक्य राय ।

जय शुद्ध चेतना करत जाप ॥
जय परमदेव परमातम हो।
जय ध्याता ध्यान गुणातम हो ॥१९॥
जय हरि हर ब्रह्मा आप कहै।
जय शकर विष्णु नाम लहै।
नव केवल लब्धि आप लसे।
जय ध्यान महा शुभ आप वसे ॥२०॥
मै भ्रमण किया प्रभु भूल आप।
फल पाया वहु जिस पुण्य पाप ॥
अब हरो हमारी पीर नाथ।
याते पकड़े प्रभु आप साथ ॥२१॥
जय स्याद्वाद शासन अनूप।
नही वाधित हो मिथ्या स्वरूप ॥
सब विद्या के प्रभु आप ईश।
जय पाप हरो मम हे जगीश ॥२२॥
तब नाम लेत सब विघ्न जाय।
जय भूत प्रेत सब ही नशाय ॥
ससार लखे यह अथिर रूप।
दुख पाये जिससे त्रिजग भूप ॥२३॥
हो परम देव गुण गण अपार।
हम तुच्छ बुद्धि नहि लहत पार ॥

जय नन्त चतुष्टय आप गहै।
प्रभु गुण छियालिस नित्य रहै ॥
जय लक्षण सहसरु अष्ट शुद्ध।
हो लसे आप मे अति विशुद्ध ॥१४॥
जय मोक्ष मार्ग के नेता हो।
अरु कर्म शैल के भेत्ता हो।
जय भूत भविष्यत् वर्तमान।
पर्याय झलकति आप ज्ञान ॥१५॥
नहीं कवला हार सु आप लेय।
सब जान पदारथ नित्य हेय ॥
शिव रमणी के भर्तार आप।
जय कर्म काटन हो सुचाप ॥१६॥
जय सकल ज्ञेय के ज्ञाता हो।
पर निजानन्द के पाता हो ॥
हो देव मेरे हिए आन बसो।
तव ध्यान धरे हम कर्म नसो ॥१७॥
तव गुण चिन्ते हम बार बार।
जिससे टलती आपद अपार ॥
प्रभु आप जगत के भूषण हो।
अरु नाना रहित कुदूषण हो ॥१८॥
जय महिमा अगम अपार आप।

ॐ ह्री णमो सिद्धाणं श्री परमेष्टिन् अरावतरावतर ।
संवौपट इत्याव्हान् ।
ॐ ह्री णमो सिद्धाण श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्रतिष्ट तिष्ट
ठ ठ स्थापन ।
ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम
सन्निहितो भव भव वपट सन्निधिकरण ।

अथाष्टकं (त्रिभंगी)

गगा जल लाया धार चढाया अति हुलसाया सिद्ध महा ।
त्रय रोग नशावे भक्ति बढावे होवे सुक्ख अनन्त अहा ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मै गाऊ ध्याऊ कर्म नशाऊ शिव पद पाऊ हुलसन्ता ।।१।।
ॐ ह्री णमो सिद्धांण श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु
विनाशनाय जल निर्विपामीति स्वाहा ।।
शुभ केशर चन्दन दाह निकन्दन भव भय भंजन शुद्ध अहो ।
हूं चरण चढाया ताप नशाया सुख उपजाया नष्ट न हो ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मै गाऊं ध्याऊ कर्म नशाउ शिव पद पाउ हुलसन्ता ।।
ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिभ्य संसार ताप
विनाश नाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।
अक्षत अणियारे उज्जवल प्यारे धोय संमारे हम लावे ।
वहु पुंज चढावे तुम गुण गावे सुख अति पावे हर्षावे ।।

पद पकज मे हो नमस्कार।
जय "सूरज" को प्रभु तार तार ।।२४।।

घता

जय जय जयमाला परम रसाला गावे ध्यावें पाप हरे ।
नाशत भव ज्वाला गुण मणि माला पावे सुक्ख अनन्त खरे ।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशद् गुण सहित अरहन्त परमेष्टिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

अडिल

जो भवि पूजे महा जिनेश्वर राय जी ।
पाप ताप अरु विघ्न टरे दुख दाय जी ।।
पुत्र मित्र और सम्पत्ति हो अधिकाय जी ।
अनुक्रम से शिव नार वरे सुख दाय जी ।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

श्री सिद्ध पूजा (अडिल)

ऊर्ध्व लोक के अन्त वात मे जानिए ।
ज्ञान शरीरि कर्म रहित पहिचानिए ।।
अष्ट गुणो को धार निकल जिन आप ही ।
करु प्रभु आव्हान मिटे सन्ताप ही ।।

ॐ ह्री णमों सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार।
विनाश नाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

वहु धूप दशंगी है बहु चंगी वैसांदर मैं हम खेवे।
हम कर्म उडावे शिव सुख पावे जिन गुण गावे पद सेवे।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता॥
मै गाउ ध्याउ कर्म नशाउ शिवपदपाउ हुलसन्ता।

ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽष्ट कर्म विनाश
नाय धूपं निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥

नारिग सुपारी दाडिम प्यारी फल अति भारी थाल भरा।
जिन चरण चढाउ शिव पद पाउ शीस नवाउं सिद्धवरा॥
जय सिद्ध महन्ता शिव तियकन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता।
मै गाउं ध्याउ कर्म नशाउ शिवपदपाउं हुलसन्ता॥

ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्टिभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये
फल निर्विपामीति स्वाहा ॥८॥

ले द्रव्य समारा अष्ट प्रकारा हर्ष वढाकर ल्यावत है।
जिन चरण चढावे मंगल गावे सिद्ध महापद पावत है॥
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता।
मै गाउं ध्याउं कर्म नशाउं शिवपदपाउ हुलसन्ता॥

ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिभ्योऽनर्घ्य पद
प्राप्तेय अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥९॥

जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मैं गाऊं ध्याऊं कर्म नशाउं शिव पदपाउ हुलसन्ता ।।

ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्तये
अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

चम्पा मच कुन्दा अमल सुगन्धा भ्रमर अनन्दा थाल भरा ।
मैं फूल चढाऊ श्रेष्ट कहाउ काम नशाउ दुष्ट खरा ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मै गाउ ध्याउ कर्म नशाउ शिव पद पाउ हुलसन्ता ।।

ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिभ्य काम वाण विनाश
नाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

ले घेवर फेणी लाडु पेडा व्यजन से बहु थाल भरे ।
जिनपद मे चोडु दुई कर जोडु क्षुधा रोग तत्काल हरे ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मै गाऊ ध्याउ कर्म नशाउ शिवपदपाउ हुलसन्ता ।।

ॐ ह्री णमो सिद्धाण श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्य क्षुधा रोग
विनाश नाय नैवेध निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

हम घृत भर लावें मन हर्षावे चरण चढावे दीप महा ।
मोहान्ध नशावे तुम गुण गावें पावें सम्यग्ज्ञान अहा ।
जय सिद्ध महन्ता शिव तियकन्ता पूजैं सन्ता भगवन्ता ।।
मैं गाउ ध्याऊ कर्म नशाउ शिवपदपाउ हुलसन्ता ।।

लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुणसु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।।
ॐ ह्रीं अष्टाविंश मोहनी कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

संसार के सब जीव देखे चार आयु वसि भये ।
ध्यान भासुर कर्म जारे नार शिव प्रिय तुम भये ।।
लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुणसु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।।
ॐ ह्रीं चतु प्रकार आयु कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

ज्यो चितेरा चित्र खीचे नाम तद्वत जानिया ।
यह नाशकर जिन राज तुमने सुख सु अविचल ठानिया ।।
लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुणसु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।।
ॐ ह्रीं त्रय नवति नाम कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

गोत्र कर्म सु दोय विधि है नीच ऊच बखानिया ।
कर नाश रिपु यह है जिनेश्वर अगुरुलघु गुण जानिया ।।
लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुण सुवसु तुम पाइया ।।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (गीता)

ये पच ज्ञाना वर्णीघाति ज्ञान केवल माइया ।
लोक त्रय को प्रगट देखे, निज स्वरूप लखाइया ॥
लोकाग्र राजे निज सु, साजे, गुण सु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजें अति मोद मनसु वढाइया ॥
ॐ ह्रीं पच प्रकार ज्ञाना वर्णी कर्म विनाशक सिद्ध परमेष्ठि-भ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

है कर्म दूजा दर्शवर्णी दर्श, गुण सवढकलिया।
नष्ट कर नव प्रकृति तिस की दर्शगुण जिन पालिया।
लोकाग्रराजे निज सुसाजे गुणसु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजें अति मोद मनसु वढाइया ॥
ॐ ह्रीं नव प्रकार दर्शनावर्णी कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

है वेदनी इक कर्म तीजा, दु:ख सुख वह देत हैं।
नाश कीना सहज मे जिन, सुख अबाधसु लेत हैं ॥
लोकाग्र राजे निज सुसाजें गुणसु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजें अति मोद मनसु वढाइया ॥
ॐ ह्रीं द्वि प्रकार वेदनी कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध परमेष्ठिस्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

इक कर्म मोहनी दुष्ट है जो जगत जन सब वस किया।
नाश कीना ध्यान अग्नि पाप समकित मुख लिया॥

जय वीतराग हो परम शांत,
जय रोग रहित निर्भय सुकान्त ॥२॥
जय ऊर्ध्व लोक के अन्त जान,
जयवात वलय में राज मान ।
उत्पाद सुव्यय ध्रुव युक्त आप,
हम करते प्रभु तुम नित्याजाप ॥३॥
जय संसृति भंजन हो निसंग,
जय समता रस के आप गंग ।
जय वच कषाय विहीन आप,
जय नाश हुए सब कर्म पाप ॥४॥
जय ज्ञाना वर्णी प्रकृति पच,
तुम नाश करी नहीं रही रंच ।
जय पूर्ण ज्ञान प्रभु प्रकट होय,
ज्यो मेघ नशे रवि उदित होय ॥५॥
जय नाश दर्शना वर्ण आप,
नव प्रकृति नशीधर ध्यान चाप ।
जय दर्शन गुण पायो महान्,
ज्यो लोक अलोक प्रकाश मान ॥६॥
जय कर्म वेदनी हो विलीन,
सुख पाया अव्याबाध चीन ।
जय मोह राज से विजय पाय,
सम्यक्त्व महागुण तुम लसाय ॥७॥

ॐ ह्रीं द्वि प्रकार गोत्र कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥

अष्टमसु रिपु का नाश करके, जाय अष्टम भू वसे ।
वीर्यत्व शक्ति पाय करके आत्म निज मे तुम लसे ॥
लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुण सु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ॥

ॐ ह्रीं पच प्रकार-अन्तराय कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥८॥

दोहा–अष्ट कर्म को नष्ट कर, अष्ट महा गुण पाय ।
वसु विधि सुन्दर द्रव्य से, पूजे जिनवर आय ॥

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म विनाशक सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिदेवेभ्यो नम स्वाहा ॥
(यहा ९ बार पुष्पो से जाप्य करें ।)

• अथ जयमाला •

दोहा–उर्ध्व लोक मे सिद्ध जे राजे सुखद महान ।
सुख अनन्त को पारहे गावे हम गुण गान ॥१॥

पद्धडी

जय सिद्ध शिरोमणी जगतदेव,
त्रैलोक्य प्रभु हम नमत एव ।

घत्ता

जय सिद्ध महन्ता शिवतियकन्ता आतम रमन्ता ध्यावत हूं ।
जय कर्म विनाशी सुगुण प्रकाशी शुभ गुण राशी याजत हूँ ।।१३।।

ॐ ह्री णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।

सोरठा

पूजो भाव सुधार सिद्ध महा जिन राज को ।
ते उतरे भवपार राज करे शिव राय को ।।

(इत्याशीर्वाद)

श्री आचार्य परमेष्ठी पूजा (हरि गीता)

निर्ग्रन्थ सूरि पद विराजे, ध्याय आतम ध्यान को ।
गुण तीस छह पालत सदा ही कहत हित मित बानि को ।।
हम करत आव्हानन प्रभोजी मो हृदय में आइये ।
अष्ट विधि से पूजते हम कर्म अष्ट नशाइये ।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिशत् गुण सहित आचार्य परमेष्ठिन्
अत्रावतरावतर संवैष्टि आव्हान ।

ॐ ह्री षटत्रिशद् गुण सहित आचार्य परमेष्ठिन्
अत्र तिष्ट तिष्ट ठ. ठः स्थापन ।।

ॐ ह्री षटत्रिशद् गुण सहित आचार्य परमेष्ठिन्
अत्र मम सन्निहितो भव भव सन्निधिकरणं ।।

जय आयु कर्म को हनि विशाल,
जय अवगाहन गुणधर विशाल।
जय नाम कर्म से रहित होय,
सूक्षम गुण पायो विमल सोय ॥८॥
फिर गोत्र कर्म का कर विनाश,
ने अगुर लघु गुण तुम प्रकाश।
प्रभु अन्तराय का मूल नाश,
वीर्यत्व शक्ति पाई विकाश ॥९॥
जय अष्ट महागुण धरत आप,
शिव नारी संग करते मिलाप।
जहा एक सिद्ध राजे महान,
तामध्य अनन्तानन्त जान ॥१०॥
यह भूमि आठवी सुखद भास,
कहलाते सिद्धो का निवास।
जो ध्यान धरे उन सिद्ध राज,
पावे अविचल शुभ मुक्तराज ॥११॥
हम नमन करें उर भक्ति धार,
सूरजमल विनवे वारवार।
यह आश हमारी पूरपूर
प्रभु करें महारिपु धार चूर ॥१२॥

श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावे ।

हम उतरे भवदधि पार याते गुण गावें ।।

ॐ ह्रीं षटत्रिशद् गुणोपेत आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्य.
कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

ले व्यजन नाना भाति मनहर सुखदाई ।

तुम भेंट धरे तज आंट मनमे हर्षाई ।।

श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावे ।

हम उतरे भवदधिपार याते गुण गावे ।।

ॐ ह्रीं षटत्रिशद् गुणोपेत श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्य: क्षुधा
रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

घृत दीप मनोहर ल्याय जगमग होत अहा ।

हम करें आरती आय नाशे तिमिर महा ।।

श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावे ।

हम उतरे भवदधिपार याते गुण गावे ।।

ॐ ह्रीं षटत्रिंशद् गुणोपेत आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्यो
मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

बहु द्रव्य सुगन्धित सार ताकि धूप करी ।

खेवे वैश्वानर डार कर्म विनाश करी ।

श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावे ।।

हम उतरे भवदधिपार याते गुण गावें ।।

अथाष्टक–नन्दीश्वर पूजन (चाल)

शुचि निर्मल जल भृंगार भरकर मैं लायो ।
तुम चरणन दे हम धार जन्म मरण ढायो ।।
श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावें ।
हम उतरे भवदधिपार याते गुणगावें ।।१।।
ॐ ह्री पटत्रिंशद् गुणोपेत श्री आचाय परमेष्ठिदेवेभ्यो
जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्विपामीति स्वाहा ।।
गोशीर सुगंधित सार कुं कुं घिस लावें ।
प्रभु भव आताप निवार मनमे हर्पावें ।।
श्री आचारज पदसार मन वच तन ध्यावें ।
हम उतरे भवदधिपार याते गुणगावें ।।
ॐ ह्री पटत्रिशद गुणोपेत श्री आचाय परमेष्ठिदेवेभ्य
ससार ताप विनाशनाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।
ले चन्द्र किरण समश्वेत अक्षत धोय धरे ।
हम अक्षय निधि के हेत पदमे पुंज करें ।।
श्री आचरज पद सार मन वच तन ध्यावें ।
हम उतरे भवदधिपार याते गुण गावें ।।
ॐ ह्री पटत्रिंशद गुणोपेत आचाय परमेष्ठिदवोभ्योग्रक्षय
- पद प्राप्तय अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।
ले करके बहु विधि फूल, डाली भर लाये ।
प्रभु हरो काम तिरसूल भव भव दुख पाये ।।

कोमलता उरमे धरे मार्दव वृप अमलान ।
शुद्ध द्रव्य से पूजिए सूरि पद गुण खान ।।
ॐ ह्री उत्तम मार्दव धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

अन्तर बाहर एक है माया रंच न पाय ।
आर्जव गुण को धारते सूरि पूजो आय ।।
ॐ ह्री उत्तम आर्जव धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

सत्य वचन बोले सदा सत्य धर्म कहलाय ।
आचारज यह धारते अर्चत हम गुण गाय ।।
ॐ ह्री उत्तम सत्य धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

तन स्वभाव से अशुचि है किस विध होय न शुद्ध ।
ज्ञान ध्यान तप आचरे करे आत्म प्रति बुद्ध ।।
ॐ ह्री उत्तम शोच धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

इन्द्रिय पांचो वश करे काय छहो प्रतिपाल ।
इह विधि दो सयम धरे आचारज नमि भाल ।।
ॐ ह्री उत्तम संयम धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद् गुणोपेत आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्यो
अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

ले केले उत्तम सार आम्र अनार घने ।
फल भरु सरस शुभ थाल सुन्दर सहज सने ॥
श्री आचारज पद सार, मन वच तन ध्यावें ।
हम उतरें भवदधिपार याते गुण गावें ॥
ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद् गुणोपेत आचार्य देवेभ्यो
मोक्षफल प्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

जल चन्दनादि वहु ल्याय अर्घ चढावत हूं ।
गाउं प्रभु गुण हर्षाय भक्ति बढावत हूं ॥
श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावें ।
हम उतरें भवदधिपार याते गुण गावें ॥
ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद् गुणोपेत श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽनर्घ्य
पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

अथ प्रत्येक पूजा

दोहा—दुष्ट जीव पीडा करे क्षमा भाव उर लाय ।
पूजो पद आचार्य के मन वच काय लगाय ॥
ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि-
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

ॐ ह्रीं अनशन तप प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

भूख से अर्द्ध ले भाग चवथा गहै ।
ग्रास दोय ग्रास एक वृत्त एसो लहे ।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥

ॐ ह्रीं उनोदर तप धारक आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

गोचरी जाय जब वृत्त सख्या करे ।
लाभ नही लाभ मै तोष रोष ना धरे ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥

ॐ ह्रीं वृत्तपरिसख्यान तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

लेय छह रस विषे एक दोही भले ।
नीरसी खाय कभी, रसन वश ना चले ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीरगन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

द्वादश विधि तप आचरे अन्तर बाहिर जान ।
खेद नही मनमे करे पूज मिले शिव थान ।।
ॐ ह्री उत्तम सयम धम प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।
परद्रव्यन मे भिन्न है राग द्वेप नही होय ।
त्याग धम निश्चय कहे आचारज पद सोय ।।
ॐ ह्री उत्तम त्याग धर्म प्रतिपालक श्री आचाय परमेष्ठि
देवेभ्योऽध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।
अन्तर बाहर भेद से सग कहे हैं दोय ।
त्यागा उन मुनिराज ने धम अकिंचन होय ।।
ॐ ह्री उत्तम अकिंचन धर्म प्रतिपालक श्री आचाय परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।
निज पर की तिय त्याग कर व्रत धारा असि धार ।
पूर्ण ब्रह्मचारी भये नमन करू त्रय वार ।।
ॐ ह्री उत्तम ब्रह्मचय धम प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१०।।

(अथ १२ तप अर्घ) भुजग प्रयात

एक दिन चार दिन अष्ट पक्ष मास लो ।
मास दोय मास छह त्याग अन्न जल भलो ।।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।

सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥

ॐ ह्री विनय तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥८॥

सेव गुण धार अरु गुरुजनो की ठानिए ।
देवश्रुत सेव कर मोक्ष मग आनिए ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीरगन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥

ॐ ह्री वैयावृत तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥९॥

रात दिवस पाठ स्वाध्याय मे लीन हो ।
प्रश्न गुरु ठान वहु चिन्तवना कीन हो ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ॥
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सों ॥

ॐ ह्री स्वाध्याय तपधारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१०॥

आय उपसर्ग को हर्ष से सहत है ।
त्याग मन मोह निज आत्म को भजत है ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भावसो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥

विविक्त आसन धरे गहत नही मानको ।
जीव दुष्ट आयकर खण्ड नही ध्यान को ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गंध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥
ॐ ह्रीं विविक्त शय्यासन तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

त्याग तन मोह को ध्यान मे लीन हो ।
आय उपसर्ग तो भाव सम कीन हो ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गंध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥
ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

होत गमन इत उते, प्रमाद जीव संधरे ।
दोष होय गुरु निकट प्रायश्चित्त को धरे ॥
सुरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षाति पूजते चाव सो ॥
ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥

ज्येष्ठ की विनय कर वृत्त को आदरे ।
विनय से सकल गुण आप आपो वरे ॥

ॐ ह्री स्तवनावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

वन्दन देव करे जिन थाना, सब दोप रहित गुण नाना ।
नाशे पाप महा दुख दाई, सब अर्घ यजोरे भाई ॥
ॐ ह्री वदनावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

मन वचकाय लगे जो दोपा, अहोरात रहे मन सदोपा ।
ता आलोचन उर लाई, वह होवे प्रतिक्रम भाई ॥
ॐ ह्री वंदनावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

मन वच कायसु वस्तु त्यागे, नाही रोप करे वड़ भागे ।
उस प्रत्याख्यान वताई, सूरि नित्य करे सुखदाई ॥
ॐ ह्री प्रत्याख्यानावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

छोडा मोह प्रवल तन सोई, आतम ध्यान धरे निज जोई ।
कायोत्सर्ग कहे भगवाना सूरि राज करे गुणवाना ॥
ॐ ह्री कायोत्सर्गावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

दोहा—ये पटू आवश्यक करे सूरि पद को धार ।
पूरण अर्घ्य चढाय कर होवे भवदधिपार ॥
ॐ ह्री कायोत्सर्गावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामिति स्वाहा ॥११॥

ध्यान जब धारते हो अडोल जाप मे ।
चिन्तवे असार सब लीन हो आप मे ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सा ॥

ॐ ह्रीं ध्यानतप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥१२॥

कथित तप द्वादश धारते वीर ही ।
पाय नही मोहि जीव होत है अधीर ही ।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥

ॐ ह्रीं द्वादश तप धारकाचाय परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥१३॥

षढावश्यक अर्घ्य (सखी)

सब जीव विषे सम भावा, दुर्ध्यानिन मन मे लावा ।
करते सामायिक सुखदाई, अर्च्यु सूरि पद हर्षाई ॥

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

चतुवीस जिनेश्वर जो हैं, अरुपच परम गुरु सो हैं ।
तिन करहु स्तुति गुण गाई अति निमल भाव लगाई ॥

(अडिल)

ज्ञान दर्श चारित्र वीर्य तप आचरे ।
ये ही पंचाचार कहे सुख कार रे ॥
पाले इनको सूरि महा गुणवान जी ।
पूजे मन वच काय हर्ष उर आनजी ॥
ॐ ह्रीं श्री पचाचार चारित्र प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

गुप्ति अर्घं (राधेश्याम)

मन अति चचल वस करि जग को इधर उधर दौड़ाता है
याते आतम ध्यान न पावे मोक्ष मार्ग नही पाता है ।
धन्य धन्य गुरु आप जगत मे मनको वस में कीना है
ध्यान धरत हो निज आतम का मोक्ष पन्थ को लीना है ।
ॐ ह्रीं श्री मनोगुक्ति प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

बचन बोलते हित मित मीठे कभी नहीं परमाद वहै ।
ऐसी भाषा कबहु न भाषे याते प्राणी पाप गहै ॥
धन्य धन्य गुरु आप जगत में वचनो को वश कीना है ।
ध्यान धरत हो निज आतम का मोक्ष पन्थ को लीना है ॥
ॐ ह्रीं श्री वचनगुप्ति प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

पचाचार ५ अर्घ्य (सुन्दरी)

तत्व जीव अजीव सु जानते, न्याय निज में निज पहचानते ।
होय ज्ञानाचार सु जानिए, पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

कहत तत्व जिनेश्वर भाव मे, धरत श्रद्धा सूरि स्वभाव से ।
होय दर्शन चार सु जानिए, पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनाचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

त्याग सर्व सुसग विराजते, पाल समिति गुप्ति सुराजते ।
रहत चारित चार सु जानिए, पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्रीं श्री चारित्राचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।

करमनाशक शक्ति बढावते, धरत सयम तप अति चाव से ।
रहत वीर्याचारसु जानिए, पूज आचरज पद मानिए ।।
ॐ ह्रीं श्री वीर्याचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

तप तपे विधि द्वादश जानिए रम हनि फिर शिवपुर ठानिए ।
होय तप आचार सुजानिए पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्रीं श्री तपाचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

यह वर्तमान जो कलि काल ।
कहते पचम दुखमा जु काल ॥
फिर पावे इसमे जीव ताप ।
जहां घोर महा मिथ्या कलाप ॥२॥

हर थान वामि पन्थि अपार ।
आरोप किया जिन धर्म सार ॥
फैलाया था मिथ्यात्व अन्ध ।
सब जीव हुए सम्यक्त्व मन्द ॥३॥

उस वक्त प्रभु जिन धर्म हेतु ।
तुम प्रगट हुए थे धर्म सेतु ।
हो नष्ट किया पाखण्ड मार्ग ।
बतलाया था तुम मोक्ष मार्ग ॥४॥

अरु की प्रभावना आप सार ।
कर खण्ड खण्ड मिथ्याप्रचार ।
बतलाया सम तुम तुर्यकाल ॥
जय सूरि हो तुम सुगुणपाल ॥५॥

जय भूत भविष्यत वर्त्तमान ।
आचार्य हुए जो सुगुणवान ॥
उन स्याद्वाद वाणी अपार ।
जय हित मित प्रिय हो सुखदसार ॥६॥

निज काया को वश मे ठाने अरु चचलता टारी है।
रहित प्रमादी राखे थिरता दुरित जाल नही धारी है ॥
धन्य धन्य गुरु आप जगत मे तन को वश मे कीना है।
ध्यान धरत हो निज आतम का मोक्ष पन्थ को लीना है ॥

ॐ ह्री श्री कायगुप्ति प्रतिपालकाचाय परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

दोहा—परम पूज्य आचार्य हो, पालो गुण छत्तीस ।
वसु विधि अर्घ्य चढायकर, सदा नमाऊ शीस ॥

ॐ ह्री श्री षटत्रिंशद् गुण प्रतिपालकाचाय परमेष्ठि-देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

ॐ ह्री श्री आचाय परमेष्ठि देवेभ्यो नम स्वाहा ॥

(यहां ६ बार पुष्पों से जाप्य करें ।)

अथ जयमाला

दोहा—छत्तीसो तुम गुण सहित, सूरी पद मुनिराज ।
गावें तव गुणमालिका, होय सफल मम काज ॥

पद्धडी

आचाय परम गुरु धन्य आप ।
हम आगावें तुम यश प्रताप ॥
जय परम शात गुण गण समेत ।
हम ध्यावें नित प्रति सुगति हेत ॥१॥

तव कथित शास्त्र मगल स्वरुप ।
जो वांचे सरधे हित अनूप ।।
विपरीत करे जो ज्ञान गर्व ।
पावे नरकों का कष्ट सर्व ।।१२।।
तव नाम लेत कल्मष नशाय ।
अरु पावे सुख शिव नगरी जाय ।।
सूरजमल तव चरणो मे जाय ।
कर नमस्कार भव दुख नशाय ।।१३।।

घत्ता

जय सूरि महन्ता गुणगण सन्ता ध्यान धरन्ता ज्ञानी हो ।
जय भव भय भजन आतम रजन दुरित विभजन ध्यानी हो ।।

ॐ ह्रीं षटत्रिंशद मूलगुण प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठि-
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१४।।

दोहा—ध्यान धरे आचार्य का, जो प्राणी सुखदाय ।
करे कर्म की निर्जरा, अनुक्रम से शिव पाय ।।

(इत्याशीर्वाद)

श्री उपाध्याय परमेष्ठि पूजा (गीता)

पूज्य हो परमेष्ठि चोथे ध्याय पाठक राज जी ।
पालते गुण पंचविशति हो मुनि सिरताजजी ।।

दश धर्मादिक सेवत महन्त ।
अरु द्वादश विधि तुम तप तपन्त ॥
षट आवश्यक मनमे उतार ।
अरु गहते पचाचार सार ॥७॥

त्रय गुप्ति त्रय वश मे सु आन ।
इहह विधि षटत्रिंशद गुण महान् ।
इन पाले श्रद्धा धार आप ।
कहलाते सूरि धर प्रताप ॥८॥

हो परम तपस्वी गुण निधान ।
जय मोह सुभट को नष्ट ठान ॥
तुम शिक्षा दीक्षा दो अनूप ।
चारित्र बताया है स्वरूप ॥९॥

हो नग्न दिगम्बर तीथ रूप ।
भविजीव निकारे नीच कूप ॥
सब भारत वप विहार कीन ।
उपदेश दिया तुम समीचीन ॥१०॥

हो करुणा सागर गुण अगार ।
अनुप्रेक्षा चिन्ते वार वार ॥
बाबीस परिषह हर्ष ठान ।
तुम सहते गुरुवर सुगुणवान ॥११॥

चन्द्र किरण सम उज्जवल अक्षत खड विवर्जित धोकर लाय ।
पु ज करे हम पद पकज मे अक्षय निधि पावे सुखदाय ।।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मै पूजू तुम पाय ।।

ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय
देवेभ्यो ऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

जुई चमेली वकुल केवडा, मरुवा दोना फूल मगाय ।
चरण चढावे मन हर्षा कर कामवाण मम तुरत नशाय ।।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मै पूजू तुम पाय ।।

ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्य
कामवाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

पकवान वनाया थाल भराया, रसना इन्द्रिय को सुखदाय ।
क्षुधा रोग तत्काल हनन को पद पकज मे छोड्रू आय ।।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मै पूजू तुम पाय ।

ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्य
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

जगमग जगमग होत उजालो, कनक थाल मे दीपक जोय ।
मोह तिमिर नाशे दुखदाई, आतम ज्ञान जगावो मोय ।

आव्हान हो गुरु आपका उर आपना हम कर रहे।
सब हमारे दुरित मेटो ध्यान तव मन धर रहे॥
ॐ ह्रीं श्री पचविंशति गुणोपेतोपाध्याय परमेष्ठिन्
अत्रावतरावतर सवौषटम् आव्हान् ॥
ॐ ह्रीं श्री पचविंशति गुणोपेतोपाध्याय परमेष्ठिन् अत्र तिष्ट
तिष्ठ ठ ठ स्थापनम्।
ॐ श्री ह्रीं पचविंशति गुणोपेतोपाध्याय परमेष्ठिन् अत्र मम
सन्निहितो भव भववषट सन्निधिकरण॥

अथाष्टक (त्रिभगी)

गगा नद को जल अति उत्तम झारी लेकर मैं भरलाय।
धार दऊ मैं श्री गुरुवर पद जन्म जरामृति दूर भगाय॥
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावें मन वच काय लगाय।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मैं पूजू तुम पाय॥
ॐ ह्रीं श्री पचविंशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यो
जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्विपामीति स्वाहा॥१॥
गोशीर सुगन्धित ने घपु रो, केसर सगमे घिसु मन लाय।
ससृति ताप मिटावन कारण चरण चढाउ बहु हर्षाय॥
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मैं पूजू तुम पाय॥
ॐ ह्रीं श्रीपचविंशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यो
ससार ताप विनाशनाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं श्री पचविंशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥९॥

प्रत्येक अर्घ्यं (पद्धडी)

जय पहलो आचारंग जान, मुनि पाले व्रत जिसका प्रमाण ।
इस अंग तनो जिस होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित यत्याचार सूचक अष्टादश सहस्र १८००० पद प्रमाणमाचारांगस्य ज्ञाता उपाध्याय
परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

जय धर्म रूप किरिया विशाल जावर्णी सूत्र कृतांगहाल ।
इस अंग तनो जिस होय ज्ञान सो पाठक होवे सुगुणवान ॥

ॐह्रीं श्री अरहन्त देवकथित ज्ञान विनय छेदोपस्थापना क्रिया प्रतिपाद षट्त्रिंशत सहस्र ३६००० पद प्रमाण सूत्रकृतांगस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

जय जीव थान जिसमे वताय जय स्थानांग सु वुद्धिगाय ।
इस अंगतनो जिस होय ज्ञान, सो पाठक होवे सुगुणवान ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देवकथित षड्द्रव्यकाद्युत्तरस्थान व्याख्यान कारक द्वाचत्वारिंशत सहस्र ४२००० पद प्रमाण स्थानांगस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मैं पूजू तुम पाय ।।
ॐ ह्रीं श्री पर्चविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यो
मोहन्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

अगर तगर चन्दन का चूरा, और अनेको द्रव्य मगाय ।
धूप बनाकर खेय अग्नि मे अष्ट कम नाशे दुखदाय ।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मैं पूजू तुम पाय ।
ॐ ह्रीं श्री पर्चविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय
देवेभ्योऽष्ट कम दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

सेव नरगी आम्र विजोरा श्रीफल आदिक थाल भराय ।
महा मोक्ष फल पाउ याते पूजू पद पकज मे जाय ।।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मैं पूजू तुम पाय ।।
ॐ ह्रीं श्री पर्चविशति मूलगुण प्रतिपालकापाध्याय देवेभ्यो
मोक्षफल प्राप्तये फल निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

जल चन्दन अक्षत पुष्पादिक व्यजन नाना भाति वनाये ।
दीप धूप फल थाल सजोकर अघ चढाऊ मन वच काय ।।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मे पूजू तुम पाय ।

पूजि हो हम भक्ति युत हो द्रव्य वसु विधि थाल भर ।
सव दुरित हरि है नाथ मेरे मैं यजू उर हर्ष धर ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित द्वि सहस्राधिक पंचदश लक्ष चटुष्कोटी ४१५०२००० पद प्रमाणमेकादशांगाना ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१२।।

१४ पूर्वाणां अर्घ्य (अडिल)

शास्त्र महा उत्पाद पूर्व जिन वाण है ।
जन्म नाश ध्रुव वस्तु महा गुण गान है ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्लीश्री अरहन्त देव कथित वस्सुनामुत्पाद व्यय ध्रोव्यादि कोटि १०००००० पद प्रमाणमृत्पाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

सप्त तत्व षट द्रव्य पदारथ जे कहै ।
पूरव है अग्राय नाय शुभ जेल है ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्यसु पूजरचावते ।।

ॐ ह्री श्रीअरहन्त देव कथित अ गनामग्रभूतार्थं निरुपकं षण्णवति लक्ष ९६००००० पद प्रमाणमग्रायणीय पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१३।।

षड् द्रव्य तिलोको का स्वरुप, है समवायाग सुकथ अनूप ।
इस अगतनो जिस होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित धर्माधम लोकाकाशैक जीवसप्त नरक मध्य बिल जम्बू द्वीप सर्वार्थसिद्धि विमान नन्दीश्वर द्वीप वापिका तुल्यैक लक्ष्य योजन प्रमाण निरूपक भव भाव कथक चतुषष्टी सहस्राधिक लक्ष १६४००० पद प्रमाण समवायागस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्य

निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

जय अस्ति नास्ति का जान भग, होवे व्याख्या प्रज्ञप्ति अग ।
इस अग तनो जिस होय ज्ञान सो पाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित जीव किमस्ति नास्तिवा इत्यादि गणधर कृत प्रश्न षष्ठीसहस्र प्रतिपादक अष्टाविंशति सहस्राधिक द्विलक्ष २२८००० पद प्रमाण व्याख्या प्रज्ञप्ति अगस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

जय तीर्थंकर गणधर चरित्र जो ज्ञातृ कथा वर्णे पवित्र ।
इस अग तनो जिस होय ज्ञान सो पाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित तीर्थंकर गणधर कथा कथिका षटपचाशत सहस्राधिक पचलक्ष ५५६००० पद प्रामाण ज्ञातृ कथा अगस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्य

निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित अष्ट ज्ञान तदुत्पत्ति कारण तदाधार पुरुष प्ररुपकमेकोन कोटि ९९९९९९९ पद प्रमाण, ज्ञान प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं

निर्विपामीति स्वाहा ॥१६॥

वर्ण थान दो अक्ष आदि सस्कार है ।
सत्य प्रवादा पूर्व कहै जग सार है ॥
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देवकथित वर्ण स्थान तदाधार द्विद्रिन्यादि वचन गुप्ति सस्कार प्ररूपक षडधिक कोटि १००००००६ पद प्रमाण सत्य प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं

निर्विपामीति स्वाहा ॥१७॥

गमना गमन सु लक्षण जीवों का सही ।
पूरब आत्म प्रवाद नाम शुभ है यही ॥
उपाध्याय परमेष्ठि गुरू यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देवकथित ज्ञानाद्यात्मक कर्तृत्वादियुतात्म स्वरुप निरूपकं षडविंशति कोटि २६०००००००० पद प्रमाण आत्म प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं

निर्विपामीति स्वाहा ॥१८॥

तोर्थ कर चक्रीस हरि शुभ गाइयो ।
नाम वीय अनुवाद चरित्र वताईयो ।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ॥१४॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित वलदेव चक्रवर्ति शक्र तीर्थंकरादि वलवरणक सप्तति लक्ष ७०००००० पद प्रमाण वीर्यानुवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१४॥

सव वस्तु मे सप्त भग शुभ कहत है ।
अस्ति नास्ति परवाद नाम वसु लहत है ॥
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त कथित जीवादि वस्त्वास्ति नास्ति चेति-प्रकथक षष्ठि लक्ष ६०००००० पद प्रमाणमस्ति नास्ति प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥१५॥

अष्ट ज्ञान उत्पत्ति सुकारण जानिये ।
स्वामी ज्ञान प्रवाद सु पूरब मानिए ।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित पंचाशत महा विद्या सप्त:शत क्षुद्र विद्या अष्टाग महानिमित्तानि प्ररूपयनदशलक्षाधिक कोटि ११०००००० पद प्रमाण विद्यानुवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२१।।

तीर्थंकर बल भद्र आदि जो हो गये ।
पुण्य कहै कल्याण वाद पूरव ठये ।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।

ॐ ह्री श्री अरहन्त कथित तीर्थंकर चक्रवर्ति बल भद्र वासु देवेन्द्रादिनां पुण्य भ व्यावर्णक षट् विशति कोटि २६०००००००० पद प्रमाण कल्याणवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्यो ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२२।।

मन्त्र तन्त्र अरु ज्योतिष विद्या है सही
भूत प्रेत की नाशक विधि विस्तर कही ।
अष्ट अंग के निमित्त कहे जिस सारजी
प्राणावाय पूरब नाम प्रचार जी
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित अष्टाग वैद्यविद्या गारुढी विद्या मन्त्र तन्त्रादि निरुपक त्रयोदश कोटि १३०००००००० पद प्रमाण प्राणावायं पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२३।।

बन्ध उदय कर्मो की सत्ता जानिए ।
कर्म प्रवादा पूरब कहत सु मानिए ।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित कर्म बन्धोदयोपशमोदीरणा निर्जरा कथकमशीति लक्षाधिक कोटि १८००००० पद प्रमाण कर्म प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१९।।

प्रत्याख्यानरु द्रव्य तथा पर्यय कहै
प्रत्याख्यानी पूर्व नाम याको लहै ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित द्रव्य पर्यायरूप प्रत्याख्यान निश्चलन कथक चतुरशीतिलक्ष ८४००००० पद प्रमाण कर्मप्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२०।।

पञ्च महाशत विद्या शत सत लघु सही ।
है निमित्त अष्टाग सुजिनवर विधि कही ।।
विद्या साधन फल भी जिनके वर्णये ।
है विद्या अनुवाद पूर्व सज्ञा लये ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्रीं श्रीं एकादशांगचतुर्दश पूर्वांगाणां ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्यः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२६।।

ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्याय परमेष्ठि देवेभ्यो नमः स्वाहा ।।

(यह मन्त्र ६ बार पुष्पों से जपे करें)

❀ अथ जयमाला ❀

दोहा——पाठक परमेष्ठि महा, भव भव में सुख दाय ।
तिनके गुण की मालिका भवि जन कंठ धराय ।

पद्धडी

जय पाठक हो परमेष्ठि आप ।
हम ध्यावे भक्ति मिटत ताप ।।
जय नगन दिगम्बर आप राय ।
गुण—गावे मुनिवर मुक्ति पाय ।।१।।
जय ध्यान धरा हो आत्म सार ।
जिससे मिटता भव दुख अपार ।।
जय मिथ्या तम नाशक दिनेश ।
सिर नावे सुरपति नर खगेश ।।२।।
जय आर्तरौद्र का कर निकार ।
धर धर्म शुक्ल आतम विचार ।
जय मोह सुभट को नाश कौन ।।
जय कुसुम वाण को हर प्रवीण ।।३।।

गीत नृत्य है छन्द सु विधि जिसमे सही ।
, सकल शास्त्र नय कला महा उसमे कही ।।
अलकार का वर्णन जहा विशाल है ।
जानो पूरव किरिया नाम कमाल है ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।२४।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित छन्दोलकार व्याकरण कला निरूपक नव कोटि ९००००००० पद प्रमाण क्रिया विशाल पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति - स्वाहा ।।२४।।

लोक तीन सुख दु ख को वर्णन जानिए ।
मोक्ष हेतु है लोक विधि यह मानिए ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित निर्वाण पदसुख हेतु भूत सार्द्ध द्वादश कोटि १२५०००००० पद प्रमाण लोक विन्दुसार पूवस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्य पूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२५।।

दोहा—ग्यारह अ ग विशाल है चौदह पूरव जान ।
इनके ज्ञानी है सही पाठक गुरु महान ।।

अध्यात्म रसिक हो सुगुण खान ।
जय ज्ञानामृत का करत पान ॥९॥
तव गावे गुरुवर गुण अपार ।
याते मिलती है मुक्ति नार ॥
सूरजमल करता नमस्कार ।
ससार जलधि से वेगि तार ॥१०॥

घत्ता

जय पाठक ध्याऊं पूज रचाउं तिन गुण गाउं हर्षधरु
भव ताप निवारी विपत विडारी वहु गुण धारी नमन करु ॥
ॐ ह्रों श्री पर्चावशति मूलगुणोपेत श्री उपाध्याय
देवेभ्योऽर्ध्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥
दोहा—पाठक पूजो भाव से हर्ष महा उर धार ।
सुख सम्पत्ति वाढे सदा पुनि पावे शिव नार ॥
(इत्याशीर्वाद)

साधु परमेष्ठि पूजन (सुन्दरी)

रहत मग्न सुध्यान सुभावते, परम तव कर हर्ष वढ़ावते ।
होय साधु महाव्रत घारते नमनकर हम पूज रचावते ॥
ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिन्
अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वान ।
ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिन्
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ स्थापनं

जय आतापन तुम योग धार।
दश धर्मादिक सेवत उदार ॥
जय रत्नत्रय धर धर्म आप।
जय विषय भोग नाशक सुचाप ॥४॥
जय विद्वतरत्न कहत आप।
जय चर्चा करते सुख अलाप ॥
जय पढे पढावे शिष्य जान।
याते पाठक तुम नाम मान ॥५॥
जय शिक्षा अद्भुत जगत मान।
जय शिष्यो का नाशे कुज्ञान ॥
जय गुरुवर हो तुम निर्विकार।
जय काम कषायों को विडार ॥६॥
जय अगसु एकादश प्रमाण।
अरु चवदह पूरव है सुमान ॥
इन ज्ञान भयो है आप नाथ।
कर जोडे नावे नित्य माथ ॥७॥
तब पाठक सब जग कहत नाम।
सब जीव रटत है सरत काम ॥
जय सौम्य मूर्ति है परम शात ॥
गुण पच्चिस धारे हो प्रशात ॥८॥
जय पाठक हो शिव तियरमन्त।
जय ध्याता ध्यानी कहत सन्त ॥

चंपा चमेली कुन्द मरुवा मोगरा वहु फूल ले ।
कुसुम इषु के नाश हेतु, चरण, छोड़ू हुं भले ।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूँ परमात्मा ।।४।।

ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यः काम बाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।

पूरी पकोडी खीर गूंजा और मोती चूरले ।
भेट कर सम्यग गुरु के सुख तभी भरपूर ले ।।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहुँ परमात्मा ।।५।।

ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्य. क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्विपामीति स्वाहा ।

शुद्ध घृत करपूर आदिक रत्न का दीपक करु ।
आरती कर साधुवर की मोह राजा को हरू ।।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूँ परमात्मा ।।६।।

ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्विपामीति स्वाहा ।

लेकर सुगन्धित द्रव्य वहु विध धूप मनहर कर लिया ।
खेय वैश्वानर के माही कर्म आठौ हर लिया ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिन् अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरण

।। अथाष्टकम् ।। गीता

जल सुवासक सुरसरीका स्वर्ण झारी लाइया ।
दे धार चरणो मे सु आकर, जन्म मृत्यु नशाइया ।।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहू परमात्मा ।।१।।
ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूल गुण प्रतिपालक साधु परमेष्ठि भ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ।
केशर कपूर सुगन्ध चन्दन घिस कटोरी में लिया ।
चर्चु युगल पद हर्ष धर कर ताप भव का नश दिया ।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूँ परमात्मा ।।२।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्य संसार ताप विनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा ।।
चन्द्र सम उज्ज्वल अखण्डित तन्दुलो को लीजिए ।
अक्षय निधि के प्राप्ति हेतु पुञ्ज गुरु ढिग कीजिए ।।
साधु हो तुम साधना म साधते निज आत्मा ।
हम पूजत पद युगल नित प्रतिपद लहूँ परमात्मा ।।३।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्तय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।

ॐ ह्री श्री अहिसा महाव्रत मूल, गुणधारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

नष्ट हो शरीर ना असत्य कभी भासते ।
हो भला जीव जिन वाणी को प्रकाशते ।
होय महाव्रत्त यह साधु बड़े भाग के ।
पाय मोक्ष नार संग राग को त्याग के ।।२।।

ॐ ह्री श्री सत्य महाव्रत धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।

दे विना न ले कभी न याचना को ठानते
हो विरक्त नगन तन आतम गुण जानते ।।
होय महाव्रत्त यह साधु वड़े भाग के ।
पाय मोक्ष नार संग राग को त्याग के ।।३।।

ॐ ह्री श्री अचौर्य महाव्रत्त धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।

नारि चार जाति जान साधु नित्य टारते ।
पाय शील रत्न शुभ काम को विडारते ।।
होय महाव्रत्त यह साधु वड़े भाग के ।
पाय मोक्ष नार संग राग को त्याग के ।।४।।

ॐ ह्री श्री ब्रह्मचर्य महाव्रत धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा

साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूं परमात्मा ।।७।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्विपामीति स्वाहा ।
बादाम श्री फल आम केला दाडिमादिक फल भले ।
थालभर छोडे चरण मे भ्रमण भव का सर्व टले ।।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लाहूँ परमात्मा ।।८।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फल निर्विपामीति स्वाहा ।
नीर चदन धवल अक्षत पुष्प मनहर लाइया ।
पकवान दीपक धूप फल सब अर्घ्य चरण चढाइया ।।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूं परमात्मा ।।९।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

अथ प्रत्येक पूजा कामिनी (छन्द)

जीव त्रस थावरा आप सम जानते ।
देय दुक्ख ना कभी योग त्रयहानते ।
होय महाव्रत्त यह साधु बडे भाग के
पाय मोक्षनार सग राग को त्याग के ।।

सोधे भोजन ठाडे लेवे मौन सहित विन सेना ।
टाले अघ सब दोष असन मुनि मुखसे कहत न बेना ॥
एषरण समिति पाले साधु मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ॥
ॐ ह्री श्री एषणा समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥
वस्तु उठावे छोडे भूपर पहले देखे भाई ।
करे नहि परमाद कभी भी अघ सारे टर जाई ॥
समिति निपेक्षरण जे पाले मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भवरोगा ॥
ॐ ह्री श्री आदान निक्षेपरण समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥
त्रस थावर की रक्षा करके मूत्ररु मल को त्यागे ।
करे नहि हे वैर किसी से हिसा का अघ भागे ॥
समिति धरते प्रतिष्ठापन मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट करो भव रोगा ॥
ॐ ह्री श्री प्रतिष्ठापन समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

पंचेन्द्रि रोध (अर्घ) चौपाई

हल्का सु भारी ऊपरण जान कोमल ठडा करकस आन ।
रूक्ष चिकन यह अष्ट बखान इन्द्रिय कर्म सुभेद प्रमारण ॥

त्याग सग दोयविध वाह्य अभ्यतरा ।
छोड मोह जाल को लेय समता धरा ॥
होय महाव्रत्त यह साधु बडे भाग के ।
पाय मोक्ष नार सग राग को त्याग के ॥५॥
ॐ ह्री श्री परिग्रह त्याग महाव्रत धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

पच समिति (जोगीराशा)

हस्त चार लख पद को धारे उर अनुकपा लावे ।
त्रस थावर की रक्षा करते समता भाव बढावे ॥
ईर्या समिति पाले साधु मन वच काय त्रियोगा ॥
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ॥१॥
ॐ ह्री श्री ईर्या समिति प्रतिपालक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामिति स्वाहा ।

सब जीवो से हित मित बोले खेद नही उपजावे ।
दे उपदेशरु अघ को टाले शिवमारग दर्शावे ॥
भाषा समिति पाले साधु मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ॥२॥
ॐ ह्री श्री भाषा समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

षडावश्यक ६ अर्घ पद्धडी

सब जीवों से समता कराय, नहि राग द्वेष मन मे लहाय।
जे आर्तरौद्र द्वय ध्यान त्याग अरु सामायिक करते सुभाग ॥
ॐ ह्री श्री सामायिक मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

जे करे सस्तवन भक्ति धार,
चतुवीस जिनेश्वर गुण विचार।
यह आवश्यक सु द्वितीय जान,
हम पूजे वसु विधि द्रव्य आन।
ॐ ह्री श्री स्तवन मूल गुण धारक
साधु देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

जय वन्दन करते बार बार
जिन देवतनी है सुखदसार।
यह वन्दन आवश्यक महान
हम पूजे सुन्दर द्रव्य आन।
ॐ ह्री श्री बंदना मूल गुण धारक
साधु देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

जय रात दिवस जो दोष होय,
जय ऊठत बैठत गमन होय।
उस अघ नाशन के हेतु आप,
शुभ करे प्रतिक्रम और जाप।

स्पशन इन्द्रिय है शैतान वीतरागि जन जीते महान ।
पूजू वसु विधि अर्घ्य सुआन भाव भक्ति उरमे घर ध्यान ।।
ॐ ह्री श्री स्पर्श इन्द्रिय विजय प्राप्त साधुदेवेभ्योऽघ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

खट्ठा मीठा कटुक कपाय चरपरा यह स्वाद कहाय ।
जीते इनको मुनिगण राय पूजू वसु विधि अघ्य चढाय ।।
ॐ ह्री श्री जिव्हा इन्द्रिय विजय प्राप्त साधुदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

घ्राणेन्द्रिय है भेद सुदोय वशमे इसके सब जग होय ।
जीते इनको मुनिगण राय, पूजू वसु विधि अघ्य चढाय ।।
ॐ ह्री श्री घ्राणेन्द्रिय विजय प्राप्त साधुदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

नयना इन्द्रिय पाच सुहाय, विपय कहे है गणधर राय ।
जीते इनको मुनिगणराय पूजू वसु विधि अर्घ्य चढाय ।।
ॐ ह्री श्री नयना इन्द्रिय विजय प्राप्त साधुदेवेभ्योऽघ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

कर्णेन्द्रिय के विपय जु सात कहत जिनेश्वर उर हर्पात ।
जीते इनको मुनिगण राय पूजू वसु विधि अघ्य चढाय ।।
ॐ ह्री श्री कर्णेन्द्रिय विजय प्राप्त साधुभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति
स्वाहा ।।५।।

नहि रंच आभूषण गहे तन तेल इत्र नसेवते ।
रहत वैरागी वे सव मे त्याग मजन रेवते ॥
ते साधु मेरे उर वसो सव पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज वहु विघ अर्घ्य लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ॥
ॐ ह्री श्री दन्त घावन त्याग मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

जय रहित वस्त्र सु नगन तन हो, ओढते न विछावते ।
सहत शीत सुउष्णता को आतम निज को ध्यावते ॥
ते साधु मेरे उर वसो सव पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज वहु विघ अर्घ लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ॥
ॐ ह्री श्री नगन तन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

निजहस्त सिर के मूछ डाढी केशलुचन करत है ।
नहि चहत है वे पर सहायक जीव रक्षा धरत है ॥
ते साधु मेरे उस वसो सव पाप क्षण में नाश हो ।
पूज वहु विघ अर्घ लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ॥
ॐ ह्री श्री केश लुचन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

इक वार दिन मे करत भोजन शुद्ध आतमध्यावते ।
रस रहित नीरस असन लेवे साधु कर्म नशावते ॥
ते साधु मेरे उर वसो सब पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज बहु विघ अर्घ लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमण मूल गुण धारक
साधु देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

मुनि षटरस युत सब वस्तु त्याग
जय करे उपोषण त्यजत राग।
वह होवे प्रत्याख्यान सार,
हम पूजे मुनिवर बार-बार।

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान मूल गुण धारक
साधु देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

जिस आसन से मुनि ध्यान धार,
वैराग्य चितारे जग असार।
उपसर्ग होय बहु विध प्रकार,
नहि छोडे आसन निज विचार।

ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्ग मूल गुण धारक
साधु देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

सप्त शेष गुण (गीता)

जब ऊँच नीच सुहोय भूमि खण्ड कंकर सहित हो।
शयन करते शुद्ध पृथ्वी, किन्तु प्राणी रहित हो ॥
वे साधु मेरे उरवसो सब पाप क्षण में नाश हो।
पूज वसु विध अर्घ्य लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो।

ॐ ह्रीं श्री एकाशन शयन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

जयमाला

दोहा—मगल मय तव नाम से पाप सकल नशि जाय ।
कहुँ श्रेष्ठ जय मालिका जो है शिव फलदाय ॥

पद्धडी

जय नगन दिगम्बर रुप धार ।
जो तीर्थंकर का रुप सार ॥
जय मुक्ति नगरी का पन्थ जान ।
सिर नावे सुरपति नृप महान ॥१॥
जय परम गुरु हो सुखद आप ।
भवि जीव करे तव नित्य जाप ॥
जय मोह रिपू को चूर चूर ।
जय आतम रस गुण पूर पूर ॥२॥
जय भोग भुजगा विषय जान ।
अरु है वे ये सब नर्क खान ॥
सब अथिर लखा ससार आप ।
अरु होता जिसमे नित्य पाप ॥३॥
सब छोड चले गुरुवर महान ।
कदली तरुवत ससार जान ॥
जय पंच महाव्रत धरत धीर ।
जय पच समिति पालत सुवीर ॥४॥

ॐ ह्री श्री एक वार भोजन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

होकर खडेजे असन करतें राग नहि मन धरत है ।
जे साधते शिवमग सदा तेकम रिपु को हरत है ॥
ते साधु मेरे उर वसो सव पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज वहु विधि अर्ध लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ॥
ॐ ह्री श्री ठाडे अहार मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

पवन चालै धूल आवे गातमे चिप जाय है ।
होय मैली देह सारी फिर न्हवन नहि लाय है ॥
ते साधु मेरे उर वसो सव पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज वहु विधि अर्ध लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ॥
ॐ ह्री श्री स्नान त्याग मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥

पच व्रत अरु पच समिति पच इन्द्रिय वश करे ।
षट करें आवश्यक निरंतर सप्त गुण चित आदरे ॥
वे साधु मेरे उर वसो सव पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज वहु विधि अर्घ लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ॥
ॐ ह्री अष्टा विंशति मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥८॥

ॐ ह्री श्री साधु परमेष्ठि देवेभ्यो नम स्वाहा ॥
(सुगन्ध पुष्पों से ६ बार जाप करे)

जय आर्तरौद्र द्वय ध्यान छोड ।
जय धर्म शुक्लमे मनसु जोड ॥१०॥

जय अन्तर बाहर तप तपन्त ।
जय द्वादश विधि ये कहत सन्त ॥
उपसर्ग अनेको सहत आप ।
जय धार हृदय मे क्षमा चाप ॥११॥

जय साधु महागुण आप धार ।
तप करे बरे हो मुक्ति नार ॥
हम चरण शरण मे आय आय ।
सूरजमल वन्दे शीष नाय ॥

धत्ता

जय जय रिपि राजा भव भय भाजा शिवके काजा आपवर ।
हम गुण गण गावे शीष नवावे शिव फल पावे नष्टकर ॥

ॐ ह्रीं अष्टविंशति मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥

दोहा---सर्व साधु परमेष्ठि नमि तारण तरण जहाज ।
मन वच तन से भजत हू होय सफल मम काज ॥

जय इन्द्रिय पाचो विजय कीन ।
षट आवश्यक उर धर सुलीन ॥
जय सप्त शेष गुण आप धार ।
ये गुण अट्ठाविस पाल सार ॥५॥
जय शीत काल सरनदिया तीर ।
अर चौहट बैठे ध्यान धीर ।
जब चले हवा ठडी दुसार ।
गुरु लगे वपु नही मन बिगार ॥६॥
ग्रीषम मे पवत आप जाय ।
वर्षा ऋतु मे है तरु सुहाय ॥
द्वावीस परीषह सहत आप ।
नही कष्ट करे धर आत्म जाप ॥७॥
तब शत्रु मित्र मे एक भाव ।
मणि कचन काच सु सम स्वभाव ॥
जय पितृवन अर महल देख ।
नहि पूज अपूजक द्वेष नेक ॥८॥
जय काम विभजन आप सूर ।
गुण गावे हम नहि होत पूर ॥
ससार भ्रमण से दो छुडाय ।
जय गुरुवर तुम हो जगत राय ॥९॥
जय स्वपर कयाणक हो महान ।
सग त्याग दिया चतुवीस जान ॥

अक्षत धोय महा हितकारी ताके पुंज करो अतिभारी ।
अक्षयपाय निधि सुखदाई जिनवर धर्म यजो रे भाई ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

कुसुमा नाना भाति सुचोखे, चपा कुन्द गुलाव अनोखे ।
काम वाण की होय विदाई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यः काम वाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।
गूंजे फेणी अनरसे ताजे वावर वर्फी धेवर साजे ।
डाकिन रोग क्षुधा भगजाई जिनवर धर्म यजो रे भाई ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्य. क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेध निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

दीपक रतन अमोलक लाया घनसार सुघृत का जलाया ।
ज्ञान ज्योति महा उर जगाई जिनवर धर्म यजोरे भाई ।
ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो मौहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

लेउ धूप दशागी नव्य, भासुर माहि खिपावो भव्य ।
आठों कर्म तुरत जल जाई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो अप्ट कर्म दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

जिन धर्म पूजा

परम पूज्य है धर्म अहिंसा जीवो को वह अति सुखदाय ।
स्याद्वाद पद महा विभूषित रत्नत्रय का है समुदाय ।।
संसृति का पथ भ्रमण मिटाकर अविनाशी ही पद सुखदाय ।
इनको पूजे जो भवि प्राणी थापन कर उरमे उमगाय ।।
ॐ ह्री श्री स्याद्वाद जिन धर्म अत्रावतरावतर संवौषट आव्हानम्
ॐ ह्री श्री स्याद्वाद जिन धर्म अत्र तिष्ठतिष्ठ ठ ठ स्थापनम्
ॐ ह्री श्री स्याद्वाद जिन धर्म अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरण ।

अथाष्टकम् (सखी) (पाईता)

शीतल मिष्ट सुवासित चंगा, धारा देय महा जल गंगा ।
जन्म मृत्यु जरा नश जाई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्री श्री अरहंत देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।
बावन चन्दन सुरभित लाया केशर मघ मे घिसो हुलसाया ।
भव्वाताप नशे दुख दायी, जिनवर धर्म यजो रे भाई ।।
ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्य संसार ताप विनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

कुटिलताधार तिर्यंच गति जावते ।

लाद भार बन्ध वध दुक्ख को पावते ॥

साधुजन जीत मन सरलता लावते ।

पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमण नही खावते ॥

ॐ ह्री श्री आर्जव धर्मागाय

अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

असत्य पाप खान है नीच प्राणि वोलते ।

धार झूंठ राज वसु नर्क भव डोलते ॥

धन्य धन्य साधुराज सत्य उपजावते ।

पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमण नही खावते ॥

ॐ ह्री श्री सत्य धर्मागाय

अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

लोभ महादुक्खदा अनन्त सब जीव को ।

होत नहि तोष कभी कष्ट ही सदीव को ॥

धन्य धन्य साधु राज काटि लोभ नीव को ।

पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमण नहीं खावते ॥

ॐ ह्री श्री उत्तम शौच धर्मागाय नम:

अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

नि.संयमी जीव दुक्ख पावते लखाय है ।

धार वह मनुष्य भव व्यर्थ में लुटाय है ॥

धन्य धन्य साधु रत्न सयमा को ध्याय है ।

पाय वह मोक्ष सौख्य गोत नही खाय है ॥

आम्र काम्र अनारस केला हेम थाल मे कर वहु भेला ।
पावे मोक्ष महा ठकुराई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो
मोक्षफल प्राप्तये फल निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।
नीर आदिक द्रव्य सु सुन्दर करते अर्चन सतत पुरन्दर ।
पावे पद अविनाशी सुखाई जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो
अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

(अथ प्रत्येक पूजा) कामिनी मोहन

क्रोध महा नीच है स्वभाव को भुलावते ।
धार प्राणि मात्र क्रोध दुक्ख को पावते ।।
साधु जन जीत क्षमा भाव उर लावते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमण नही खावते ।।
ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय
अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।
अष्ट मद जीव से लगे अनादि काल से ।
पाय दुक्ख जीव महा गर्व की चाल से ।।
साधुजन जीत उस गर्व को न ध्यावते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमण नही खावते ।।
ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्मांगायअर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

धन्य साधु राज महा ब्रह्म उपसेवने ।
पाय वह मोक्ष सौख्य हर्ष मन ठेवते ॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः
अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥१०॥

चरित्र दर्श ज्ञान को धार विपरीत ही ।
सेय मिथ्यात्व को करत है अनीत ही ॥
धन्य धन्य साधु रत्न तीन को माधही ।
पाय वह मोक्ष सौख्य होत है अबाध ही ॥
ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रय धर्मेभ्यो
अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥११॥

२५ मलदोष (जोगीराशा)

देव शास्त्र गुरु धर्म के ऊपर करता शंका भाई ।
सम्यग्दर्शन दोष यही है भव वनमे भरमाई ॥
होय निशकि जिन वचनो मे सम्यगहष्टी होई ।
पूंजू उत्तम द्रव्य सु लेकर मोक्ष महा पद सोई ॥१॥
ॐ ह्रीं शंकामल दोष रहित निशक्कित गुणोपेत सम्यग्दर्शन
मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥
कर्मरण परवश अन्तसहित है होय पाप का वीजा ।
ऐसे सुख मे करता श्रद्धा समकित मल्ल कहिजा ॥
छोड़ अथिर सब सुख की आशा समकित शुद्ध कहाया ।
पूजूं मन वच काय त्रियोगा वसु विधद्रव्य चढ़ाया ॥

ॐ ह्री श्री उत्तम सयम धर्मांगाय नम
अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।
होय दो प्रकार तप बाह्य अभ्यन्तरा ।
करत ना अज्ञानी जीव दुख यो ही भरा ।।
उग्र तप तपत है महा योगीश्वरा ।
पाय वह मोक्ष सौख्य होय जिनवर वरा ।।
ॐ ह्री श्री उत्तम तप धर्मांगाय नम
अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।
त्याग नही करत जीव मोह राज चालते ।
धार राग द्वेष ही दुक्ख को पालते ।।
धन्य धन्य सन्तराज त्याग खुश हालते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य दुक्ख को टालते ।।
ॐ ह्री श्री उत्तम त्याग धर्मांगाय नम
अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।
सग चतुवीस ही देव जिनवर कहा ।
धारते सग जीव दुक्ख अन्त ना लहा ।।
धन्य धन्य नग्न हो सन्त त्यजते अहा ।
पाय वह मोक्ष सौख्य सन्त सग को दहा ।।
ॐ ह्री श्री उत्तम आकिंचन धर्मांगाय
अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।
देव पशु मनुष्य की नारी को सेवते ।
करत अब्रह्म जो नरक पद लेवते ।।

धर्म वन्धु जन गिरते जन को फिर से थापित करते ।
सम्यग्दर्शन शुद्ध उन्ही का शिवरमणी को वरते ॥
ॐ ह्री अस्थितिकरण मल दोष रहित स्थितिकरण गुणोपेतं
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥
धर्मरु धार्मिक सज्जन ऊपर प्रीति नही जो करते ।
सम्यग्र्शन दोषी उनका भवदधि नाही तारते ॥
करते धार्मिक वन्धुजनो मे प्रीति महागुण धारी ।
वत्सल अग कहे उसको गण पूज महा दुखहारी ॥
ॐ ह्री अवात्सल्य मल दोष रहित वात्सल्य गुणोपेत
सम्यग्दर्शन जिन धर्मेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥
ज्ञानी होकर मिथ्यातम को दूर नही जो करते ।
नही वढावे जैन धर्म को समकित दोष सुहारते ॥
जैसे तैसे प्रसरित तम को नश कर धर्म वढावे ।
सम्यग्दर्शन होता शुद्ध वसु विध द्रव्य चढ़ावे ॥
ॐ ह्री अप्रभावनामल दोष रहित प्रभावनाग शुणोपेत
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामिति स्वाहा ॥८॥

अष्टमद–दोहे

करत नही मद को कभी पिता भूप हो जाय ।
मदकरता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ॥
ॐ ह्री पितृभूपमद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन जिन
धर्मेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

ॐ ह्रीं कांक्षित मल दोष रहित निकांक्षित गुणोपेत
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

होय स्वभावी वपु अशुद्ध रत्नत्रय से शुद्ध ।
ऐसे मुनि तन ग्लानि करता समकित होय अशुद्ध ।।
होत नहीं है ग्लानि इससे समकित शुद्ध कहाई ।
उत्तम द्रव्यमु अर्घ्य बनाकर पूजूं मनवच काई ।।

ॐ ह्रीं अनिर्विचिकित्सा मलदोष रहित निर्विचिकित्सा
गुणोपेत सम्यग्दर्शन मार्गभ्योऽर्घ्यं निर्विपामिति स्वाहा ।।३।।

मिथ्यादर्शन पन्थि जनों की थुति करे हर्षाई ।
ये ही दर्शन दोष करत ह जो भव भव दुखदाई ।।
खोटे मारग पन्थि जनों की नहीं प्रशस उचरे है ।
सम्यग्दर्शन पाले ज्ञानी, भवदधि से उतरे हैं ।।४।।

ॐ ह्रीं मूढ दृष्टी मल दोष रहित अमूढ दृष्टी गुणोपेत
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

पावन सम्यक्रत्न सुमारग अज्ञानी जन हरले ।
निन्दा होती धर्म तनी जब दर्शन मल स्वीकरते ।
रत्नत्रय का मारग ज्ञाता पर अवगुण को छिपावे ।
करता सम्यग्दर्शन शुद्ध जिनमारग हि दिपावे ।।

ॐ ह्रीं अनूप गुहन मल दोष रहित उपगूहन गुणोपत
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

सम्यग्दर्शन चारित्रनग से गिरता है यदि कोई ।
ज्ञानी होकर थिर नहीं करता समकित मलिन सुहोई ।।

ॐ ह्री कुगुरु अनायतन मल दोप रहित सम्यग्दर्शन
मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

एकान्त से दोपि जो है वह मांस खाना है लिखा ।
आदि अन्त न एक जिसका कपिल आदिक का भखा ॥
होत मिथ्या शास्त्र एसे देव जिनवर भासिया ।
नमन करते प्राणी इनको दोष दर्शन आखिया ॥

ॐ ह्री कुशास्त्र अनायतनमल दोष रहित सम्यग्दर्शन
मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

जो है कुदेवा राग युक्त भार्या के साथ मे ।
हस्त मे त्रिशूल राखे गग निकले माथ में ॥
है उपासक इनके प्राणी उन प्रशसा धारते ।
मलिन कर सम्यक रतन को तुच्छ भव स्वीकारते ॥

ॐ ह्री कुदेव उपासक अनायातन मल दोष रहित
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

अन्तर में धारे राग को वाहर मे अम्बर ले घने ।
धारले कुमेष मिथ्या जग में गुरु जो है वने ॥
हे उपासक, इनके प्राणि उन प्रशसा धारते ।
मलिन कर सम्यकरतन को तुच्छ भव स्वीकारते ॥

ॐ ह्री कुगुरु उपासका अनायतन मल दोस रहित
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

सर्वज्ञ का भाषित न होवे अल्प ज्ञानी का बना ।
एकान्त मत को पोषता जो शास्त्र मिथ्या है घना ॥

मनमे नामद लावते मामा नृप वन जाय ।
मदकरता दशन मलित क्हत जिनेश्वर राय ।।
ॐ ह्री मातुल मद मल दोप रहित सम्यग्दशनमार्गेभ्योऽघ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।१०।।
रूप नही थिर रहत है क्यो फिर मदमन ल्याय ।
मद करता दशन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।
ॐ ह्री रुप मद मल दोप रहित सम्यग्दशन मार्गेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।११।।
करत नही मद ज्ञान का नरको मे ले जाय ।।
मदकरता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।
ॐ ह्री ज्ञानापद मल दोप रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽघ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।१२।।
अथिर रूप इस सग का क्यो कर गर्व कराय ।
मद करता दशन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।
ॐ ह्री धन मद मल दोप रहित सम्यग्दशन मार्गेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१३।।
नाशवत तनु शक्ति है मद उरमे न बसाय ।
मद करता दशन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।
ॐ ह्री शक्ति मद मल दोप रहित मम्यग्दशन मार्गेभ्योऽघ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।१४।।
तप का मद जो करत है व्यथ तपस्या जाय ।
मद करता दशन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्री अगुप्त भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

बाल वृद्ध यूवक रहुं मरण नही हो जाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ॥

ॐ ह्री मरण भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

बज्रपात गिरकर कही मरण वीच नही पाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ॥

ॐ ह्री आकस्मिक भय मल दोप रहित सम्यग्दर्शन मार्गे-
भ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥

अंग पूर्व शास्त्र अरु अन्य ग्रन्थ राय़ के ।
सूत्र अर्थ ज्यो लिखा वाणिमे लायके ॥
करत अभिमान नहीं विनय अन्य ध्यायके ।
पूजहुं द्रव्य वसु भक्ति उर लायके

ॐ ह्री श्री जिनवर देव कथित बहुमानाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥८॥

८ ज्ञान के अंग—नाराच

व्याकर्ण अनुसार शब्द शुद्ध उच्चारते ।
करत न प्रमाद जीव अशुद्ध शब्द टारते ॥
होत शब्द शास्त्र जिन बदन ते निकारते ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति उर धारते ॥१॥

ॐ ह्री जिनवर देव कथित सम्यक शब्दाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

है उपासक इनके प्राणी उन प्रशसा धारते ।
मलिन कर सम्यकरतन को तुच्छ भव स्वीकारते ।।
ॐ ह्री कुशास्त्रोपासका अनायतन मल दोष रहित सम्यग्दशन जिन धर्मेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

७ भय दोहे

नष्ट न होवे इष्ट मम ना अनिष्ट मिल जाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्री इह लोक भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।
स्वर्गगति या दुर्गति होगा चित भरमाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्री परलोक भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।
मूर्छित होय शरीर मे दुख ना मम होजाय ।।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजजाय ।।
ॐ ह्री वेदना भय मल दोष रहित सम्यग्दशन मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।
मम रक्षक कोई नही मनमे शका लाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्री अरक्षाभय मल दोष रहित सम्यग्दशन मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामिति स्वाहा ।।४।।
मम वस्तु यह प्रिय अति चुरा नही ले जाय ।
भय करता वह रात समकित मल उपजाय ।।

श्लोक के अर्थ को चित्त में उतारते ।
हो यथार्थ शुद्ध ही गलत न विचारते ॥
करत स्वाध्याय जिन वाणिका आप जी ।
भूलते ना कभी पाप सर्व जाय जी ॥
होत उपधना-चार कहत गणराय जी ।
पूजहूं द्रव्य अष्ट भक्ति उर ध्याय जी ॥
ॐ ह्री श्री जिनवर देवकथित उपधनाचार विनयेभ्यौऽर्ध्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥
प्राप्त कर ज्ञान गुरु राय को छिपावते ।
करत पाप दुष्ट जीव नर्क उपजावते ॥
छुपात ना नाम गुरु ऊंच गति पावते ।
होत अनिन्हवाचार ही स्वभावते ॥
ॐ ह्री जिनवर देवकथित अनिन्हवाचार विनयेभ्योऽर्ध्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥

पूर्णार्घ्य—गीता

शकादि पंच विशति है दोष समकित जानिए।
होत नही सम्वकत्व शुद्ध रहत इनके मानिए ॥
छोड कर इन दोष मल को शुद्ध समकित कीजिए ।
नीरादि उत्तम द्रव्य लेकर शुद्ध समकित पूजिए ॥
ॐ ह्री श्री जिनवरदेव कथितसर्व मल दोष रहित शुद्ध
सम्यक्त्व मार्गेभ्योऽर्ध्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

श्लोक के अर्थ को चित्त मे उतारते ।
हो यथार्थ शुद्ध ही गलत न चितारते ।।

होत अर्थचार जिन वदन ते निकारते ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति उर धारते ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देवकथित अर्थाचार विनयेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

अर्थ अरु शब्द शुद्ध ध्यानमे लावते ।
करत न अशुद्ध पाठ अर्थ मे लुभावते ।।
होत उभयचार जिन कहत सु भावते ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति ना छिपावते ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देवकथित उभयाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

करत स्वाध्याय न अकाल मे जीव ही ।
बाँधते न पाप समय वाचते सदीव ही ।।
होत कालचार जो कहत जिनदेव ही ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति जो सदैव ही ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देवकथित कालाचार विनयेभ्यो ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

हस्त पैर धोय कर करत स्वावध्याय जी ।
वस्त्र भी शुद्ध हो शुद्ध निज काय जी ।।
कहन विनय चार शिव मार्ग का उपाय ही ।
पूजहू द्रव्य अष्ट भक्ति जो सदैव ही ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देवकथित विनयाचार विनयेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

ॐ ह्री श्री जिनवर कथित मन पर्यंय ज्ञानेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥

तीन लोक के द्रव्य सुपर्यय जाने युगपद ज्ञानी ।
नाम सुकेवल ज्ञान उसी का होय नही अभिमानी ॥
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कंचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सुवश कर ज्ञान होय सुखदाई ॥

ॐ ह्री श्री जिनवर कथित केवल ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

१३ प्रकार चरित्र अर्घ

पंच महाव्रत पच-समीति गुप्तित्रय शुभ कारे ।
होय त्रयोदश चारित्र ये ही मुनिगण इनको धारे ।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई ।
- पूजो मन वच काय सुवश कर ज्ञान होय सुखदाई ॥

ॐ ह्री श्री त्रयोदश चारित्रेभ्यो ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥

नाराच

होय भव्य जीव जो भाय सोल भावना ।
भ्रमत नही अथिर भव तीर्थ पद पावना ॥
हे यही देव जिनराज की देशना ।
अर्घ ले पूजते पाप सब नाशना ॥

ॐ ह्री श्री जिनवर देव कथित षोडस कारण भावना जिन धर्मेभ्योअर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

ॐ ह्री श्री स्याद्वाद अहिसा परमो धर्मेभ्यो नम. स्वाहा ।

(यहां ६ बार पुष्पो से जाप्य करें ।)

पांच ज्ञानों के अर्घ्य—जोगीराशा

इन्द्रिय अरु मन से सदा ही जाने पुद्गल रूप।
होय वह मति ज्ञानसु उत्तम जिनवर कहत सरूप ॥
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनवर कथित मति ज्ञानेभ्योऽर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥

वीरज अन्तराय सुश्रुत का होय क्षयोपशम भाई।
जाने वह सब द्रव्य सुज्ञानी अक्षर अनक्षर गाई ॥
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई।
पूजो मन वच काम सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनवर कथित श्रुत ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

द्रव्य क्षेत्र अरु काल की सीमा लेकर रूपी द्रव्य।
जानत अवधि ज्ञान यही है श्रद्धो प्राणी भव्य ॥
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनवर कथित अवधि ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मन में पर के रूपी द्रव्य होय वह जिस काल।
जाते मन पर्यय सुज्ञानी नमो सदा शुभ भाल ॥
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ॥

जय पच शतक मुनि धानिपेल,
नही डिगे आप प्रिय धर्म सेल । निष्कारण–।७।

जय गगा मे पुनि दिये डाल,
चित्तधार धर्म रह गुण विशाल । निष्कारण–।८।

जय तीर्थंकर चक्री महेश,
वृषधार गये मुक्ति हमेश । निष्कारण–।९।

आचार्य मुनि शुचि धर्म धार,
हो गये भवोदधि आप पार । निष्कारण–।१०।

सति मैना सुन्दर एक नार,
पति कुष्ट नशाया धर्म धार । निष्कारण–।११।

जय अजन सीता जानि नारि,
जय पावन धर्म हिय विचारि। निष्कारण–।१२।

इस विधि अनेको भविक राज,
वृषधार लहै है मुक्ति राज । निष्कारण–।१३।

जिन धर्म तनी महिमा महान,
सूरज से प्रभु नही होत गान–।१४।

निष्करण वन्धुसु धर्म एक,
भवि ध्यावे दुरित न रहे नेक । ।।१५।।

जयमाला

दोहा—जन धर्म प्रसाद से दुष्ट जीव तर जाय ।
गाऊं महिमा धर्म की सुगति पथ लगाय ॥

पद्धडी

जय धर्म अहिंसा सार जान,
है सब धर्मों में अति महान ।
निस कारण बन्धु सु धर्म एक
भवि ध्यावे दुरित न रहे नेक ॥१॥
जो जीव फिरे संसार माहि,
उनको तारक है अन्य नाहि ।
निष्कारण बंधु सु धर्म एक
भवि ध्यावे दुरित न रहे नेक ॥२॥
जय स्याद्वाद इक धर्म सार,
जो ध्यावे मुक्ति तुरत धार । निष्कारण-।३।
जय रत्न त्रय दश धर्म रूप
जय अनेकान्त महिमा अनूप । निष्कारण-।४।
सब भेद अहिंसा धर्म जान,
अरहन्त देव की गिरतसा । निष्कारण-।५।
जय रामचन्द्र हनुमान वीर,
धर धर्म हुए वे मुक्ति वीर । निष्कारण-।६।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवी
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधि करणं ।

अथाष्टकं—सोलहकारण पूजन चाल

संयम धर मुनि मन सम लेय, झारी भरकर आप चढ़ेय ।
पूजूं आय जय जिनवाणी पूजूं आय ॥
जिनवाणी मम माता आप, पूजै मिटे महा सन्ताप ।
पूजूं आय जय जिनवाणी पूजूं आय ॥
ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशांग श्रुत देवीभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाश नाय जलं निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

मलयागिरी शुभ चदन लाय, अरु केशर सधमे घिसवाय ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ॥
जिनवाणी मम माता आप, पूजै मिटे महा संताप ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ॥
ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्य. संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

अक्षत धवल धोय कर लाय, माता सनमुख पुंज कराय ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ॥
जिनवाणी मम माता आप, पूजे मिटे महा सताप ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ॥

घत्ता

जय जय जिन धर्म है अति परम नाशक कर्म ध्यावत है।
हम महिमागावे सुख उपजावे मुक्ति रमा को पावत है ।।
ॐ ह्रीं श्री स्याद्वाद जिन धर्मेभ्योऽनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।।१६।।

अडिल

दश लक्षण अरु रत्नत्रय सुखदाय जी।
भविजन पूजत धर्म अहिंसा पाय जी ।।
सुख सपत बढ जाय, दुरित नश जाय जी।
शिखरमणी भर्तार बने भवि राय जी ।।
इत्याशीर्वाद

(जिनवाणी) पूजन

श्री अरहन्त परम गुरु मुख से आई हो सब भरम मिटाय।
सत्यारथ पथ को दर्शाकर सम्यग्ज्ञान की ज्योति जगाय ।।
वह जिनवाणी आ उर मेरे वास करो मम कर्म खपाय।
आठो विधि से पूजू माता मन वच तन इक भाव लगाय ।।
ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशांग श्रुत
देवी अत्रावतरावतर संवौष्ट आव्हान।
ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशांग श्रुत देवी
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन।

धूप दशगी खेई जोर, भासुर कर्म उडै भक भौंर।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ॥

जिनवाणी मम माता आय, पूजैं मिटैं महा संताप।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ॥

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवोभ्यो अष्टकर्मं
दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥

केला कमरख अरु वादाम, श्री फल पिस्ता खारिक आम।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ॥

जिनवाणी मम माता आय, पूजैं मिटैं महा संताप।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ॥

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशांग श्रुत देवीभ्यो मोक्षफल
प्राप्तेय फल निर्विपामिति स्वाहा ॥८॥

ले जलादि सब अर्घ वनाय, स्वर्ण थाल भर तुम्हे चढाय।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ॥

जिनवाणी मम माता आय, पूजैं मिटैं महा सताप।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशांग श्रुत देवीभ्यो अनर्घ्यँपद
प्राप्तेय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्यो अक्षय पद
प्राप्तेय अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

पुष्प मनोहर चुन भरि थार, जाति मरुआ अरु कचनार ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ॥
जिनवाणी मम माता आप, पूजैं मिटे महा सन्ताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्य काम बाण
विध्वसनाय पुष्पानि निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

लाडू, पेडा, पूरी आन, भरकर थाल धरु पकवान ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ॥
जिनवाणी मम माता आप, पूजैं मिटे महा सन्ताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्य क्षुधा रोग
विनाश नाय नैवेद्य निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

जगमग जगमग होत उद्योत, घृत दीपक की सुन्दर ज्योत ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ॥
जिनवाणी मम माता आय, पूजैं मिटे महा सन्ताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्यो मोहान्ध-
कार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

विनयाचार प्रकार का, अर्थ प्रकाशन हार ।
वैनयिक यह नाम है शास्त्र महा सुख कार ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त वेव कथित ज्ञान दर्शनं चरित्रोप-चार लक्षण पच विध विनय प्ररूपकं निनय शास्त्राय अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

शिक्षा दीक्षा कर्म को, बतलावे यह शास्त्र ।
कृति कर्मा तसु नाम है, पढत शुद्ध हो गात्र ।

ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित शिक्षा दीक्षादि सत्कर्म प्रकाशक कृति कर्म नाम शास्त्रायअर्घ निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

द्रुम पुष्पादिक भेद अरु यत्या चार वत्ताय ।
दश वैकालिक शास्त्र को नमो भविक सिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित द्रुम पुष्पादिक दशाधिकारैं मुनिजनाचरण सूचक दश वैकालिक शास्त्राय अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

हो उपसर्ग मुनीश को सहनन फल दिखलाय ।
समय उत्तरध्ययन है नाम जिनेश्वर गाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित नानोपसर्ग सहनन निवेदक उत्तराध्ययन शास्त्राय ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

योग्य सेवन को कहै, सेवन होय अयोग्य ।
प्रायश्चित बतलाय है गण धर कहत सुयोग्य ।।

अथ प्रत्येक अर्घ

अगवाह्य चतुदश प्रकीर्णक

दोहा—सामायिक के काल सब मुनिगण के वतलाय।
शास्त्र महा जो है सही सामायिक कहलाय॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित सामायिक विस्तार कथक शास्त्राय अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा॥१॥

चौवीसो जिनराज की, श्रुति होवे जिस माही।
नाम शास्त्र है सस्तवन, जिनवर मुख निकसाही॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित वृपभादि नाम चतुर त्रिशदतिशय प्रातिहार्य लक्षण वरणादि व्यावर्णक चतुर विंशति स्तवन नाम शास्त्राय अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा॥२॥

चौवीसो जिनराज मे स्तवन एक का होय।
नाम वदना कहत है शास्त्र महा सुख सोय॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित अरहन्तादि नाम एकैकशोऽभिवदना विधान वोधित वन्दना नाम शास्त्राय अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा॥३॥

रात दिवस जो दोप हो निराकरण जिस माही।
प्रतिक्रमण वह शास्त्र है, नाम प्रथित सुखदाई॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित दिवस रात्री पक्ष चातुर्मास सवत्सरेर्यापथिकोत्माथ प्रभव सप्त प्रतिक्रमण प्रस्पक प्रतिक्रमण शास्त्राय अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा॥४॥

देव सुरी पदवी मिले पुण्य प्रकाशन हार ।
शास्त्र महा पुण्डरीक कहै गणधर कहत विचार ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित देवांगना पद प्राप्ति हेतु पुण्य प्रकाशक महापुण्डरीक शास्त्राय अर्घं निर्विपामीति स्वाहा ।।१३।।

पुरुष उमर अरु शक्ति सम सूक्षम थूल जु दोष ।
शक्ति देख दे दण्ड को वर्णन करत अदोष ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्थूल सूक्ष्म दोष प्रायश्चित पुरुप वयः सत्वाद्यपेक्षया प्ररुपयन्ति मशीति का शास्त्राय अर्घ्यं निर्विपामिति स्वाहा ।।१४।।

गीता–पूर्णार्घ्यं

अशीति सामयिक थुति अरु वदना प्रति क्रमण है ।
विनय अरु कृति कर्म दश वैकालिका का कथन है ।।
अष्ट उत्तरध्ययन का व्यवहार कल्पाकल्प है ।
वृहत कल्प पुण्डरीक वृहद पुंडरिक जल्प है ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित अग बाह्य चतुर्दश प्रकीर्णक २५०३३८० श्लोकेषु १५ अक्षर पद प्रमाण अगेभ्योपूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१५।।

शास्त्र महा सुख दाय है, व्यवहारा शुभ जान ।
स्वर्ण थाल मे अघ ले पूजें मन उमगान ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत देव कथित यतिनाम योग्य सेवन सूचक अयोग्य सेवन प्रायश्चित कथन कल्प व्यवहार शास्त्रायऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

यति श्रावक आचार को काल देख बतलाय ।
योग्या योग्य विचार के वर्णन कहत सुखाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहंत देवकथित काल माश्रित्य यति श्रावक नाम योग्यायोग्य निरूपक कल्पाकल्प शास्त्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

यति शिक्षा दीक्षा सही गण पोषण बतलाय ।
नाम महा कल्प कहा गण धर कहत सुखाय ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत देव कथित शिक्षा दीक्षा गण पोषणात्म संस्कार भावनोत्तमाय भेदेन पटकान प्रतिबद्ध यतिनामाचरण प्रतिपादय महाकल्प शास्त्रायऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

स्वर्गों मे उत्पत्ति है पुण्य महा सुखदाय ।
पुण्डरीक इस शास्त्र मे जिनवर भाषा आय ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत देवकथित भवन वास्यादि देवेषु उत्पत्ति कारण तम प्रकृति प्रति पादक पुण्डरीक शास्त्रायऽर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

गण धरा अरु हो तीर्थंकरा चरित्र पावन जामे सुख भरा।
सहस्र छप्पन लक्ष सु पाच है अंग ज्ञातृ कथा सु सांच है॥
ॐ ह्री अरहन्त देव कथित पंचाशत् सहस्राधिक पंच लक्ष ५५६००० पद प्रमाण ज्ञातृ कथागायऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा।२०।

उपासका ध्ययनंग है सही चरित श्रावक का सु कहत ही।
सहस सप्तति लक्षैकादशा कहत पद जिन देवसु मनवसा॥
ॐ ह्री अरहन्त देवकथित सप्तति सहस्राधिकैकादश लक्ष ११७०००० पद प्रमाण उपासकाध्ययनगायऽर्घ्यं निर्विपामीती स्वाहा।२१।

होय तीर्थंकर के सामने, तीर्थ प्रति मुनिवर दश दश वने।
कष्ट सहया उन मुनि राय ने पाई शिव नारी गुरु राय ने॥
चरित्र है जिनका उसमे सही नाम अन्त.कृत दश है यही।
सहस अष्टाविशति लक्ष है कहत तेविस जिन पद दक्ष है।
ॐ ह्री अरहन्त देव कथित अस्टाविशति सहस्राधिक त्रयो-विशति लक्ष २३२८००० पद प्रमाण अन्त कृत दशामायऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा।२२।

होय तीर्थंकर जिन रायजी तीर्थप्रतिदश दश मुनिरायजी।
सहन कर उपसर्ग महानजी पाय पचोत्तर पद ग्रान जी॥
हो कथा जिनकी उस अ ग मे अनुत्तरा उपपादिक भगमें।
लक्ष वान्नु हजार चवालिसा कहत पद अनुपम शिव नारीशा।

अथ ११ अग अर्घ (सुन्दरी)

महायति चारित जिसमें कहा, कहत आचारग शुभ लहा ।
सहस अष्टादश पद मानिए अर्घ्य पूजू वसु विधि ठानिए ।।
ॐ ह्री अरहन्त देव कथित अष्टादश सहस १८००० पद प्रमाण सहित आचारागायऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१५।।

ज्ञान विनया छेदुपथापना कहत सून्न कृताग शुभ घना ।
सहस छत्तिसो पद शोभना करत पूजा दुख नही होवना ।।
ॐ ह्री षट् त्रिंशत्सहस्र ३६०० पद प्रमाण सून्न कृतांगाऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।१६।

द्रव्य पट् आदिक व्याख्यान है होय थाना अग प्रधान है ।
सहस वैय्यालिस पद होत है पूज तिनको दोसव धोक हैं ।।
ॐ ह्री द्वाचत्वारिंशद सहस्र ४२००० पद प्रमाण स्थानांगाय ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।१७।

लोकनयसु प्ररुपण है जहा, नाम समवायागसु है तहा ।
सहस चौसठ अधिक सुलक्ष है पद जिनेश्वर भाखे दक्ष है ।।
ॐ ह्री चतुष्पष्ठयाधिक सहस्र लक्षैक १६४००० पद प्रमाण सहित समवायागायऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।१८।

अस्ति नास्ति सुसप्तहि भग है कहत व्याख्या प्रज्ञप्ति अ ग है ।
सहस अठ्ठाविस दो लाख है पद जिनेश्वर की शुभ भाख है ।
ॐ ह्री गणधर कृत प्रश्न, षष्टो मत्प्रप्रति पादक अष्टाविंशतो सहस्राधिक द्विलक्ष २२८००० पद प्रमाण व्याख्या प्रज्ञप्ति अ गाय निर्विपामीति स्वाहा ।१६।

पंच पदो की सख्या शुभ अनमोल जी ।
पूजों वसु विधि द्रव्य सु दिल को खोलजी ॥

ॐ ह्रीं दृष्टी वाद अंगस्य पंचाधिकषट्पंचशत सहस्राष्ट-षष्टी लक्षाष्ट कोटयैकारव पद प्रमाण १०८६८५६००५ पद प्रमाण द्वादशांगेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।२७।

पंच प्रज्ञप्ति अर्घ्यं (अडिल)

चन्द्र आयु गति विभव निरुपण है सही ।
चन्द्र प्रज्ञप्ति नाम लहै इस ही मही ॥
छत्तिस लाख सु पंच सहस पद जिन कहै ।
पूजू मन वच काय हर्ष उर में लहै ॥

ॐ ह्री पंच सहस्राधिक पटत्रिशद लक्ष ३६०५००० पद प्रमाण चन्द्रायुगति विभव प्ररुपिका चन्द्र प्रज्ञप्तये ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।२६।

रवि आयु गति होय निरुपण है सही ।
सूर्य प्रज्ञप्ति नाम लहै इस ही मही ॥
लक्ष पांच त्रय सहस महापद गण कहा ।
पूजू मन वच काय हर्ष उर में लहा ॥

ॐ ह्री श्री त्रिशत् सहस्रादिक पंचलक्ष ५०३००० पद प्रमाण सुर्यायुगति विभव प्ररूपिका सूर्यं प्रज्ञप्तये ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥२७॥

ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित चतुष्चत्वारिंशन् सहस्राधिक द्विनवति लक्ष ९२४४००० पद प्रमाण उपपादिक दशागाय- ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।२३।

प्रश्न उत्तर जिसमे सुशोभते प्रश्न व्याकरण मन मोहते ।
लक्ष तेरानु शुभ पाइया सहस सोलह पद जिन गाइया ।।

ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित षोडस सहस्राधिक त्रिनवति लक्ष ९३१६००० पद प्रमाण प्रश्न व्याकरणागायऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।२४।

उदय उदीर्णा कर्म वखानते वहुत सूत्र विपाक सुजानते ।
एक कोटि चौरासी हजार है पद महा जिसमे व्यवहार है ।।

ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित चतुर शीति लक्षाधिक एक कोटि १८४००००० पद प्रमाण विपाक सूत्रागायऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।२५।

चार कोटि सु पन्द्रह लाख है, सहस दो पद की शुभ शाख है ।
अ ग एकादश के पद यहा करत पूजन ये नुत हो अहा ।।

ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित द्विसहस्राधिक पचदश लक्ष चतुष्कोटि पद प्रमाण ४१५०२००० एकादशागाय पूर्णार्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२६।।

(अडिल्ल)

अरव एक वसु कोटि सु जिनवर गाइया ।
लक्ष सु अडसट सहस छपना मानिया ।।

एक कोटि इक अस्सी लक्ष सु जानिए ।
सहस पाच सु श्लोक सर्व जग मानिए ॥
चन्द्र प्रज्ञप्ति आदि सु पांचो मे कह्या ।
पूजू मन वच काय हर्ष उरमे लहा ॥

ॐ ह्रीं पच प्रज्ञप्ति सम्वन्धि पचाशत सहस्राधिक एकाशीति लक्षैक कोटि १८१५०००० पद प्रमाण पंच प्रज्ञप्तिभ्यो पूर्णाऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

सूत्र अर्घ्यं (गीतिका)

जीव कर्त्ता भोगता है कर्म का वहु काल से ।
है निरुपण जास सारे सूत्र नाउँ भाल से ॥
पद है अठासी लक्ष जिसमे देवगणधर गाइया ।
पूजू हूँ जिन शास्त्र जी को हर्ष मन उमगाइया ॥

ॐ ह्री जीवस्य कर्त्तृत्वभोगतृत्वादि स्थापकं भूत चतुष्टयादि भवनस्योत्थापकमष्टाशीति ८८००००० लक्ष पद प्रमाण सूत्र कृतागांय ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥२१॥

प्रथमानु योग

त्रेशट् शलाके पुरुष सयम कथन जिसमे है सही ।
प्रथमानु योगा नाम उसका प्रथित है इस जग मही ॥

वर्णन जम्बू दीप तनो जो करत हैं ।
नाम प्रज्ञप्ति जम्बु उसी का धरत है ।।
तीन लाख अरु सहस पचीस सु पद लहा ।
पूजू मन वच काय हर्ष उर मे लहा ।।

ॐ ह्री जम्बू दीप वर्णन कथिका पच विंशति सहस्राधिक त्रिलक्ष ३२५००० पद प्रमाण जम्बु दीप प्रज्ञप्तये ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२८।।

सागर द्वीप का वर्णन है जिस ग्रन्थ मे ।
सागर द्वीप सु नाम लहै जिस पन्थ मे ।।
लक्ष बावने सहस छत्तीस सु पद महा ।
पूजू मन वच काय हर्ष उर मे लहा ।।

ॐ ह्री द्वीप सागर स्वरूप निरूपिका पट त्रिंशत् सहस्राधिक द्वीपचाशतलक्ष ५२३६००० पद प्रमाण द्वीप सागर प्रज्ञप्तये ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२९।।

षट् द्रव्यो को कहै सरस शुभ भावसे ।
व्याख्या प्रज्ञप्ति नाम वही शुभ चावसे ।।
लक्ष चुरासी सहस तीस षट् पद कहै ।
पूजू मन वच काय हर्ष उर मे लहै ।।

ॐ ह्री रूप्यरूप्यादि षट् द्रव्य स्वरूप निरुपिका षट् त्रिंशत्सहस्राधिक चतुरशीत्ति लक्ष ८४३६००० पद प्रमाण व्याख्या प्रज्ञप्ते ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३०।।

चौवोस देवा है बल देव स्वामी ।
वसु देव चक्री जगत मे सु नामी ॥
वीर्यानूवादा कहे इन चरित्र ।
पद लक्ष सत्तर है पूजूं विचित्र ॥

ॐ ह्रीं बल देव वासुदेव चक्रवर्ति शक्र तीर्थंकरादि बल वर्णक सप्तति लक्ष ७०००००० पद प्रमाण वीर्यानुवाद पूर्वागाय ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३६॥

नाम अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व जो है ।
अस्तित्व नास्तित्व भग कहै है ॥
पद लक्ष षष्ठी है इसमे सुराजे ।
महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ॥

ॐ ह्रीं जीवादि वस्त्वास्ति नास्तिचेति प्रकथकं षष्ठी लक्ष ६०००००० पद प्रमाण मस्ति नास्ति प्रवाद पूर्वागाय ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३७॥

ज्ञानोत्पत्ति निमित्त अधिकारी ।
कहे इन स्वरूप सुज्ञान भडारी ॥
हीन एक कोटि महा श्लोक राजे ।
महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ॥

ॐ ह्रीं अष्ट ज्ञान तदुत्पति कारण तदाधार पुरुष प्ररूपक मेकौनकोटि ९९९९९९९ पद प्रमाण ज्ञान प्रवाद पूर्वागाय ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३८॥

सहस पच सु पद उसी मे देव जिनवर गाइया ।
पूजू हूँ जिन शास्त्रजी को हर्ष मन उमगाइया ॥
ॐ ह्रीं त्रिषष्टि शलाका महापुरुष चरित्र कथक पच सहस्र पद प्रमाण ५००० प्रथमानु योगाय ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥३२॥

अडिल

अरब एक अरु द्वादश कोटि सु मानिया ।
लक्ष तिरासी सहस अठावन जानिया ॥
पच महा पद उत्तम जिनवर भासिया ।
पूजू मन हर द्रव्य सु कलमप नाशिया ॥
ॐ ह्रीं द्वादशागानाम पचाधिकाष्ट् पचाशत् सहस्र त्र्यशीति लक्ष द्वादश कोटयैकारव ११२८३५८००५ पद प्रमाणेभ्ये पूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥३३॥

अथ चतुर्दश पूर्व ऽर्घ्य (भुजग प्रयात)

उत्पाद व्यय ध्रौव्य वस्तु है युक्त ।
उत्पाद पूर्व महा शास्त्र उक्त ॥
श्लोक एक कोटि है आप सुराजे ।
महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ॥
ॐ ह्रीं वस्तुनामुत्पाद व्यय ध्रौव्यादिक कथमेक कोटि १०००००००० पद प्रमाणमुत्पाद पूर्वागायऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥३४॥

लहै प्रव्याख्यान सू पूर्व ही जानो ।
कहै द्रव्य पर्यय स्वरूपं ही मानो ॥
अहो लाख चोरासी श्लोकं सुराजे ।
महा भक्ति पूजू वसु दव्य साजे ॥

ॐ ह्री द्रव्य पर्ययरूप प्रव्याख्यान निश्चलन कथक चतुरशीति लक्ष ८४००००० पद प्रमाण प्रव्याख्यान पूर्वागाय निर्विपामीति स्वाहा ॥४२॥

सुविद्यानुवाद हे शास्त्र विशिष्ट ।
शत पाच विद्या महा गुण गरिष्टं ॥
लघु सप्त सेकड कहै सुस्वरूप ।
पद एककोटिदश लक्ष रूपं ॥

ॐह्री पचशत महाविद्या सप्तशत क्षुद्रविद्या अष्टाग महाविद्या निमित्तानि प्ररुपयनदश लक्षाधिक कोटि ११०००००० पद प्रमाणविद्यानुवाद पूर्वागायऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४३॥

कल्याण पूर्व महा सुख स्वरूप ।
कहै तीर्थ चक्री के पुण्यं अनुपम् ॥
पद कोटि छब्बीस जिसमे सुराजे ।
महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ॥

ॐ ह्री तीर्थंकर चक्रवर्ति बल भद्र वासु देवेन्द्रादि पुण्य व्यावर्णक षडविशति कोटि २६०००००००० पद प्रमाण कल्याण प्रवांद पूर्वागाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४४॥

स्थान वर्णद्वि इन्द्रियादि सु प्राणी ।
वचन गुप्ति सस्कार भाषे सु ज्ञानी ॥
हे नाम सत्य प्रवाद पूव राजे ।
पद एक कोटि सु छेही विराजे ॥

ॐ ह्रीं वर्ण स्थान तदाधार द्वीन्द्रियादि जन्तुवचन गुप्ति सस्कार प्ररूपक षडधिक कोटि १००००००६ पद प्रमाण सत्य प्रवाद पूर्वांगाय ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥३६॥

आत्म प्रवाद सु पूर्व हीं जानो ।
है जिसमे आत्म स्वरूप बखानो ॥
पद कोटि छत्तीस उसमे सुराजे ।
महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानाध्यात्म कर्तृत्वादि युतात्म स्वरूप निरुपक षट्त्रिंशत कोटि ३६०००००००० पद प्रमाण आत्म प्रवाद पूर्वांगाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४०॥

बन्ध उदय अरु उपशम होहे ।
कर्म उदीरण निजर सोहै ॥
कर्म प्रवाद कहै इन स्वरूप ।
पद कोटि अस्सी सुलक्ष अनुपम ॥

ॐ ह्रीं कर्म बन्धोदयोपशमोदीरणा निजरा कथकमशीति लक्षाधिक कोटि १८०००००० पद प्रमाण कर्म प्रवाद पूर्वांगाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४१॥

दोहा—कोटि पचान्नु कहै लक्ष पचासा पांच ।
पूर्व चतुर्दश श्लोक मे जिनवर भाषे साच ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्वांगाय पंचाधिक पंचाशतलक्ष पंचनवति कोटि ९५५०००००५ पद प्रमाणाय पूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥४८॥

१२ अङ्ग के भेद में पांच चूलिका के अर्घ्यं (जोगीराशा)

वर्षे जल अरु रोके कैसे मन्त्र तन्त्र वललाती ।
जलगति नामसु चूलिक इसका जिनवाणि कहलाती ॥

कोटि दोय अरु लाख सुनव है सहस नवासी सौहै ।
द्वौशत् पद भी पूजू वसु विधि ज्ञान महा गुण मौहे ॥

ॐ ह्रीं जल स्तभन जल वर्षादि हेतु भूत मंत्रतत्रादि प्रतिपादिका द्विशताधिक नवाशीति सहस्र नव लक्ष द्वय कोटि २०९८९२०० पद प्रमाण जलगतचूलिकायैऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥४९॥

अल्प समय मे बहुयोजन तक गमनागमन सु होवे ।
मन्त्र तन्त्र सब विद्या इसमे थल गत चुलिक जोवे ॥

कोटि दोय अरु लाख सुनव है सहस नवासी सोहै ।
द्वौशत पद भी पूजूं वसु विधि ज्ञान महा गुण मोहे ॥

अष्टाग वैद्यक सुगारडी विद्या ।
महा मन्त्र तन्त्रादि नाशक कुविद्या ।।
लहै प्राणवाय मुशास्त्र महानतम् ।
यजू तेरे कोटि महाश्लोक कान्तम् ।।

ॐ ह्री अष्टाग वैद्य विद्या गारुडी विद्या मन्त्र तन्त्रादि निरुपक त्रयोदश कोटि १३०००००००० पद प्रमाण प्राणावाय पूर्वांगाय ऽध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।४५।।

अलकार छन्दो हे व्याकण जानो ।
किरिया विशाल कहे तुम प्रमाणो ।।
नव कोटि श्लोक महान्त सुराजे ।
महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ।।

ॐ ह्री छन्दोऽलकार व्याकरण कला निरूपक नव कोटि ९०००००००० पद प्रमाण किरिया विशाल पूर्वांगाय ऽध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।४६।।

लोक बिन्दु सार है शास्त्र अपूव ।
निर्वाण कारण कहैं सुख स्वरूप ।।
पंद साडे बारह कोटि सुराजे ।
महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ।।

ॐ ह्री निर्वाण पद सुख हेतु भूत सार्द्ध द्वादश कोटि १२५००००००० पद प्रमाण लोक बिन्दु सार पूर्वांगाय ऽध्य निर्विपामिति स्वाहा ।।४७।।

ॐ ह्री सिंह व्याघ्र गज तुरग नर सुरादि रूप विधायकमंत्र तन्त्रादि उपदेशिका पूर्वोक्त २०९८९२०० पद प्रमाण रूप गत चूलिकायै ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥५२॥

अडिल

कोटि दशी उनचास लाख बतलाइया ।
सहस छियालिस पद महा जिन गाइया ॥

मिलकर पांचो चूलिक के पद जानिए ।
पूजू मनवच काय हर्ष उर ठानिए ॥

ॐ ह्री षट् चत्वारिशत सहस्राधिक नव चत्वारिशत् दश कोटि १०००४६०४९ पद प्रमाण पचचूलिकाभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग जिनवाणि मातेभ्यो नमः स्वाहा ॥

(यहां पुष्पों से ९ बार जाप करे)

जयमाला

मात जिनवाणी सदा तु निर्मला सुख दायिनी ।
जिन देव पर्वत से निकल कर-कु ड गण धर आयनी ॥

है शारदे अम्बेसदा अज्ञानता को नाशनी ।
गात जयमाला अबे हम सुखद हो मृदु भाषनी ॥

ॐ ह्रीं स्तोक कालेन बहु योजन गमनागमानदिक हेतु भूत मन्त्र तन्त्रादि निरुपिका पूर्वोक्त २०६८६२०० पद प्रमाण स्थल गत चुलिकायै ऽघ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥५०॥

इन्द्रजाल माया का करना मन्त्र तन्त्र को जानो ।
मायागत है नाम चूलिका जिनवर भाषी मानो ॥
कोटि दोय अरु लाख सुनव है सहस नवासी सोहै ।
द्वौशत पद भी पूजू वसु विधि ज्ञान महा गुण मोहै ॥

ॐ ह्रीं इन्द्र जलादि मायोत्पादक मन्त्र तन्त्रादि निरुपिका पूर्वोक्त २०६८६२०० पद प्रमाण मायागत चूलिकायै ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥५१॥

गमन गगन में होवे कैसे उपदेशे यह भाई ।
मन्त्र तन्त्र सब विद्या होवे गमन चूलिका गाई ॥
कोटि दोय अरु लाख सुनव है सहस नवासी सोहै ।
द्वौशत पद भी पूजू वसु विध ज्ञान महा गुण मोहे ॥

ॐ ह्रीं गमनागगनादि हेतु भूत मन्त्र तन्त्रादि प्रकाशिका पूर्वोक्त २०६८६२०० पद प्रमाण आकाश गमन चूलिकायै ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥५१॥

सिंह व्याघ्र गज घोटक गाई नर सुर रूप धराई ।
मन्त्र तत्र सब विद्या होई, रूप चूलिका गाई ॥
कोटि दोय अरु लाख सुनव है सहस नवासि सोहै ।
द्वौशत पद भी पूजू वसु विधि ज्ञान महागुण मोहै ॥

जय कर्ण योग द्यु ति है पिछान
है जिनवर की यह सत्य वाण।
जय चारित्रं जिन कहत सोई
जय जिसमे श्रावक धर्म होई ।६।
चरणानु योग तसु जान नाम,
जय पूजे तज हम सर्व काम।
जय जीवा जीवसु पुण्य पाप,
जय सप्त तत्व का है कलाप ।७।
द्रव्यानुयोग चौथा कहाय,
ये चार योग जिनवर बताय।
जय इकसो बारह कोडि जान,
जय लाख तिरासी है प्रमाण ।८।
जय सहस अठावन पचमान,
पद द्वादशांग जिनवर बखान।
जय कोटि इकावन अष्ट लाख,
शत छे हजार चोरासी भाख ।६।
जय बीस एक अध श्लोक धाय
जय एक एक पद को बताय।
जय दोष रहित जिन वाणि मात,
जय तुम पद नावे जोड हाथ ।१०।
तुम सन्त सुजन योगीन्द्र ध्याय,
वह भव दधि से झट पार जाय।

पद्धडी

जय जिनवर वाणी परम रूप
तुम ही भव तारक हो अनूप ।
जय जिन वदनाम्बुज निकसि देवि
जय गण घर गूथी हर्ष ठेवी ।१।
जय तीन लोक मण्डन स्वरूप
जय भविजन तारक हो अनूप ।
जो श्रद्धै माता हृय धार,
वह पावे ज्ञानामृत अपार ।२।
जय मिथ्या तिमिर विनाश सूर्य
जय शिव मग दशक हो सु घूय ।
जिन घ्यान धरा तज के सुमान,
नहि रहा उसे संशय कुज्ञान ।३।
जय तीन शतक छत्तीस जान
मति ज्ञान भेद लखिए प्रमाण ।
श्रुत दोय अनेको भेद ठान
जय द्वादशांग जिनवर बखान ।४।
जिन गण धर नरपति ऋद्धि खास,
जय पुण्य पुराकृत का प्रकाश ।
जय लोक अलोकरु तीन काल,
कह लक्षण चारो गति सुहाल ।५।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य सम्वन्धि कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ श्री श्री त्रैलोक्य सम्वन्धि कृत्रिमाकृत्रिम जिन
चैत्य समूह अत्र मम सन्निहितो भव
भव वषट सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकम्–सोरठा

लाउं मिष्ट सुवार सौरभ अति आवे घनी ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य
समुहभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

चन्दन सौरभसार केशर सग घिसाइए ।
चैत्य महाजिन सार, पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति जिन चैत्य समूहभ्यः
ससार ताप विनाशनाय चन्दनं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

तंदुल धवल सुधार पु ज करू जिनराज ढिग ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

जय आदि अंत इक सार आप,
सूरजमल तव करता सुजाप ।

धत्ता

जय जय जिनवाणी हे श्रद्धानी संशय हानि पूजत है ।
जय तत्व प्रकाशक भ्रम तम नाशक ज्ञान निकाशक हूजत है ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन सुखोत्पन्न द्वादशांग जिनवाणी मातायै अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

दोहा—वाणी है अरहन्त की जो भवि कंठ लगाय ।
पूजत हर्ष बढाय कर केवल ज्ञान उपाय ।।

इत्याशीर्वाद

जिन चैत्य पूजा

दोहा—सौम्य सुभग त्रैलोक्यमें, समचतुर संस्थान ।
कृत्रिम अकीतम जानिए, विम्ब महा सुखदान ।।

आह्वानन् स्थापन करू हिए विराजो आन ।
पूजू मन वच काय से पाउपद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह अत्राव तरावतर सवौषट आह्वानं ।

आम्र काम्र अनार सेव रसीले लीजिए।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ॥

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति चिन चैत्यसमूहभ्यो मोक्ष फल
प्राप्रये फलंनिर्विपामीति स्वाहा ॥८॥

द्रव्य अष्ट प्रकार, लेय चढाउं भावसो।
चैत्य महा जिन सार, पूजत पाप मिटे सदा ॥

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्यवर्त्ति जिन चैत्य समूहभ्योऽनर्घ्यं पद
प्राप्तये अर्घ्यं निर्विपामीनि स्वाहा ॥९॥

प्रत्येक पूजा-गीता

इस लोक पातालय में मनहर बने अनादि हे सही।
शुभ रत्न कचन उपल निर्मित चैत्य सुन्दर तिस मही ॥

त्रैकाल में मन वचन तन से मे नमू नित चरण में।
वसु द्रव्य उत्तम अर्घ्यं पू जू होऊं उनकी शरण में ॥

ॐ ह्री पाताल लोक सम्बन्धि कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यभ्यो
अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

होय मध्यम लोक में जो जैन विम्ब सुहावने।
है वने अरु जो अनादि मन सभी के भावने ॥

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति जिन चैत्य समूभ्यो
अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

चपा जुई की डार फूल वनस्पति लाइया।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ॥

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति जिन चैत्य समूहभ्य
कामवाण विनाशनाय पुष्पाणी निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

नाना व्यजन सार फैणी गूजा पायसी ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ॥

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति जिन चैत्य समूहभ्य क्षुधा
रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

दीपक ज्योति सुधार मोह अन्ध भागे सदा।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ॥

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति जिनचैत्यपमूहभ्यो मोहान्धकार
विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

सोरभद्रे सुखकार धूप अग्निमे डारिये।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ॥

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्यवर्त्ति जिनचैत्यसमूहभ्यो अष्ट कर्म
दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥

जयमाला

दोहा–चैत्य महा जिन दर्श से भव बेडी कट जाय।
कहुँ महा गुण मालिका भव्य जीव सुखदाय ।।

पद्धडी

जय वीत राग सर्वज्ञ देव
भवि जीवो के तारक सुएव।
जिनकी छवि है यह चैत्य रुप
जो कृत्याकृत्रिम दोय रुप ।।१।।

तव सुन्दर सुभग ललाम देह,
सम चतुर धरे संस्थान एह।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।२।।

तब दर्शन करते भव्य जीव,
वह लहत अनन्ता सुख सदीव।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्यकृत्रिम दोय रूप ।।३।।

जय दोषो से हो रहित आप,
हम करते प्रभु तुम नित्य जाप।

त्रैकाल मे मन वचन तन से मैं नमू तिन चरण मे ।
वसु द्रव्य उत्तम अघ पूजू होउ उनकी शरण मे ॥

ॐ ह्री श्री मध्य लोक सम्वन्धि कृत्रिमाकृत्रिमासख्या जिन चैत्यभ्योऽघ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

लोक ऊपर मे वने है विम्ब जिन सुखदाय है ।
है अकृत्रिम मन हरे अरु पाप सव नशजाय है ॥

त्रैकाल मे मन वचन तन से मैं नमू जिन चरण मे ।
वसु द्रव्य उत्तम अर्घ पूजू होउ उनकी शरण मे ॥

ॐ ह्री उर्ध्वलोक सम्वन्धि असख्य जिन चैत्यभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

लोक तीनो मे मनोहर बिम्ब अति सुखदाय है ।
वसु कोटि छप्पन लक्ष सत नव सहस मन हर्षाय है ॥

अरु चार शत इक बीस प्रतिमा है अनादि काल से ।
जो हे असख्या कृत्रिम पूजू योग त्रय नमु भालसे ॥

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य सम्वन्धि कृत्रिमाकृत्रिमासख्य जिन चैत्यभ्योऽघ्य निर्विपामीती स्वाहा ॥४॥

ॐ ह्री श्री जिन विम्ब देवेभ्योनम स्वाहा

(नव वार पुष्पो से जपे)

जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।९।।

जय अघोमध्य अरू ऊर्ध्व लोक,
जय कृत्या कृत्रिम विम्व थोक।

जिनकी छवि है यह चैत्व रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोंय रूप ।।१०।।

जिन चैत्य नमु मै बार बार,
सूरजमल को प्रभु तार-तार।

जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।११।।

जय जय जिन प्रतिमा होय,
अकृतिमा कृतिमा प्रतिमा ध्यावत है।

धत्ता

जय पूज रचावे शीष नवावे,
शिव सुन्दर को पावत है।

ॐ ह्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्य
समूहभ्योर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा।

तीन लोक मे बिम्ब है कृत्याकृत्रिम सार।
पूजो मन वच काय से होवे भव दधिपार।।

इत्याशीर्वाद

जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।४।।

जय पर्यंकासन ध्यान रूप,
जय खड्गासन हो प्रभु अनूप ।
जिनकी छवि यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।५।।

जय अविचल गुण के हैं न, पार
भवि जीवदर्शसम्यक्त्व धार ।
जिनकी छवि है यह चैत्व रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।६।।

जय भव्य कमल विकसित दिनेश,
जय नरपति सुरपति नुत खगेश ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।७।।

नासाग्रदृष्टिरन सकल धार,
भवि जीव नमे तुम बार बार ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।८।।

जय स्वर्ण रत्न निर्मित महान,
जय उपल बनी सुन्दर सुजान ।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति- कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

धोय अक्षत थाल भरीजिए पुंज करके अखय पद लीजिए।
मैं यंजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भावसो।
ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

केवड़ा अरु चपक सोहना पुष्प मरुवामन अति मोहना।
मैं यजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो।
ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
काम वाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

विविध व्यंजन थाल भराइया, रस मधुर लेकर हरषाई।
मै यंजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भावसो।
ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

हेम दीपक घृत भर लीजिए, जगमगातो मोह हनीजिए।
मै यंजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भावसो ॥
ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

धूप दश विधि सौरभ आवती, खेय भासुर कर्म जलावती।
मै यंजु जिन मन्दिर चावसो, सकल पाप मिटें शुभ भावसो ॥

श्री जिन चैतालय पूजा (अडिल)

कृत्याकृत्रिम सुभग जिनालय जानिए ।
ध्वजा फरखे स्वर्ग दूति सम मानिए ।।
सुन्दर शिखर उतग मनोहर सोहने ।
पूजो जिनवर निलय महा मन मोहने ।।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय
अत्रावतरावतर सवौषट आव्हान ।।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यालय
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा कृत्रिम जिन चत्यालय
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक (सुन्दरी)

कनक झारी जल भर लाइया, जन्म मृत्यु जरा त्रय ढाइया ।
मैं यजु जिन मदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो जम
जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

दाह भजन चन्दन बावना सघ केशर घिसकर लावना ।
मैं यजु जिन मदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।

ॐ ह्ली श्री त्रिलोकवर्ति- कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

धोय अक्षत थाल भरीजिए पुंज करके अखय पद लीजिए।
मैं यंजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भावसो।

ॐ ह्ली श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

केवड़ा अरु चंपक सोहना पुष्प मरुवामन अति मोहना।
मैं यंजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो।

ॐ ह्ली श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
काम वाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

विविध व्यजन थाल भराइया, रस मधुर लेकर हरषाई।
मै यंजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भावसो।

ॐ ह्ली श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

हेम दीपक घृत भर लीजिए, जगमगातो मोह हनीजिए।
मै यंजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भावसो ॥

ॐ ह्ली श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

धूप दश विधि सौरभ आवती, खेय भासुर कर्म जलावती।
मै यंजु जिन मन्दिर चावसो, सकल पाप मिटे शुभ भावसो ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
अष्टकर्म दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ॥७॥

फनस दाडिम आदि सुलेवना, सेवकेला फल मन मोहना।
मैं यजु जिन मंदिर चावसो, सकल पाप मिटे शुभ भावसो॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
मोक्ष फल प्राप्तये फल निर्विपामीति स्वाहा ॥८॥

नीर आदिक द्रव्य सुलीजिए, शुभ जिनालय अर्घ्य सु पूजिए।
मैं यजु जिन मंदिर चावसो, सकल पाप मिटे शुभ भावसो॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥९॥

(प्रत्येक पूजा) गीता

पाताल में हं निलय सुन्दर जो अनादि काल से।
सप्त कोटि सप्त द्वय लरा में नमु नित भाल से॥

जल चन्दनादि सुद्रव्य लेकर थाल भर मन लायके।
पूजहू जिन भवन सारे भक्ति भर गुण गाय के॥

ॐ ह्रीं श्री पाताल लोक सम्बन्धि सप्तकोटि द्विसप्तति
लक्षाधिक ७७२००००० कृत्रिमाकृत्रिम जिन
चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीतिस्वाहा ॥१॥

शत चार अट्ठावन भवन शुभ है अकीर्त्तम जेलसे ।
अगणित लसे कीर्त्तम भवन शुभ दर्श से पातक नशे ॥
जल चन्दनादि सुद्रव्य लेकर थाल भर मन लायके ।
पूजहूं जिन भवन सारे भक्ति भर गुण गायके ॥

ॐ ह्वी मध्यलोक सम्वन्धि अष्ट पचाशत चतुश्शत अकृत्रि मसंख्यंचकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

उर्ध्वलोकी भवन सुन्दर रत्न के अद्भुत महा ।
चतु अष्ट लक्षा सप्त नवति सहस तेवीसी कहा ॥
जल चन्दनादि सुद्रव्य लेकर थाल भर मन लायके ।
पूजहूं जिन भवन सारे, कर्म सव नश जाय है ॥३॥

ॐ ह्वी उर्ध्वलोक सम्बंधि चतुश्शीतिलक्ष सप्त नवति सहस त्रयो विशति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

उर्ध्व अध अरु मध्य माही भवन सुन्दर जानिए ।
गणधर असख्या कहत शुभ जे पूज तिनकी ठानिए ॥
पूजते सुर असुर नरपति द्रव्य मनहर चावसे ।
हम भी नमेमन शुद्ध हो जिन भवन भावे भावसे ।

ॐ ह्वी त्रलोक्य सम्बन्धी असख्य कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
अष्टकर्म दहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

फनस दाडिम आदि सुलेघना, सेवकेला फल मन मोहना ।
मैं यजु जिन मंदिर चावसो, सकल पाप मिटे शुभ भावसो ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
मोक्ष फल प्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

नीर आदिक द्रव्य सुलीजिए, शुभ जिनालय अर्घ्यं सु पूजिए ।
मैं यजु जिन मंदिर चावसो, सकल पाप मिटे शुभ भावसो ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
अनर्घ्यं पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

(प्रत्येक पूजा) गीता

पाताल मे ह निलय सुन्दर जो अनादि काल से ।
सप्त कोटि सप्त द्वय लख मे नमु नित भाल से ॥

जल चन्दनादि सुद्रव्य लेकर थाल भर मन लायके ।
पूजहु जिन भवन सारे भक्ति भर गुण गाय के ॥

ॐ ह्रीं श्री पाताल लोक सम्बन्धि सप्तकोटि द्विसप्तति
लक्षाधिक ७७२००००० कृत्रिमाकृत्रिम जिन
चत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा ॥१॥

तिन भवन नमे हम वार वार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ॥
जय ध्वजा उड़े शुभ सिखर सार,
मनु स्वर्ण संपदा को पुकार ।
तिन भवन नमे हम वार वार,
कर भक्ति विनय उर धार वार ॥
जय स्वर्ण रत्न निर्मित लखाय,
जय उपल मु मृतिका के लहाय ।
तिन भवन नमे हम वार वार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ॥
जय वने अनादि काल जान,
उन कहत अकीरतम है सुजान ।
तिन भवन नमे हम वार वार,
भक्ति विनय उर धार धार ॥
जय पुरुष किये रचना सुसार,
जिन कृत्रिम नामसु सुखद सार ।
तिन भवन नमे हम वार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ॥
जय अधोमध्य अरु ऊर्ध्व जान,
जय तीन लोक मे निलय आन ।
तिन भवन नमे हम बार वार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन चैत्यालयेदेवेभ्यो नम स्वाहा
(नववार पुष्पो से जपे)

जयमाला

दोहा—कृत्या कृत्रिम है सही तीन लोक जिन थान ।
कहुमहा जय मालिका होय पाप की हान ।

पद्धडी

जिन मन्दिर प्रभु के सुभगसार,
जय कृत्या कृत्रिम शुभ अपार ।
तिन भुवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय शिखर वने है अति उतग,
जहा होवे मानी मान भग ।
तिन भवन नमे हम वार वार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय गगन चुम्बि दीसे अपार,
जिन दशन नाशे अन्धकार ।
तिन भुवन नमे हम वार वार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय स्वर्ण कलश बहु चमचमाय,
जय करत प्रशसा देव आय ।

आरती नवदेवता

ॐ जय नव देवं स्वामी, प्रभु जय नव देवं स्वामी ।
हम नित बन्दे मन वच २ जय अन्तरयामि ॥ॐ॥१॥

अरहन्त सिद्ध आचारज पाठक, मुनि हो गुण धामि-स्वामी- ।
मंगलमय हो जिनवर २ हो शुभ शिव गामी ॥ॐ॥२॥

विम्ब जिनालय पूजे नित प्रति, वाणि जिनवर की-स्वामी-।
धर्म अहिसा ध्यावे २ होय कर्म रज खामी-स्वामी ॥ॐ॥३॥

रत्न अमोलक दीपक लेकर, आरती करूं थारी-स्वामी-।
वीर सिन्धु गुण गावें २ सूरज शिव गामि ॥ॐ॥४॥

जहा बैठ भविक आनन्द पाय,
जय जिन गुण गावे प्रीति लाय ।

तिन भवन नमे हम वार वार,
कर भक्ति विनय उर वार धार ।।

हम नमन करे उन भवन सार,
सूरजमल भक्ति उर धार धार ।।

तिन भवन नमे हम वार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।

धत्ता

जय जय जिन मन्दर पूज पुरन्दर सुन्दर मन से वन्दे है ।
हम भी नित वन्दे वहु आनन्दे काटे भव के फन्दे है ।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।

दोहा–जिनागार जिनराज के पूजे मन वच काय ।
नाशे अघ वहु काल के पावे सुख अधिकाय ।।

इत्याशीर्वाद

मन्दिर है अनुपम शुभ सार,
लसे मनोहर गुण आधार ।
धार्मिक जन रहते सुखकन्द,
नित्य कर्म पट् करत निफन्द ॥२॥
ऊर्जयन्त गिरी अति उत्तंग,
होवे मानि मानसुभग ।
नाम अपर गिरनार लखाय,
दर्श करत भविपाप नशाय ॥३॥
एक समय नेमि भगवान,
आय समवसृत अति शुभ जान ।
षट् ऋतु के फल फूले सोय,
करत अ चभा भविजन लोय ॥४॥
वन रक्षक चाल्यो हर्षाय,
ले सन्देश कृष्ण ढिग जाय ।
शुभ सन्देश सुना भूपाल,
सप्त पेड जा नमत सुभाल ॥५॥
माली को सन्तोष कराय,
परिजन पुरजन साथ लहाय ।
दर्श करन नृप कृष्ण सुजाय,
हर्ष हर्ष कर पैर उठाय ॥६॥
ऊर्जयन्त गिरी चढ हर्षाय,
समवसरण में पहुचे जाय ।

सकल सौभाग्य व्रत कथा

दोहा

प्रथम प्रणमु आदीश ले चोवीसो जिनराय ।
अरू गण धर ज्ञानी मुनि नमो नमो सिर नाय ।।१।।
पच परम गुरू को नमो स्याद्वाद जिन धम ।
सप्त भगि वाणी नमो बतलाती वृप मर्म ।।२।।
चैत्य नमो भवि भाव से सब जिनालय सार ।
इन नव देवो को नमो हर्ष हृदय मे धार ।।३।।
कु द कुन्द स्वामो महा शाति सिन्धु गुण खान ।
वीर सिधु गुरुवर नमो होवे आतम ज्ञान ।।४।।
कथा सकल सौभाग्य व्रत कहु आगम अनुसार ।
पढे सुने व्रत ले सदा होवे भव दधि पार ।।५।।

चोपाई

भरत क्षेत्र सुन्दर शुभ जान,
लसे अमर पुर व्रत गुण खान ।
देश महा सौराष्ट्र महान नगरि,
द्वारिका परम प्रधान ।।१।।

ध्यान लगाकर सुन वृत्तान्त,
जो है अति हो करुणा क्रान्त ।
भरत क्षैत्र अन्तर्गत जान,
मगध देश है नाम प्रधान ॥१३॥
लक्ष्मी गांव नामक इक ग्राम,
लसत मनोहर सुख का धाम ।
बाग वाटिका से शोभन्त,
मदिर ध्वज कलशा जय वन्त ॥१४॥
जैन धर्म का बहुत प्रचार,
पाले जन श्रावक आचार ।
मुनि को दान देय हर्षाय,
ताके फल से दिव गति पाय ॥१५॥
सोम सेन ब्राह्मण इक जान,
रहत वहा गुणधर धनवान ।
परम सुन्दरी ताकिनार,
लक्ष्मी मति प्यारी भर्तार ॥१६॥
एक दिना मुख एना माहि,
निरखे थी वह परम सुखाहि ।
आहार समय आये मुनिराज,
है समाधि गुप्त गुरुराज ॥१७॥
लक्ष्मीमति के दर से जाय,
देख मुनि की निन्दा गाय ।

तीन प्रदक्षिण दई सुखदाय,
नृप श्रीकृष्ण बहुत हर्षाय ॥७॥
दर्शन कर बहु स्तवन करेय,
बार बार नमि पद सुख देय।
मनु कोठे मे बैठे जाय,
मनमे फूले नाहि समाय ॥८॥
कल्मष हारी भविहित कार,
दिव्य ध्वनि वर्षे सुख कार।
सुन वाणि शुभ प्रश्न कराय,
रुक्मणि रानी अति हर्षाय ॥९॥
भो भो ? जग तारक श्री भगवान,
आप महा हो सुगुण सुखान।
मैंने पूरब जन्म मे आय,
पुण्य किया वो अति सुखदाय ॥१०॥
याते मम पति कृष्ण मुराय,
स्नेह बढायो मोद कराय।
तामन प्यारी हूं गण राय ?
कारण कौन बतावो गय ॥११॥
प्रश्न सुनावरदत्त गणेश,
सुन रुक्मणि उत्तर कछु लेश।
तू है सरल गुणो की खान,
है सौभाग्य रति पतिमान ॥१२॥

पाली अन्य जनोने आय,
हुई बड़ी वह भिक्षा लाय ।
उदर भरे इहविधि दुख पाय,
पाप कर्म से बहु घवडाय ॥२४॥
नदी नर्मदा के तट सार,
महा मुनीश्वर ध्यान सुधार ।
रात्री योग करे सुखकार,
आतम चिन्ते वार बार ॥२५॥
बाला दर्श किये मुनिराज,
मन ही मन चिन्ते सुखसार ।
मुनिवर भविष्य चितारोसार,
फिर उपदेश्यों ही सुखकार ॥२६॥
वाला श्रवण कियो उपदेश,
श्रद्धाकर बहु भक्ति विशेष ।
ग्रहण किया व्रत ही सुखदाय,
अरु सम्यक्त्व महा मन लाय ॥२७॥

दोहा

आयुष्यान्त मे मरण कर कोकण देश मझार ।
शोभा नामक ग्राम में नन्दन सेठ सुखार ॥१६॥
पत्नि तिन नन्दावति महागुणों की खान ।
पैदा हुई मल्लिमति ताकुक्षी मतिमान ॥२०॥

ननगा दुष्ट पशु तु पड,
वचन उचारे थे अति भड ।।१८।।
सुन मुनिवर अन्तराय कराय,
विन भोजन ही वन मे जाय ।
ता निन्दा से पाप अपार,
बान्ध्यो भव भव मे दुखकार ।।१६।।
रोग भगन्दर हुआ महान,
पीडा अति ही कष्ट प्रदान ।
सहि न सके पीडा बहुहोय,
आर्त ध्यान से मरण सु होय ।।२०।।
भैंस कूकरि सूकरि खरि,
आर्तध्यान से दुखकर मरी ।
इस क्रम से भव भव दुख पाय,
भ्रमण करत पट नरके जाय ।।२१।।
निकल वह भव धरे अनेक,
दुख वर्णन करि सके न नेक ।
भ्रमण करत उपजी इक ग्राम,
नदी नर्मदा तट के धाम ।।२२।।
अन्त्यज कुल मे वहु दुख पाय,
पाप कर्म उदय अति आय ।
मात पिता भी स्वर्ग प्रयाण,
फिर पाया वहु दुक्ख महान ।।२३।।

कहत मुनीश्वर से नमि भाल,
ऐसो वृत मुख हो तत्काल।
मुनिवर सुनकर विनय अपार,
व्रत वतलायो सुखद सुसार ॥३३॥

नाम सकल सौभाग्य महान,
जो व्रत हे यह मुक्ति प्रदान।
पालो विधि वत त्यज सब मान,
अन्त महा उद्यापन ठान ॥३४॥

याते पा सौभाग्य महान,
और पति का प्रेम सुजान।
व्रत विधि बतलाकर मुनिराय,
वन मे पहुँचे श्रीगुरुराय ॥३५॥

मुनिवर की वाणी श्रद्धेय,
मल्लिमती व्रत करत स्वमेय।
अष्ट्र वर्ष तक कीना भाग,
अरू उद्यापन कर अनुराग ॥३६॥

आयुषान्त में मरण जु होय,
शुभ परिणाम रहे थे सोय।
व्रत का यह प्रभाव अपार,
पाई गति ही उत्तम सार ॥३७॥

चोपाई

एक दिना नन्दन घर जान,
आये मुनिवर सुखद सुजान।
नन्द स्वामि मुनिराजा नाम,
अहार करे वे सुगुण सुधाम ॥२८॥
नन्दन श्रेष्ठि भक्तिवान,
दे नवधा पूवक मुनिदान।
हृष हृष कर नमन करान,
जन्म सफल समझे गुण खान ॥२९॥
काष्टासन बैठे मुनिराज,
हार करन के पीछे आय।
मल्लिमति कन्या कर जोड,
पूछे मुनिवर से मद छोड ॥३०॥
कहो भवान्तर मम मुनिराय,
आप जगत के ही गुरुराय।
सुनकर प्रश्न मुनीश्वर भाय,
मल्लिमति सुन तव भव खास ॥३१॥
कहा मुनीश्वर ने विस्तार,
सप्त भवो का वर्णन सार।
मल्लिमति सुन निज वृत्तान्त,
हो गई दुख मे अति आक्रान्त ॥३२॥

मिलकर सब परिवार जु आय,
नेमीश्वर तीर्थंकर राय ॥४५॥
और सभी गण धर मुनिराज,
नमन करत परिजन सु समाज।
लोट द्वारिका आये राय,
रूक्मणि मन मे हर्ष बढाय ॥४६॥
रूक्मणि अरु सब यादव वंश,
पाला व्रत होकर निशंस।
व्रत के अन्त उद्यापन ठान,
कीना बिधिवत सकल सुजाण ॥४७॥
अन्त समय सन्यास लहाय,
मरण समाधि पूर्वक लाय।
लिंग तिया छेदा तत्काल,
षोडस स्वर्ग लहा वपुहाल ॥४८॥
वाविस सागर आयु प्रमाण,
देव हुए धर ऋद्धि महान।
क्रम से तपकर आतम ध्यान,
पावे रूक्मणि शिवपुर जान ॥४९॥
शेष भविकजन का समुदाय,
व्रत पूर्वक सब मरण कराय।
निज निज पुण्य समय अनुसार,
सद्गति पाई गुण आधार ॥५०॥

दोहा

कुण्डनपुर मे भीष्म नृप हुआ महा बलवान ।
उनकी तुम पुत्री भई नृप करता बहुमान ॥४०॥
रूप सपदा युक्त हो अरू योवन सपन्न ।
सज्ञा रुक्मणि की दई होवे जन परसन्न ॥४१॥

चोपाई

अब तु त्रिखण्डाधिप नृप जान,
कृष्ण नाम है महिमावान ।
प्राणवल्लभा ताकि भई,
प्यार घनो तब ऊपर सही ॥४२॥
यह अतिशय इस व्रत का जान,
पिछले भव मे कीना मान ।
याते प्राप्त सकल सौभाग्य,
हुआ तुम्हारा जाग्रत भाग्य ॥४३॥
या सुन रूक्मणि आनन्दपाय,
उठ कर दोनो हाथ जुडाय ।
विनय करे मुनिवर की जाय,
पद पकज मे नमन कराय ॥४४॥
फिर से यह व्रत ग्रहण कराय,
काल विधि मुनिवर बतलाय ।

कथा लिखी पूरव अनुसार पढे पढावे भवि मन धार।
पावे सुक्ख अचल शिव धाम 'सूरज' वह नहि कर्म निकाम ।५६।

जप

ॐ ह्री असि आउसा मम सर्व सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा—
(इस मत्र को पढ कर गन्धोदक लेवे)

ॐ ह्री श्री क्ली ऐं अर्हं अर्हंत्सिद्धा चार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यों नमः स्वाहा ।

(इस मत्र का १०८ बार सुगन्धित पुष्पो द्वारा जाप करे)

———

इस विधि श्रद्धा भक्ति लाय,
व्रत को पाले अति सुखदाय ।
सकल मनोरथ पूण करेय,
अंतिम मे शिवनार वरेय ॥५१॥

विधि

आश्विन शुल्का चउदस आय, कर उपवास धरम मन लाय ।
प्रासुक जल से कर स्नान धो सामग्री मन हर आन ॥५२॥

इर्यापथ से गमन कराय जिन मदिर मे पहु चे जाय ।
देय प्रदक्षिणा जिन तिर्येश बैठे ले पूजन निश्शेष ॥५३॥

नव देवो वि प्रतिमा सार या हो अन्य तीर्थ कर राय ।
पचामृत अभिषेक कराय इक सो तेरा कलश सुलाय ॥५४॥

जप स्वाध्याय करे हर्षाय मन से मायाचार भगाय ।
औषध शास्त्र अभय आहार पात्रो मे दा दान निहार ॥५५॥

पीछि कमण्डलु दो मुनिराय आर्यिका तो वस्त्र पिनाय ।
अष्ट वष तक कीजे सार अन्तिम मे उद्यापन धार ॥५६॥

नव देवो रा मण्डल माड पूज करे सव ही मद छाड ।
शुद्ध दम्पति को भोजन देय व्रत कर मन मे बहुहर्षेय ॥५७॥

शक्ति नही उद्यापन आप पोडस वष करे व्रत थाप ।
इस विधिसे व्रत करत जु कोय पावे शिवसुख अन्य न होय॥५८॥

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
७२	१२	सोठवा	सोढवा
७२	१३	ससत्ताधि	सहस्त्राधिक
७३	२	पाप्नु	प्राप्नु
७३	४	पादिकसस्य	पादिकस्य
७३	१४	कमेरणा	कर्मणा
७४	१५	नाय	नाम
११२	५	घावन	धाव।
११५	२१	कन्यारणक	कल्याणक
११६	१	द्रय	द्वय
१२३	३	वपु	वपु
१२३	८	मार्गभ्यो	मार्गेभ्यो
१२३	१४	"	"
१२४	२	सम्यग	सम्यग
१२६	१४	मूठता	मुढता
१२७	११	अनायतत	अनायतन
१२८	१६	भग	भय
१३०	१६	८	१
१३३	४	प्रव्य	द्रव्य
१३३	१८	जाते	जाने
१४५	२१	सहस्त्रधिक	सहस्त्राधिक
१४५	२२	प्रक्षति	प्रज्ञप्ति
१४७	१५	यहा	महा
१५०	१२	पूजू	पूज
१५१	१	पूजू	पूज
१५७	८	जलादि	जालादि
१६४	४	प्राप्रये	प्राप्तये,
१६६	७	चैत्व	चैत्य
१६८	३	अघोमध्य	अघोमध्य
१७०	३	घोय	घोय
१७०	१३	कैत्यालयेभ्य.	चैत्यालयेभ्यः
१७२	८	भुवन	भवन
१७४	४	स्वर्ण	स्वर्ग

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
२	२१	सुधिस्यस्य	सुधिय
६	२०	नाम्नि	नाम
७	१७	त्रिभुवनवपति	त्रिभुवनवपति
३१	१५	मिप्ट	मीप्ट
३२	१४	घाना	घना
३४	८	श्रो	श्री
३६	७	घृगनत	घृगतन
३७	१०	एकादर्श	एकादश
४१	४	अ नता	अनरता
४१	७	गुणोयेत	गुणोपत
४१	७	चत्वारिंशशद् गुणोपेत	चत्वारिंशद्गुणोपेत
४१	११	'	"
४३	३	नवेध	नैवेद्य
४३	२०	गुणायत	गुणोपेत
४४	१२	नदी	नही
४५	१	धाधार	धार
४६	४	जन त	अन त
४७	१	एसी	एसो
४८	१७	रहित	सहित
५२	१५	पाप	पाप
५५	२	चुतुण्टच	चतुष्टय
६२	१२	म्यो	म्यो
६३	३	घ्यो	म्यो
६३	१६	नवघ	नवद्य
६८	६	नित्याजाप	नित्यजाप
६८	१०	पाप	पाप
७०	१५	सवप्टि	सर्वोपट
७६	१७	ध्याय	ध्याय
८६	६	इहह	इह
७२	१	उपासकाध्ययना अय	उपासकाध्ययनांद